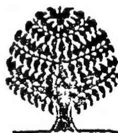
आदिवासी भील-मीणा



ADIWASI BHEEL-MINA

★ SANTOSH KUMARI JAIN



SADHANA BOOKS
JAIPUR : BOMBAY

आदिवासी क्षेत्रों की समस्या उन लोगों का यह अनुभव कराना है कि उन्हें अपने ढंग से स्वतन्त्र ज़िंदगी जीने और अपनी आकांक्षाओं-क्षमताओं के अनुरूप विकास करने का पूरा अधिकार है भारत उनके लिए संरक्षण का नहीं, मुक्ति का साधन बनना चाहिए इस तरह का कोई भी विचार कि भारत उन पर शासन कर रहा है या उन पर ऐसे रीति-रिवाज थोपे जा रहे हैं, जिनसे वे परिचित नहीं हैं, उन्हें हमसे दूर ही करेगा।

—पंडित जवाहरलाल नेहरू



आदिवासी भील-मीणा

संतोष कुमारी जैन



संपादक

सोमप्रकाश अनुरोध



साधना बुक्स

6, मिलाप एरिया, आमेर रोड,

जयपुर-302002

आदिवासी भील-मीणा

लेखिका सतोष कुमारी जैन मूल्य 35/- रुपए

प्रथम सस्करण 1981

छाया : मनोहर वैरागी, विनोद शर्मा, टी एस राव, कमल सिंह, आनन्द एव जनसम्पर्क निदेशालय, जयपुर

प्रकाशक : साधना बुक्स, 6, सिवाड एरिया, आमेर रोड, जयपुर-302002
बबई कार्यालय : अनुराग शर्मा, 31/J-1, वैगनवाडी, गोवडी, बबई-400043

मुद्रक : प्रिंट 'आ' लैंड, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001
कम्पोजिंग-इन्चार्ज : श्याम सुन्दर गहलोत मुख पृष्ठ : श्री प्रिंटर्स, जयपुर

समर्पित

विख्यात साहित्यकार
स्वर्गीय परदेशी
एवं
सुप्रसिद्ध सिने-व्यवसायी
स्वर्गीय जी पी शर्मा
को
सादर

संतोष कुमारी जैन

अपनी बात

पुष्प वट वृक्ष है, स्त्रिया अगूर-लताए है और बालक फूल हैं इन फूलो की रक्षा न की जाए तो, फूल भविष्य के फल या बीज बनने से रह जाते हैं. रक्षित पुष्प भावी के महान वृक्ष बनते हैं इसी प्रकार सुरक्षित बालक महान नागरिक बनत है नेहरूजी ने भी यही कहा था—'बच्चे स्वर्ग के फूल हैं .' मुझे यह कथन बहुत प्रिय है मुझे भी बच्चो से बहुत स्नेह है, लगाव है बच्चो के बीच घिरे रहने म मुझे अनुपम आनद का अनुभव होता है लकिन जब मुझे आदिवासी-बच्चो के निकट आने का अवसर मिला, उनकी स्थिति देखी, उनके निश्छल मन को समझा, तो बच्चो के प्रति मेरे स्नेह म असीम वृद्धि हुई मैं तो यह बात दावे के साथ कहूगी कि आदिवासी-बच्चो के साथ रहना, साथ घूमना, उन्ह प्रसन्न देखना, उनसे प्यार करना, पढने-लिखने के लिए प्रेरित करना, बद्रीनाथ की यात्रा से भी अधिक पुण्यमय, सुखद और आनन्ददायक होती है मुझे इस बात पर गर्व भी है कि मैं आदिवासी क्षेत्र प्रतापगढ में 'राजकीय आदिवासी कन्या छात्रावास' म कार्य कर रही हू !

•

यह हमारी विशाल, अनन्त धरतीमाता! इसके सागर, पर्वत, नदिया और झरने कितने मोहक और रगीन ! दूर-दूर तक धरती ! दूर-दूर तक सागर ! दूर-दूर तक आकाश ! दूर-दूर तक पवन, प्रकाश और अग्नि ! और इन्ही से बना हमारा यह शरीर पच्चीस, पचास या सौ, डेढ-सौ वर्ष का जीवन बिताकर, यह शरीर पुन इन्ही—पृथ्वी, पवन, आकाश और अग्नि आदि तत्वो म विलीन हो जाता है. भारतीय सन्त-महन्तो ने, इसीलिए इस देह को नश्वर कहा एक बडे आदमी ने कहा—जो कुछ देख रहे हो, नष्ट हो जाएगा !

दूसरा बोला—सब कुछ क्षण-भगुर है !

तो, तीसरे ने कहा—यह जगत, यह समस्त लोक-चराचर मिथ्या है माया है नाशवान है

सच, परन्तु जन्म लिया है हमने तो, अपना कर्त्तव्य तन-मन से पालन करना चाहिए इसमे जितने प्राणी रहते हैं, उन्हे विधाता ने एक-एक अभिनय, पूरा करने के लिए दिया है फिर भी मनुष्य पुतला नहीं है वह अपने ज्ञान विज्ञान और विकास से इस अभिनय को नया रूप और नई दिशा देकर अधिक तटस्थतापूर्वक कर्त्तव्य-पालन कर सकता है।

सचमुच, कर्त्तव्य-पालन आनन्द का स्रोत है जो लोग आदिवासी क्षेत्रो म रहते हैं, जो साधन-सम्पन्न हैं, उन्हे चाहिए कि आदिवासियो को अपने समान समझें और उनकी सेवा मे लग जाए यही धर्म है। महात्मा गांधी ने एक स्थल पर कहा है सेवा-धर्म का पालन किए बिना मैं अहिंसा-धर्म का पालन नही कर सकता और अहिंसा-धर्म का पालन किए बिना मैं सत्य की खोज नहीं कर सकता और सत्य के बिना धर्म की साधना नही हो सकती सत्य ही राम है, नारायण है, ईश्वर है, खुदा है, अल्लाह है, गॉड है। .

एक सूफी साधक ने तो यहा तक कहा है कि मनुष्य किसी प्राणी की सेवा करके, उसको अपना बना ले, यही सबसे बडा हज है, सेवा से दिल को जीत ले, क्योकि एक दिल, हजारो काबो से बढ़कर है। इसी परम्परा मे, हॉवेल्स तो एक कदम और आगे बढ गया है, जबकि वह कहता है—उत्तम बुद्धि रहने की अपेक्षा, प्यासे आदमी को ठडे पानी का गिलास देना कही श्रेष्ठतर है।

•

राजस्थान मे उदयपुर, डूगरपुर, बासवाडा, और चित्तौड जिले के सैकडो गाव आदिवासी भील-मीणो से भरे पडे हैं पिछले दस वर्षों मे अनेक बार मुझे इन क्षेत्रो मे घूमने और आदिवासियो के जीवन को नजदीक से देखने का अवसर मिला है विशेषकर काठल-मालवा के कई विश्व-प्रसिद्ध आदिवासी क्षेत्र सुहागपुरा, देवगढ, मनोहरगढ, पाडलिया, अरनोद (जहा आदिवासियो का तीर्थ-स्थल 'गौतमनाथ' स्थित है) बमोतर, अम्बामाता, बगवास आदि म मैं गई हू यहा के भील-मीणों का रहन-सहन देखा है, उनकी गरीबी देखी है उनका मुक्त स्वच्छद जीवन देखा है उनकी मुक्त हसी देखी है और भूख से बिलखते मादरजाद बालक को भी देखा है। मुझे वह घटना आज भी याद है—

बाल्मीकि के आश्रम सीतामाता गई, तो वहा मैंने एक अर्द्धनग्न सी आदिवासी बाला को महुडे बिनकर खाते हुए देखा था उसके हाथ-पैर काप रहे थे—कुछ भूख से और कुछ इस भय से कि वन के तथाकथित 'ठेकेदार' आकर उस वन-सम्पदा 'चोरी' करने के जुर्म मे 'सजा' न दे दें उस बाला को देखकर मेरा मन काप उठा। आखें भर आई और अपने आपको कोसने लगी। इसलिए कि हमारी और इनकी स्थिति मे कितना अतर है।

मैंने उस आदिवासी बाला की भूख को देखकर, उसके सम्मुख कुछ खाने की सामग्री और पैसे देने के लिए हाथ बढाया, तो वह इस तरह देखने लगी, जैसे मैंने कोई बडी

भारी भूल कर दी हो पूछने पर वह बोली—'मु मगती नी हू मी वगर पैसा कई चीज नी ला ! .. '(मै भिखारिन नही हू. हम मुफ्त मे कोई चीज नही लेते.) यह सुनकर मैं और विस्मय मे पड गई ! आश्चर्य से मेरी आखें फैल गई पेट मे इतनी भूख और ऊपर से इतना स्वाभिमान !

सचमुच, ससार की हर जाति के लोगो को हमने भीख स्वीकारते हुए देखा है, लेकिन एक भील-मीणा जाति ही ऐसी है कि यह भीख कभी नही मागेगी, चाहे कितनी ही मुसीबत या गरीबी ही क्यो न हो ! हा चोरी अवश्य करेगा, या डाका डालेगा पर भीख नही मागेगा

आज से 30-40 वर्ष पूर्व आजीविका के अभाव मे इनके घने जगला वाले क्षेत्रो मे यात्रियो को दिन-दहाडे लूटकर दिगवर बना दिया जाता था. और मजे की बात तो यह है कि ये लोग केवल माल-मत्ता छीनकर ही नही छोड देते, अच्छी तरह पूजा भी करते थे और यात्री की प्रार्थना पर कि 'मारिए मत माल ले लीजिए' ये आदिवासी कसकर पिटाई करते थे और कहते थे, 'मुफ्त का माल हम नही लेते तुम्हारी पिटाई मे जो मेहनत पड रही है, उसी के मुआवजे मे यह मालमत्ता ले रहे है'

■

भील-मीणा एक बहादुर और देशभक्त जाति है मेवाड के इतिहास की रचना मे तो इनका अपूर्व योग रहा है. बाप्पा रावल, हम्मीर, कुम्भा और सागा की विजयावलिया इसी जाति के सहयोग की आश्रिता रही है सागा और प्रताप का वनवासी जीवन मीणो के सस्कार और सत्कार का प्रतीक है मुगल सना के टिड्डी दलो के विरुद्ध प्रताप के मुट्ठी भर साथियो की गुरिल्ला रणनीति इसी आदिमजाति के सहयोग से सफल हुई आज भी मेवाड के राज चिन्ह पर एक ओर आदिवासी मीणा और दूसरी ओर प्रवासी राजपूत के आकार अकित हैं ! लेकिन आदिवासियो को इस देशभक्ति के बदले मे क्या मिला ? सिर्फ भुखमरी, गरीबी, शोषण, अन्धकार और सूदखोरो का भारी कर्ज !

०

कई सरकारी और गैर सरकारी सस्थाए अथवा सगठन आदिवासियो के विकास के लिए *निरन्तर प्रयत्नशील है, और देश के सभी आदिवासी क्षेत्रो म (राजस्थान,* मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र के कई आदिवासी-अचल) विकास के लिए करोडो रुपए खर्च किए जा रहे हैं लेकिन फिर भी आदिवासियो की स्थिति यथावत है

विकास-योजनाओ का आदिवासियो पर वास्तविक असर तब तक नही पड सकता, जब तक उन्हे चलाने वाल सरकारी अधिकारी, कर्मचारी या समाजसेवी उन आदिवासी समुदाय म घुलमिल न जाए देश के कई स्थानो म आदिवासियो के मन मे अपने अधिकारियो के प्रति नफरत की भावना ने जन्म लिया है इस नफरत के कारणो से सभी परिचित हैं—योजनाओ मे कार्यरत कुछ भ्रष्टाचारियों ने आदि-

वासियो का भरपूर शोषण किया है ऐसे लोग सरकार और उसके नेता-मन्त्रियो को बदनाम करने मे कोई कसर बाकी नही रखते।

वधक-मजदूर जैसी आदिवासियो की स्थिति 'राहत कार्य मे देखी जा सकती है मालवा मवाड म आदिवासी-महिलाओ की इज्जत म खेलना तो आम बात हो गई है काम के बहाने दूसरे राज्यो मे ले जाकर इन्हे बचा गया है कहने का तात्पर्य है आदिवासी लडकियो की तस्करी करना असामाजिक तत्वो का धधा बन गया है हालाकि ससद ने इस सम्बन्ध मे अन्तर्राज्यीय कानून बना दिया है, लकिन इसमे स्थिति मे कोई अन्तर नही आया है छोटा नागपुर सथाल परगना से हजारो आदि वासी, जो विविध राज्यो म काम करने गए थे, उनमे से अधिकाश आदिवासी महिलाए वापस नही आई हैं।

यदि सरकार निष्पक्ष जाच कराए तो न सिर्फ आदिवासी महिलाए अपने घर लौटकर सुख चैन की सास लेंगी बल्कि तथाकथित 'बडे लोगो' के नाम काले अक्षरो' म उजागर होगे

०

राजस्थान के आदिवासी भील मीणो के जीवन का जो कुछ मैंने अध्ययन किया है उनकी सामाजिक-सास्कृतिक गतिविधियो को मैंने देखा है, यह सब कुछ 'आदिवासी भील-मीणा' पुस्तक मे प्रस्तुत है विश्वास है, पाठको को यह पुस्तक पसद आएगी पाठक यदि इस पुस्तक के बारे म अपने सुझावो से अवगत कराएगे तो मुझे मार्गदर्शन मिलेगा

०

अत म मैं उन व्यक्तियो का आभार प्रदर्शन करना चाहूगी, जिन्होने परोक्ष या अप-रोक्ष रूप मे मुझे आदिवासी भील-मीणा के जीवन पर लिखने के लिए प्रोत्साहित किया—इदुबाला सुखाडिया, रामरिख मनहर, प्रहलाद राय उपाध्याय, चिरजीव जोशी 'सरोज', रामकिशन पलोड

•

साथ ही मैं तारा परदेशी की भी आभारी हू, जिन्होने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक (स्व) परदेशी की कहानी 'खातू रावत' को इस पुस्तक मे शामिल करने की अनुमति दी है आदिवासी डाकू 'खातू रावत' की यह कहानी मुझे बहुत पसद है इस कहानी के जरिए पाठको को आदिवासियो के जीवन को समझने मे सुविधा रहेगी इस कहानी पर 'राजस्थानी चित्रालय' द्वारा हिंदी और राजस्थानी भाषा मे एक फिल्म भी बन रही है

शुभकामनाओ सहित

सन्तोष कुमारी जैन

अधीक्षिका
राजकीय आदिवासी कन्या छात्रावास
प्रतापगढ (राजस्थान)

जन यात्रा

हमारे देश मे जन संस्कृति के प्रति लोगो मे बहुत अधिक जानकारी का अभाव है एक ही समाज मे अलग-अलग पहचान के साथ लोग जीते हैं यहा तक कि शहर-वासियो के लिए आदिवासी—शोध एव अनुसधान के विषय बन गए हैं

मनुष्य-मनुष्य के बीच समानता के रिश्ते जोडने का सु दर प्रयास, इस पुस्तक मे किया गया है और राजस्थान के आदिवासी भील-मीणा के माध्यम से शताब्दियो के प्राकृतिक इतिहास को समसामयिक नजर से देखने का साहस, सरलता से जुटाया गया है।

राजस्थान ही नही, देश के सभी भागो मे—लाखो की सख्या मे जनजातियो का निवास है तथा इनमे से अधिकाश अशिक्षा और गरीबी के कारण लोकतन्त्र की रथयात्रा मे सक्रिय रूप से प्रभावशाली भागीदारी नही करते यहा तक कि भील-मीणा की कोख से जन्म व्यक्ति भी अपनी मूल सस्कृति और समाज को पिछडेपन के दायरे म देखने लगे है सास्कृतिक सक्रमण के इस दौर मे प्रस्तुत पुस्तक हमे एक ऐसी गहरी सूझबूझ देती है, जिसके साथ हमे विगत को समझने की ताकत मिलती है

आदिवासी भील-मीणा समुदाय के लिए आज कई लोग चिन्तित है सभी उन्हें पिछड़ेपन से ऊपर उठाकर, अपनी झोली मे डालना चाहते है लेकिन बहुत कम लोग हैं, जो आदिम जीवन के इन दस्तावेजो को सामाजिक तथा आर्थिक न्याय देना चाहते हैं कुछ यह जातिया अपने बन्धनो से परेशान है तो, कही पर सामाजिक विश्वास का सकट भी बना हुआ है

ऐसी मनोदशा मे आदिवासी भील-मीणो के रहन-सहन, धर्म, व्रत, त्योहार, बोली और साहित्य का मूल्याकन देना, एक महत्वपूर्ण कार्य है।

इस विश्लेषण से पता चलता है कि भील-मीणा सस्कृति मूलत जीवन-कल्याण की सस्कृति है इनमे जहा अन्धविश्वास, रूढिया, धर्मान्धता और विचित्रताए है, वहा ईमानदारी, आतिथ्य, वचन पालन और रिश्तो की शुद्धता के लिए गम्भीर सकल्प है

भील-मीणा सभ्यता के चरित्रनायक मर्यादा और नैतिकता की जमीन पर खड़े रहते हैं तथा इन सबका मूल जीवन, सभी क्षेत्रो मे—सादगी और निश्छलता से प्रेरित रहता है

प्रस्तुत विवेचना मे सभी बातो को सीधे-सीधे शब्दो मे कहा गया है, छिपाने और तोड़ने की मनोवृत्ति कथावस्तु मे कही भी नही है अपने आपसे साक्षात्कार कम शब्दो मे आकर्षक शैली से लेखिका ने किया है यही कारण है कि जो तथ्य हम शास्त्रीय शोध से नहीं खोज पाते, उन्हे हम बेलाग तरीके से इस पुस्तक मे पढ सकते हैं

सरकार और समाज आदिवासी बिरादरी के लिए क्या कर रही है, इसकी झाकी भी पुस्तक मे तर्क-सगत ढग से मिलती है ऐसा विश्वास बनता है कि सरकार योजना के स्तर पर ही नही, अपितु जीवन जागरण के रूप मे भी आदिवासी भील-मीणो से जुडी हुई है

यह नव प्रकाशन व्यापक सामाजिक परिवर्तन का गतिशील आधार बनेगा, मेरा ऐसा अभिमत है

● वेद व्यास

महामन्त्री
राजस्थान प्रगतिशील लेखक सघ
जयपुर

परिचय

हिंदी मे भील-मीणा साहित्य का सर्वथा अभाव है जगलो मे भटकने वाली इस बहादुर जाति पर बहुत कम लिखा गया है और जो कुछ भी लिखा गया है, वह पर्याप्त नही है

भीलो पर अब तक जितना भी साहित्य प्रकाशित हुआ है, उसमे सबसे उल्लेखनीय 'मीणा इतिहास' है लेखक रावत सारस्वत ने काफी खोज-बीन, अध्ययन और शोध के बाद भील-मीणो का विस्तृत इतिहास देने मे सफलता प्राप्त की है भीलो के लोकगीतो का सकलन करने म फूलजी भाई भील और गिरधारीलाल शर्मा ने काफी परिश्रम किया है

प्रस्तुत पुस्तक 'आदिवासी भील-मीणा' म लेखिका सतोषकुमारी जैन ने भील-मीणो के बारे मे काफी जानकारी दी है यह पुस्तक निश्चित रूप से पाठको के लिए उपयोगी साबित होगी खासकर, उन समाजसेवियो के लिए, जो आदिवासियो के विकास के लिए तन-मन-धन से समर्पित हैं भील-मीणों के बारे मे मनोरजक, रोमाचकारी, आशा-निराशा और प्रेरणा से परिपूर्ण सामग्री आपके हाथो मे है एक बार पढना प्रारम्भ करके, अधूरा छोड न सकेंगे, और अकेले आप ही नही,

आपका पूरा परिवार और परिचित आदिवासी भील-मीणा के बारे में विस्तृत वर्णन पढ़-सुनकर दंग रह जाएंगे लेखिका ने यह ध्यान रखा है कि भील-मीणों के जीवन की बातें दुःख की हैं या सुख की, निराशाजनक हैं या आशाजनक, जीवन के निरन्तर निर्माण और चरित्र-सर्जन की प्रबल प्रेरणा दे जाए।

०

प्रस्तुत पुस्तक साधना बुक्स का प्रथम परिचय है और भी कई पुस्तकें यथाशीघ्र प्रकाशित की जा रही हैं—उपन्यास, नाटक, कविता और कथा-साहित्य विशेष रूप से हम बाल साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं, जिसके अन्तर्गत अनेक सुन्दर और मनोरंजक कहानियों का संगम-संकलन है, जिनमें जीवन के नैतिक मूल्यों से संपूर्ण भव्य भावनाओं के द्वारा, मानवमात्र के मंगल और सार्वकालिक विकास की रूप-रेखाएं, आलोक-किरणें बन प्रकाशित होगी

०

पत्रकारिता और लेखन से प्रकाशन-व्यवसाय तक की यात्रा में, मुझे जिन साथियों और महानुभावों का स्नेह, सहयोग एवं मार्गदर्शन मिला है, उनका उल्लेख करना आवश्यक है—नंदकिशोर नौटियाल, विश्वनाथ वामन काले, प्रियदर्शिनी, परेशनाथ, विष्णु शर्मा अरुणेश, जानकीलाल व्यास, दिनेश चंद्र शर्मा, यशपाल शर्मा, जिनेन्द्र कुमार, प्रिंस इकबाल, नलिनी गुप्ता, फारूक आफरीदी, महावीर भगोरा, नन्दलाल मीणा, युवराज शर्मा, इकराम राजस्थानी, प्रमिला राव, श्रीगोपाल पुरोहित, डॉ इंदुशेखर, गुलाब कोठारी, गुलाबदास श्रोफर, दादा नत्थूराम, सुभाष मेहता भूपेन्द्र गांधी, रंगीला एम. ए., अरुण किम्मतकर, कृष्णकुमार सौरभ भारती आदि साथ ही मैं सत्यनारायण अग्रवाल (प्रिंट 'ओ' लैंड) और श्रीकान्त डडिया (श्री प्रिंटर्स) का भी आभारी हूं, जिन्होंने बहुत ही कम समय में, यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपने में सहयोग दिया

● अनुपम परदेशी

साधना बुक्स,

जयपुर

आदिवासी भील-मीणा

(चित्र पृष्ठ 117 से 124)



भील-मीणा : उत्पत्ति

राजस्थान म आदिवासियो की आबादी वाले प्रात है—मेवाड, वागड, काठल, हाडौती, कुशलगढ, झाबुआ और गुजरात के तटवर्ती दोहद, पचमहाल जिल के क्षेत्र, जहा मीणो की आबादी अधिक है और भीलो की कम किन्तु प्राचीन शास्त्रो और इतिहास ग्रथो म इनके लिए केवल 'भिल्ल' शब्द का प्रयोग हुआ है, जो पहले पहल छठी शताब्दी म मिलता है यह सयोग है कि तमिल भाषा म भी 'भिल्ल' शब्द होने से कुछ विद्वानो ने भ्रमवशात् भीलो को द्रविडो की सतान बता दिया वास्तव म भील और मीणा आर्य हैं भागवत पुराण म इन्हें वेण राजा की सतान बताया जाता है महाभारत आदि पव म भील या निषाद एकलव्य और द्रोणाचार्य की कथा प्रचलित है कर्नल टाड ने इन्ह वनपुत्र' कहा है हिन्दुओ म इन्ह उच्च वर्ण का माना गया है

राजस्थान म जनजाति के रूप म भील मीणो की सख्या लगभग 25 लाख मानी गई है सन् 1901 म आदिवासियो की प्रथम जनगणना क समय

'राजपूताना' मे इनकी सख्या सिर्फ 3 लाख थी   इनकी सबसे घनी आबादी वागड (वासवाडा और डूगरपुर) मे है !

इन आदिवासी जनजातियो मे कई गोत्र, जातिया कई वर्ग भी है   अकेले काठल मे इनकी डेढ लाख की आबादी लगभग 37 विभिन्न वशो और वर्णों मे वटी हुई है इनकी नामकरण-पद्धति, परम्पराएँ और प्रथाएँ वडी विचित्र है भीलों मे जैसे 'उजले भील' कोई भी सफेद वस्तु नही खाते   ये शुद्ध गौर वर्ण के होते हैं और अपने आपको शुद्ध भिल्ल मानते हैं   आधुनिक मीणा और भील अपने नामो के अन्त मे क्षत्रिय के चौहान, राठौर, गहलौत, परमार, भाटी, सोलकी मकवाणा आदि गोत्रो का प्रयोग करते है   इन लोगो मे ऊँच-नीच का वडा भेदभाव है मीणो मे रावत, ननामा, वूज, राणा आदि ऊँचे माने जाते है   अन्य श्रेष्ठ गोत्रो मे मइडा, देवडा, कटारा, डामर, चरपोटा, चदाणा, दायमा, वरगट, वरर आदि हैं [1]



आदिम जीवन : एक कहानी

भीलों के 'पाल' मे कुनबे या गिरोह, परिवार या उपजाति के मुखिया को 'गमेती' कहते है . यह बडा सम्मानजनक सम्बोधन है 'मामा' कहकर पुकारने पर भील बडे खुश होते है और मामाओं से 'राम-राम' करता हुआ मुसाफिर, गहनवनो और बियाबानो मे इनकी भयकर जातियो के बीच से निरापद निकल सकता है कितने भोले हैं ये लोग एक छोटे-से सबोधन से ठगे जा सकते हैं, तब भला विगत तीन सौ वर्षों मे इन्हे कितना ठगा गया होगा ?

आज से 30–40 वर्ष पहले आजीविका के अभाव मे, इनके क्षेत्रों मे कोई भी मानी (मालदार) बचकर नहीं निकल सकता था

रियासतो द्वारा इन्हें 'जरायम पेशा' मान लेने का कारण सामन्तवाद और महाजनी सूदखोरी रहा है वजह इनकी आर्थिक और सामाजिक पद्धति का उच्च स्तर गिरता गया और नभ से नभ होना रहा गाधी की मुक्ति-मशाल के प्रकाश पुज के पूर्व वर्षों, इन्हे दासो का जीवन व्यतीत करना पडा सामन्त प्रथा और सूदखोरी ने इन्हे

शताब्दियों तक चूसा दोनों ही वर्गों के अत्याचारों ने इन्हें बागी बना दिया. और ये लूटमार और डाकाजनी करने लगे लगभग 80 वर्ष पूर्व मेजर अरस्कीन, आई० एस० 'प्रतापगढ राज्य के इतिहास' मे लिखते हैं—'परतन्त्रता और परिश्रम ये दो चीजें भीलों की प्रकृति के प्रतिकूल है लूटमार के द्वारा वे अपना जीवन-निर्वाह करते हैं उनका शरण स्थल है काठल, दक्षिण राजपूताना।'

दरअसल, इस लूट में बड़े-बड़े कुलीनों और स्थानीय सामन्तो, ठाकुरों और जागीरदारों का बड़ा हाथ रहा है वे इन्हे अपने राज्य, गाव या जागीर मे शरण देते थे और लूट या डकैती के माल मे हिस्सा बटाते थे गुजरात, खानदेश, मालवा, निमाड, ग्वालियर, मध्यभारत आदि भागों में भयकर डाके डालकर रातोरात ये सैकड़ो मील दौडते चले आते थे, अगम पहाडी क्षेत्रो और दुर्गम वनो मे इनकी दौड दर्शनीय है, तीर की गति की उपमा फीकी पड जाती है

आदिवासी नेता : भाभर देव

देवलिया के प्राचीन आदिवासी-नेता भाभरदेव का जिक्र कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुन्शी ने किया है 'भाभरिया भूत' या भाभरदेव ने मालवा से धावा मार कर लाट-गुजरात मे सूरतनगर को तहस-नहस कर दिया था यह वीर-सूरमा अपनी जाति के जनकठ मे अमर है कद उसका आठ फीट लम्बा, भयानक काला रग, बडी लाल आखे, प्रचण्ड भुजदण्ड और सारे शरीर पर लम्बे-लम्बे बाल—विशालकाय व्यक्तित्व था उसकी समाधि देवलिया मे विद्यमान है उसका बनवाया 'गगनाथ महादेव' का मदिर, इस प्राचीन नगर के खडहरो मे सुरक्षित अनेक मन्दिरो में मध्य आज भी सुशोभित है।

हीमवती, रजतवर्णा 'शबे मालवा' जब मालवा के अस्तहीन मैदानों में अपना आचल पसारकर अभग नृत्य करती है, तब मीणा-सुन्दरियों के मधुरकण्ठों से भाभरदेव के अमर आख्यान का गौरवगीत समवेत स्वर मे दूर-दूर तक गूंज उठता है।

अनेक सरिताओ और सरोवरों से सुसज्जित, गिरिराज अर्वली पृष्ठभूमि से अनुरजित, ससार के सु दरतम वनो से शृ गारित 'काठल' के अचल मे, एक सहस्र वर्ष पूर्व जब मेवाड के सीसोदियों ने घोडा और तलवार लेकर प्रवेश किया, तब यहा आर्यो की सतति—सु दर चेहरे और लबे कद वाले आदिवासियो के गणराज्य अपने गौरव के सर्वोच्च सोपान पर थे

सीसोदियो ने छल, बल और कौशल से इन आदिवासी भील और मीणो को मालवा के मैदानों में हराकर अरावली की पहाडियो मे शरण लेने को बाध्य कर दिया

सूदखोरों का आक्रमण

सामतों के बाद—कालातर मे इन पर दूसरा आक्रमण सूदखोर महाजनो का हुआ और इस प्रकार सोने के झूलो मे झूलने वाली, बडी काली आखा वाली आदिवासी

रानियां मजबूर हो गईं—सामन्त, श्रीमंतों और महंतों के महल-मठों, हरम-हवेलियों खेत और खलिहानों में आधे पेट रोटी पर अविश्रांत श्रम करने के लिए।

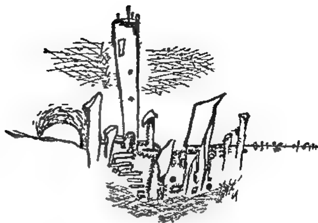
युग और सदियां—शताब्दियां करवटें बदलती गईं तीस वर्ष पहले आजादी का जो प्रचंड शंखनाद गूंजा, उससे भील और मीणों में भी जागरण का नवजीवन संचार हुआ और अनेक संघर्षों के फलस्वरूप वह जमीन जो महाप्रतापी सीसोदियों ने भील-पूर्वजों से अपने बाहुबल से छीन ली थी, अहिंसक-क्रांति के पुण्य-प्रसाद-स्वरूप आज पुनः उन्हीं आदिवासियों के अधिकार और प्रशासन के अन्तर्गत आ गई कि बड़े से बड़े महाराजा, जिनके घोड़ों की धमक और रणगंजन नगाड़ों की गड़गड़ाहट मात्र से काबुल और कंधार की बस्तियां खाली और वीरान हो जाती थीं, उनके वंशज दानपुर या देवलिया में एक इंच जमीन भी आदिवासी मीणा विधायक या सांसद की स्वीकृति के बिना, नहीं ले सकते। यह चमत्कार क्या कम है!

यही, वह गौरवपूर्ण घटना है, जिसने मरदाने मीणों और भूखे भीलों में चेतना की नई बिजलियां भर दी हैं कि वे राष्ट्रीय नवजागरण की महाधारा में अपने प्रवाह का विलय करने को व्याकुल हो उठे हैं

पथरीली-बंजर भूमि के मालिक

लेकिन, आज इस जाति के पास जमीन है, सबसे बेकार, पथरीली और बंजर है वर्ष में छह मास भुखमरी इनके हजारों 'टापरों' (घरों) में डेरा डालती है तब अपने रूप के गुमान से गर्वीली, देवलिया या श्यामपुर की रमणियां को अनेक मजबूरियों में जीना पड़ता है जर्जर वृद्धाएं एक बार की एक रोटी के लिए, चिलचिलाती धूप में पशु चराती भटकती हैं, उस प्रांतर में जहां ग्रीष्म में घास का एक तिनका और पानी की एक बूंद भी नहीं मिल पाती है

गत एक हजार साल में, आदिवासियों के वैभव और विक्रम, राग और रंगों को, रूप और रास को जाने किसकी नजर लग गई है, फिर भी यह महान जाति बड़ी प्रसन्न, उदार और अलमस्त सहृदय रही है उनके कंठ में गीत का अमृत और पैरों में नृत्य का सम्मोहन रचा हुआ है।



भील मीणा : संक्षिप्त इतिहास

मालवा के विश्व प्रसिद्ध पठार का वह अत्यन्त उर्वर भू-भाग जो चम्बल, शिवना, चर्मण्वती, जाखम, रेतम, गम्भीरी और माही नदियों से घिरा हुआ है 'काठल' कहलाता है, जिसका अर्थ है कठ-प्रदेश—किनारे की धरती, जैसे गुजरात में माही काठा, साबर काठा आदि. इस अति उपजाऊ भूमि में अफीम, गेहूँ, चावल, चना, कपास, जुआर, मक्का, दालें और आम जैसी फसल होती है, जो सभाले नही सभलती ।
पग-पग पर नीर-क्षीर, पनघट-तालाब, विशाल बावड़ियाँ, मेहदी और केवड़ा, गुलाब और नागचपा की वनराजी मन को मोह लेती है ।

यहा गुजराती प्रधान मालवी भाषा बोली जाती है, कभी यह मीणो का अपना क्षेत्र था, किंतु अब उनकी आबादी आधे से भी कम हो गई है यहा की नब्बे प्रतिशत जातिया गुजरात से आई है. खान-पान, बोल-चाल, रहन-सहन, उच्चारण की कोमलता, लोक-संस्कृति गुजरात से मिलती है

मौर्य गुप्तकाल से लेकर औरंगजेब तक काठल एक अलग मण्डल, सूबा या जिला रहा है इसका प्रशासन-केन्द्र कालिदास का नगर दशपुर (वर्तमान मदसौर, म०प्र०) रहा है ('दशपुर वधू नेत्र कौतूहलम्' कालिदास) कालान्तर मे मेवाड के शासक

भाइयो मे मन मुटाव होने पर राणा कुम्भा (कुम्भकर्ण) का छोटा भाई क्षेमकर्ण (खेमा) गृह युद्ध को टालने के लिए मालवा की ओर निकल गया और उसने अपनी तलवार के बल पर एक नए राज्य की नीव डाली आगे चलकर यही 'काठल राज्य' (देवलिया-प्रतापगढ, मालवा) बना

इतिहास के आरम्भ से ही इस प्रदेश मे आदिवासी भील और मीणो की आबादिया रही हैं—उनके अपने 'गणराज्य' रहे हैं, जिनकी परम्पराए आदिवासी पचायतो म आज भी मिलती है

देवली मीणी

राजकुमार क्षेमकर्ण के पुत्र (महाराणा रायमल्ल का चचेरा भाई, राणा सागा का चाचा) सूर्यमल्ल के प्रपौत्र बीका ने 1531 म, इस प्रदेश के भील राजा भाभरदेव को मार दिया और भाभरदेव की रानी देवली के नाम पर देवलिया' नामक विशाल नगर बसाया, जो कालातर मे मालवा के सूबे का एक प्रमुख अग बन गया और मालवीय सभ्यता और सस्कृति, साहित्य और ललित 'कलाओ का केन्द्र' कहलाया

काठल के राज-परिवार मे देवली मीणी की चोटी आज भी बडे जतन और सम्मान से रखी है और प्रति वर्ष विजयादशमी पर यहा के 'हफ्त हजारी मनसब प्राप्त, अपना सिक्का चलाने वाले, भाड़ो के राजा, महाराजाधिराज महारावत' इस चोटी की पूजा करते हैं

बीका ने भाभरदेव को जिस तलवार से मारा था, वह तलवार देवलिया मे राजमहल के पिछवाडे, सीसोदिया कुलदेवी 'बाणमाता' के मन्दिर की छत मे अभी भी लगी हुई है...

इस प्रकार मैसरोडगढ, नीमच, बडी सादडी, छोटी सादडी, धरियावद के अलावा, इस क्षेत्र के एक हजार गावो पर सीसोदिया सामतो ने अपना अधिकार जमाया. राजपूतो ने मीणो स उपजाऊ भूमि छीनकर, उन्हे घनघोर घाटियो और निर्जन वनो मे जाने को बाध्य कर दिया तब से मीणो और भीलो की आर्थिक दशा गिरती और गिरती ही चली गई है !...

किन्तु, एक विचित्र बात देखी गई कि राजपूतो और मीणो का पारस्परिक प्रेम कभी कम न हुआ और भील-स्त्री और राजपूत-पुरुष से उत्पन्न एक नई उपजाति बनी, जो 'भिलाला' कहलाई (जनरल सर जॉन माल्कम—'मेमायर आफ सेन्ट्रल इ डिया इन्क्लियुडिंग मालवा) काठल राज्य की स्थापना की कहानी जैसी ही राजपूत-कथाए आस-पास के अन्य राजपूत राज्यो की है

खैराड़ के भील-मीणा

जहाजपुर (जिला-भीलवाडा) का क्षेत्र भील-मीणो के साहस के लिए प्रसिद्ध रहा है यहा मीणों क। दमन करने के लिए मीणो की ही एक मजबूत सेना तैयार की गई

थी खैराड के मीणों के असीम शौर्य और पराक्रम की कहानियां आज भी लोग याद करते हैं. बनास के दोनों ओर के प्रांतर को ही 'खैराड' नाम से जाना जाता है. खैराड के मीणों के बारे में कर्नल टॉड ने लिखा है—

'यह वह क्षेत्र है, जहां कुछ समय पहले कोई भी यात्री बचकर नहीं निकल सकता था लूटमार इनका व्यवसाय था मेरी यात्रा मीणों के इस क्षेत्र में से थी आज मैं सैंकड़ों धनुर्धारियों को एक ही संकेत पर इकट्ठा कर सकता ।.... मीणों में अब समझ आती जा रही है उनमें यह विश्वास प्रबल होता जा रहा है कि अब उनके अधिकारों का सम्मान होगा और वे समाज से अलग नहीं हैं समाज में उनका भी स्थान है.... अपने से बड़ों को वे 'अतुलराज' कहकर सम्बोधित करते हैं 'राणा' के नाम पर हमने मीणा-नायकों को इकट्ठा किया और उनमें लाल साफे और रूमाल वितरित किए, मेरे बीच-बचाव के कारण ही राणा को जहाजगढ़ का इलाका मिला था मीणा प्रकृति-पुत्र हैं वन के सच्चे स्वामी हैं सम्मान देने वालों के साथ सम्मान करना इनका गुण है ऐसी पवित्र भावना दुनिया की किसी भी जाति में मैंने नहीं देखी (ऐनाल्स एण्ड एटीक्विटीज ऑफ राजस्थान)

'कोट्या' भील के नाम पर 'कोटा' नगर

हाड़ौती, यहां हाड़ा चौहान राज करते थे इसीलिए कोटा, बून्दी और झालावाड़ जिले के इस क्षेत्र को 'हाड़ौती' नाम दिया गया है. यहां भील-मीणों के राज्य सर्वोच्च सोपान पर थे. किंतु बून्दी के मूल राज्य पर हाड़ों ने अधिकार कर लिया था बून्दी में हाड़ा देवा ने मीणों का यह राज्य छीनकर चौहानों के राज्य की नींव डाली कहा जाता है कि 'आसलपुर' का ध्वस्त नगर और 'अकेलगढ़' का पुराना किला भीलों का ही था बून्दी के चौहान राजाओं ने इस क्षेत्र के भील-मीणों के राज्य को समाप्त कर दिया हाड़ौती में राजपूतों ने 'कोट्या' नामक भील को मारकर, कोटा नगर बसाया

भील-राजा चक्रसेन

झालावाड़ जिले के मनोहर थाना प्रान्त में भीलों का राज चलता था यहां पर भील-राजा चक्रसेन राज करता था उसके पास 500 घुड़सवार और 800 धनुर्धारी थे महाराव भीमसिंह ने चक्रसेन को पराजित किया, तो उसने मालवा की शरण ली, जहां उसके वंशज मानधाता ओंकारनाथ का राज्य था

मीणा-सुन्दरी : अबला

किशनगंज के क्षेत्र में बना भवरगढ़ का किला मीणा का था डॉ० मथुरालाल शर्मा की पुस्तक 'कोटा राज्य का इतिहास' के अनुसार

खैराबाद की विवाहिता मीणा-सुन्दरी ग्रबला को कोटा राज के राव मुकुन्दसिंह ने वन मे शिकार करते समय देखा, तो वह उस पर मुग्ध हो गया ग्रौर उसे उठाकर ग्रंतःपुर मे ले ग्राया कहा जाता है कि एक रात ग्रबला का पति नंगी तलवार लेकर मुकुन्दसिंह के पास पहुच गया ग्रौर उसे जान से मारने का प्रयास किया लेकिन राव मुकुन्दसिंह ने उसे जागीर देकर, ग्रपनी जान बचा ली सिर्फ जागीर ही नही,



उसे दर्रे मे से ऊँट, हाथी, घोडे, बैलगाडी ग्रादि से महसूल लेने का ग्रधिकार भी दिया.

ग्रबला मीणी ने यह शर्त रखी कि दर्रे पर उसका महल बने ग्रौर वहा चिराग की ज्योति हमेशा प्रज्जवलित रहे यह शर्त मान ली गई काफी समय तक वहा दीपक जलाया जाता रहा ग्रबला ने ग्रपने नाम से कोटा मे एक बावडी भी बनवाई.

'जला' नामक मीणा के बसाये हुए जालोर मे भी मीणो का प्रभुत्व रहा है ग्राबू ग्रौर ग्रडावला की पहाडियो म रहने वाले मीणा के ग्राक्रमण यहा होते रहे है जालोर क्षेत्र के 'भाद्राजूण' कस्बे के 500 घरो की ग्राबादी मे से तीन-चौथाई मीणो की थी इसी कस्बे के हरराज मीणा ने जोधपुर के दुर्ग पर हमला किया था लेकिन उसे जोधपुर के राजा उदयसिंह ने मरवा डाला था (मारवाड का इतिहास) 'बागड' के मीणो के बारे मे कहा जाता है कि वे मगर मारने का धन्धा करते थे बासवाडा जिले के भू भाग को ही 'बागड' नाम से जाना जाता है यहा के भील-मीणा बडे स्वाभिमानी हैं

उदयपुर-डूगरपुर मार्ग पर कुछ वर्षों पूर्व भील-मीणों की 17 चौकिया थी जहा सकुशल यात्रा चाहने वाले यात्रियो को चुगी देनी होती थी ग्रासपुर तहसील मे सोम ग्रौर माही नदियों के बीच 'कटारा' क्षेत्र मे मीणे बडे ताकतवर रहे हैं यहा के मीणो की पाल मे उनके गमेती (मुखिया) की ग्राज्ञा के बिना राजपुरुष भी प्रवेश नही पा सकते थे राज्य का लगान वसूल करके भी गमेती ही भेजते थे घने

जगलो से घिरा हुआ यह क्षेत्र वागड के स्वाभिमानी मीणो की स्वच्छन्द विहार स्थली रही है (मीणा इतिहास)

खोह : कछावो ने मीणो से सत्ता हथिया ली

जयपुर स पाच किलोमीटर की दूरी पर परकोटो से घिरी हुई एक बस्ती है—'खोह' यहा मदिर, बावडिया और महल है यही खोह कभी चादा की राजधानी थी, जहा मीणो का राज चलता था ग्यारहवी शताब्दी मे यहा आलणसिह नाम का राजा राज करता था मीणो के इस राज्य पर कछावो ने अपना अधिकार करने के लिए छल-कपट से काम लिया कर्नल टाड ने इस सम्बन्ध मे लिखा है—

'नरवर का राज्य सोढसिह के हाथ मे था उसकी मृत्यु के बाद उसके भाई ने नरवर पर अधिकार कर लिया, तो सोढसिह की विधवा पत्नी अपने पुत्र दूलहराय को बचा लने के अभिप्राय से भाग आई दूलहराय अभी बच्चा था वह किसी प्रकार खोह क जगलो तक आ गई भूख लगी तो अपने पुत्र को एक बड़े पेड के नीचे लिटा दिया और फल फूल का इतजाम करने लगी लेकिन तभी उसने देखा—एक भयकर आकृति का साप उसक बच्चे के सामने फन फैलाये बैठा है वह भयभीत हो गई और जोर से चीख पडी चीख सुनकर एक राहगीर (ब्राह्मण) उधर दौड़ता हुआ आ गया बच्चे को सुरक्षित करते हुए उसने बताया कि—यह एक अच्छा शकुन है तुम्हारे बेटे का भविष्य उज्जवल है तुम खोहगज जाकर राजा की दासी बन जाओ राहगीर की बात उसे ठीक लगी वह आलणसिह की रानी के सामने उपस्थित हुई उसे दासी क रूप मे रख लिया गया लेकिन एक दिन उसका यह राज खुल गया कि वह मामूली दासी नही है, राजघराने की स्त्री है राजा ने उसे अपनी बहन बना लिया वह ठाट बाट स रहने लगी दूलहराय चौदह वर्ष का हो गया राजा ने उस अपने आदमियो के साथ दिल्ली के तवर सम्राट के दरबार म जाकर खोह का कर जमा करने के लिए भेजा काफी समय तक दूलहराय दिल्ली मे ही रहा एक दिन उसके मन म आया कि खोह पर अधिकार करना चाहिए इसके लिए वह अवसर तलाश करने लगा उसे चादा राज्य के ढाढी ने सलाह दी कि दीवाली के दिन पितरो का तर्पण करते समय नि शस्त्र भील मीणो पर हमला कर देना चाहिए दूलहराय ने ठीक ऐसा ही किया उसने खोह के पास तालाब की पाल पर तपण म मग्न मीणो पर हमला बोल दिया और वहा मीणो की लाशें बिछा दी ढाढी को भी उसने मार दिया और उसकी लाश मीणो की लाशो के उपर रख दिया 1023 म खोह मे कछावा राज्य की नीव डाली गई।

उल्लेखनीय है कि जयपुर मे आमेर की गद्दी पर बैठने वाले कछावा राजाओं मे यह प्रथा रही है कि राजतिलक मीणे के अगूठे के रक्त से सम्पन्न होगा।

खोह मे आज भी मीणा-राजाओ के समय के महल, इमारतें आदि विद्यमान हैं खोह

के आसपास चादा मीणों के कई गाव आज भी हैं कुछ वर्षों पूर्व खोह मे एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया उस यज्ञ मे एक मीणा (चादा) को ही यजमान बनाया गया । इससे स्पष्ट है कि चादा गोत्र के मीणे ही कभी खोह मे राज्य करते थे और कछावो ने इन्ही से सत्ता हथिया ली थी ।

अब दूलहराय ने 'माची' के सीहरा राज्य पर अधिकार करने की योजना बनाई दौसा पर पहले ही वह अपना आधिपत्य स्थापित कर चुका था (स० 1125) उस समय, माची म सीहरा वश का मीणा-राजा रावनाथू सीहरा राज करता था वह बडा बहादुर था उसकी बहादुरी के किस्से आज भी आदिवासी भील-मीणो के लोकगीतो और लोक-गाथाओ मे सुनने को मिलते हैं कर्नल टॉड की मान्यता है कि दूलहराय माची के पास मीणो से युद्ध करते समय मारा गया था अजमेर के चौहान राजा की पुत्री मारुणी के साथ विवाह करके लौटते समय दूलहराय को ग्यारह हजार मीणा ने घेर लिया था और उसे मार दिया था ।

मीणो के किले

राव सारस्वत ने मीणा इतिहास म लिखा है—आजमगढ का किला निश्चित रूप से मीणो का रहा है पुरातत्व विभाग का सूचना-पट्ट भी इस कथ्य को स्पष्ट करता है यह किला, सैनिक दृष्टि से उपयोग के लिए बनाया गया होगा किले के अदर एक जलाशय और दो-तीन पक्के भवन है तीन परकोटे है इसी तरह हथरोई का किला भी मूल रूप से मीणा-राजाओ द्वारा निर्मित किया होगा यह केवल एक छोटी-सी टेकरी पर बनी गढी है इसके पास एक शिव-मदिर है, जो अति प्राचीन है. नाहरगढ के भव्य दुर्ग के पीछे मीणो की प्राचीन बस्ती है कुछ वर्ष पहले तक यहा मीणे रहते थे लेकिन अब यह स्थान वीरान है जमवारामगढ का किला भी मूल रूप से मीणो का था वहा राव मेदा के प्राचीन महलो को आज भी मीणा समाज के लोग बडी रुचि मे देखते हैं सवाई माधोपुर से 6 मील दूर स्थित रणथम्भोर का किला 'टाटू' खाप के मीणो द्वारा बनाया गया था हम्मीर की सेना मे सीहरा वश के मीणे बडी बहादुरी से लडे थे इसलिए सभव है कि मीणो की इस भूमि म बना यह दुर्ग भी मूल रूप स अन्य अनेक दुर्गो के समान ही मीणो का रहा होगा ।

बू दी मे मीणो का अपना राज था मैनाल प्रदेश मे बबावदा के निवासी चौहान देवसिह ने, मेवाड के महाराणा अरिसिह की मदद से बू दी के मीणा राव जैता को धोखे से मारकर, बू दी पर अधिकार कर लिया था 'नैणसी की ख्यात' मे घटना कुछ इस प्रकार बताई जाती है—एक ब्राह्मण की लडकी एक मीणा से प्रेम करत थी और वह उससे विवाह करना चाहती थी ब्राह्मण यह नही चाहता था अपना दुख सुनाने वह अपने यजमान देवा के पास भैंसरोडगढ गया यजमान ने उसे एक

सलाह दी और ब्राह्मण ने मीणों से विवाह-प्रस्ताव स्वीकार करते हुए कहा कि मैं आपकी बराबरी नहीं कर सकता इसलिए विवाह में आप सब के स्वागत के लिए अपने यजमान हाडो को बुला लेता हूं....' मीणों ने तुरन्त यह बात स्वीकार कर ली विवाह के दिन मीणे शराब पीकर मस्त हो गए मौका देखकर देवा और उसके साथियों ने काटों की छड़ें बनवाई और बारूद बिछाकर, उस पर घास फैला दी यहीं पर मीणों को बुलवाया गया और उनका स्वागत-सत्कार किया गया मीणों को इतनी शराब पिलाई गई कि वे बेहोश-से हो गए और इधर-उधर लुढ़क गए बस फिर क्या था ! देवा के साथियों ने मीणों का सहार शुरू कर दिया कई मीणों को तलवार से काट डाला गया और अनेक को बारूद में आग लगाकर जिन्दा जला दिया गया इस तरह धोखे में देवा हाडा ने मीणों को मारकर, बूंदी पर अधिकार किया मीणों की बहादुरी से राजपूत-राजाओं को हमेशा भय बना रहा इसलिए उन्होंने अपना अस्तित्व स्थायी रखने के लिए कभी मीणों के भोलेपन का फायदा उठाया, तो कभी धोखा देकर उनकी जान ली

बास्या या बासना को मारकर जगमाल ने बांसवाडा नगर बसाया डूंगरपुर के स्वतन्त्र आदिवासी राजा 'डूंगरिया' को धोखे में मारकर डूंगरिया के 'पाल' या ग्राम पर कब्जा कर लिया गया, जो डूंगरपुर नगर बना जिस प्रकार काठल (देवलिया-प्रतापगढ राज्य) में देवली मीणी की चोटी की पूजा की जाती है, उस प्रकार बागड (संस्कृत-वाग्वर, डूंगरपुर-बांसवाडा राज्य) में राजाओं के लिए यह प्रथा रही है कि डूंगरिया के वंशज-परिवार का पुरुष, अपनी अगुली के रक्त से नए राजा का राजतिलक करता है।

भील-मीणा और अंग्रेज

मुगल सत्ता के पतन के बाद भील-मीणा के हौसले फिर बुलंद हो गए और फिर से वे लूटमार करने लगे मीणों का दमन करने के लिए अंग्रेजों ने बड़ी कूटनीति से काम लिया

सन 1872 में शाहजहांपुर के मीणों की लूटमार से आतंकित होकर अंग्रेजों ने उस क्षेत्र को प्रशासकीय दृष्टि से अलग कर दिया और एक विशेष अधिकारी की वहां नियुक्ति की लेकिन इस विशेष अधिकारी (सुपरिटेंडेंट ऑफ मीणा डिस्ट्रिक्ट्स) ने मवाड, बूंदी जयपुर के राजाओं और दरबारों की सेना की सहायता से मीणों को कुचलने का कार्य आरम्भ कर दिया परिणाम यह हुआ कि मीणों ने लूटमार बंद कर दी और खेती करके अपना गुजारा करने लगे कई भील-मीणा 'मीणा-रेजीमेंट' में भर्ती हो गए।

लेकिन सर्वत्र मीणों ने परिस्थितियों से समझौता नहीं किया उन्होंने अपनी क्रांति

(लूटमार) जारी रखी, मीणों को इसमे काफी नुकसान उठाना पडा जहाजपुर के मीणो से मेवाड का महाराणा इतना भयभीत रहा कि उसे 1854 मे गवर्नर जनरल सर हेनरी लॉरेन्स से उसके उदयपुर–आगमन के अवसर पर शिकायत करनी पडी।

सन 1855 मे खैराड के मीणो का सामना करने के लिए अंग्रेजो ने जयपुर, अजमेर बूदी और मेवाड की सरहदो पर छावनी की व्यवस्था की और रियासती थाने तैनात किए अंग्रेज सुपरिटेंडेंट मिस्टर वाल्टर ने झाक, शामगढ, लनुआ आदि गावो के मेर-मुखियाओ से समझौता किया और उन्हे 'शात' रहने की सलाह दी लेकिन मेरो ने अंग्रेजो की शर्त की परवाह नही की और सन 1819 मे नसीराबाद की छावनी से फौजो ने आकर उन पर हमले किए इस हमले मे मेर परास्त हुए और जगलो मे जा छिपे, कुछ समय बाद मेरो मे फिर जोश चढा और उन्होने अंग्रेजी थानो मे खूब लूटपाट की, और पुलिस अधिकारियो को मौत के मुह सुला दिया बाद मे अंग्रेजो ने दमनकारी नीति अपनाई और ब्रिटिश तथा रियासती फौजो के सम्मिलित प्रयास से स्थिति पर काबू पाने मे समर्थ हुए।

1857 की क्राति मे भील-मीणो ने भी सहयोग दिया मेवात के मेवो ने अंग्रेजो के खिलाफ बगावत की और तीस यूरोपियनो को कैद कर लिया, किन्तु जयपुर के महाराजा रामसिंह ने दिल्ली की ओर कूच करते समय मवातियो को सजा देकर यूरोपियनो को स्वतन्त्र करवाया इस अंग्रेज-भक्ति के पुरस्कार स्वरूप उन्हे अंग्रेज सरकार की ओर से कोटकासिम का जिला मिला। मेरवाड़ा के लोकगीतों में राजू रावत को आज भी याद किया जाता है वह बडा पराक्रमी था, उसने 12 वर्षों तक निरन्तर अंग्रेजो का मुकाबला किया बाद मे उसे फासी पर चढा दिया गया था।

अंग्रेजो ने बरार के रावत भारमल को 'राव', ककरा के रावत उमा को 'राव', दवेर के ठाकुर हीरा को 'ठाकुर राव' और हथून के बुढासा तथा चाग के फतहखा को 'खान' के खिताब देकर अपनी कूटनीति का इस्तेमाल किया इस तरह अंग्रेजो ने अपनी बुद्धिमानी से सामतो, राजा-महाराजाओ की तरह भील-मीणो को भी शात किया जो भील-मीणे फिर भी शात नही हुए, उन्हे 'बागी' या 'डाकू' कहकर कठोर से कठोर दड दिया।



एक भील-महिला : अपने शिशु के साथ

मे भी इनसे अधिक खुश रहने वाली कौम दूसरी नही देखी गई भय नाम की वस्तु क्या है, इसे न इनके पुरुष और न स्त्रियां, न तरुण-तरुणी और न बालक ही जानते हैं ये बहुत ही स्वस्थ लोग हैं बहुत कम बीमार पडते है और कई तो अपना इलाज अपनी जडी-बूटियो से स्वय कर लेते है

शिकार खेलना, मिट्टी के बर्तन बनाना, शराब बनाना इन्हे खूब आता है साल मे छ आठ मास भोजन के अभाव मे इनके बच्चे केवल महुए या अन्य जगली फल चुनकर खाते रहते हैं



भीलो की एक बहुत बडी विशेषता यह है कि शादी-ब्याह, मृत्यु भोज या किसी अन्य अवसर पर मेहमान बनने पर जो भी भोजन बनता है, वह सिर्फ बाटी होता है अथवा मक्का की रोटी (जिसके साथ किसी प्रकार की दाल-सब्जी नही होती) अस्सी प्रतिशत अवसरो पर भोजन कम पड जाता है, तब भील स्त्री-पुरुष और पेट तो दूर अपने हिस्से की उस बाटी या मक्का की रोटी को शिरोधार्य कर पानी पीकर प्रसन्नता पूर्वक विदा हो जाएगा

ससार मे अनेक जातियो को भीख मागते देखा गया है किन्तु भील कभी भीख नही मागता वह भूखा रहेगा, श्रम करेगा या नही करेगा, चोरी करेगा या डाका डालेगा, लेकिन भीख नही मागेगा बडे से बडे अकाल के समय भी भील ने कभी भीख नही मागी जो जाति भूखो रहकर भी गीत गाना जानती हो, उसकी तृप्ति और आनन्द का क्या कहना

मुफ्त का माल स्वीकार नही

मालवा और मेवाड के भयकर वनो मे यदि कोई भील-बटमार मिल जाए, तो वह सिर्फ माल मत्ता नही छीन लेगा, राहगीर को दिगम्बर भी बना देगा ताकि पलायन से पूर्व, राहगीर पास के किसी थाने मे नही पहुच जाए और वह दूरदर्शी बटमार केवल दिगम्बर ही नही बनाएगा, दिगम्बरत्व का सम्मान भी करेगा जब राहगीर कहेगा—'भाई हाथ जोडता हू, मुझे मत मार, मेरा सब कुछ ले ले' राहजन बटमार कहेगा—'हम मुफ्त मे कोई चीज नही लेते' यानी राहगीर की पिटाई को वह अपना परिश्रम समझता है और उसके माल को अपना पारिश्रमिक यह भील-मीणो का आम रिवाज है, उनका गहन व्यक्तिगत सिद्धान्त है

लेकिन, उसी बटमार को वनान्तर मे कोई वस्तु, यो ही मिल जाए तो, उस पर

अधिकार समूचे समाज का होता है, क्योंकि उनका सूत्र होना है—बिना परिश्रम के प्राप्त पदार्थ पूरे समाज का भील या मीणा चोरी करे, डाका डाले, दो चार रुपये के लिए मीलो तक भारी बोझा ढोए, कुछ भी करे, किन्तु श्रम का महत्व उसे सदैव स्मरण रहे, यह उसकी सभ्यता का संकेत है, मानो जो श्रम करता है, वही श्रमण है ! व्यक्ति इसकी सभ्यता मे नगण्य, समाज सर्वोपरि।

अतिथि सत्कार : एक विशेषता

जब दो मीणा परस्पर मिलते है, तो अभिवादन के पश्चात पूछते हैं—'को गावना वठे जाइर्‌या ? अर्थात 'हे वीर, कहिए कहा जा रहे हैं ?'

सजातीय को 'रावत' और अपरिचित अतिथि को पामणा (पाहुन) कहते हैं अतिथि-सत्कार इस जाति की सबसे बडी विशेषता है ससार की सभ्य से सभ्य जाति मे भी अपरिचित का इतना सत्कार नही होता होगा, जितना मीणा के आगन या द्वार पर उपस्थित अतिथि का एक बार जो पाहुन द्वार पर आया, प्राण देकर भी उसकी रक्षा करेंगे उसे अभयदान मिलता है स्वय भूखे रहकर भी मीणा-दम्पत्ति अतिथि को पहले भोजन देंगे घर मे कुछ न होने पर कहीं दूर जाकर, लूट-मारकर, डाका डाल-कर भी कुछ न कुछ ले आएगे और 'अतिथि देवो भव' के रहस्य की रक्षा करेंगे

वर्ष मे छ मास मीणा लोग सर्वथा बेकार रहते हैं, रोजगारी के दिनो मे इनकी औसत प्राय तीन रुपये रोज से अधिक नही है ! देवगढ-प्रतापगढ क्षेत्र के पचास हजार मीणो मे से बहुत कम परिवारो के पास जमीन होगी, शेष हजारो भूमिहीन हैं दो, पाच या दस बीघा जमीन पर एक फसल बोकर बमुश्किल अपना जीवन निर्वाह करते हैं !

परिवार के कमाऊ सदस्यो को जो दो-चार रुपये मिलते हैं, वह पाच-दस-बीस मील दूर किसी शहर या कस्बे तक 'मूरी' (जलाऊ लकडी) या भारा (घास का गट्ठर) ढोकर, बेचकर प्राप्त किया जाता है सामत युग मे ये लोग जगली जडी-बूटिया, इमारती लकडी, शहद औषधिया और कृषि-उपज आदि बेचकर, किसी तरह अपने चूल्हे की आग जलती रखते थे, लेकिन अब वन-विभाग वाल के तिनके-तिनके को ठेके पर उठा देता है. कृषि और वन की भूमि पर कई प्रकार की पाबन्दिया लगी हैं, जैसे आदमी की समूची जिंदगी पर कानून का पहरा बिठा दिया गया है

इसलिए, ये लोग अब वही लकडी बेच सकते हैं, जो पेड से टूटकर गिरी है स्वय एक पत्ता भी नही तोड सकते. जो मीणा और भील स्वय 'प्रकृति का पुत्र' है शता-ब्दियो से जो वन-वनान्तरो, पर्वत-निर्झरो और घाटी-चरागाहो की गोद मे पला है, उसे, एक तिनका भी न तोडने, एक पत्ता भी न खींचने, एक छत्ता भी न छूने का आदेश देना कितना बडा जुल्म है !

पहले, वह शहद से मक्का, जुआर, चने या बाजरे की रोटी खाता था मुक्त मन से मुक्त वन मे 'भूडा' (महुआ) या 'उमरा' (गूलर) का मोद (मद या शराब) बनाता था

उसके पास अपनी भूमि थी अपना गो धन था अपने पशु पक्षी थे अपनी धरती और अपना आकाश था वह अपनी प्रकृति का आप स्वामी और सेवक था स्वय अपना राजा था लेकिन आज उसका सर्वस्व छिन गया है वह पूर्ण दिगबर है और दूसरो को 'दिगबर' बनाने को मजबूर है ! . इसलिए कि सामन्त ने उसकी जमीन छीन ली नई व्यवस्था ने उसके जगल छीन लिए, ब्राह्मण ने उसकी निर्भयता छीन ली हाजी-वाण्या (महाजन) ने उसका सर्वस्व छीन लिया हाजी को वह एक रुपए पर एक रुपया प्रतिमास सूद देता है कम स कम 25% प्रतिमास ब्याज उसे देना पडता है और अज्ञान है इसका कि कर्ज चुका देने पर भी पीढी-दर-पीढी कर्ज का मर्ज चलता ही रहता है !

अपना परिश्रम पदार्थ के रूप मे लेकर जब यह कस्बे के बाजार म आता है, तो खरीदारो के साकेतिक सगठन की चट्टान स टकराकर, इस अपौरुषेय धैर्य पेट की पुकार और भूखे बच्चे की चीत्कार की कल्पना स टूट जाता है और यह अपना पदार्थ सस्ते से सस्ता बेचने को बाध्य होता है, क्योंकि शाम हो गई है और अभी इसे दस या बीस मील दूर घर लौटना है घर यानी झापा गाव यानी खेडा जहां सबसे ऊची टेकरी पर, इसके बच्चे आज की इसकी कमाई रोटी की राह देख रहे हैं !

कानून के प्रति लापरवाही भी डर भी...

मक्का का रावडा (दलिया) मिल जाए, तो छाछ के साथ पूरा परिवार खा लेता है बस, यह अपना सबसे बडा सौभाग्य समझता है मुखमरी के दिनो म महुआ लेकर खा लेता है या 'घुमाड्या' से अपना पेट पालता है

मीणा मासाहारी है लेकिन हरेक मीणा मास नही खाता उसकी जाति मदिरा-प्रिय है, किन्तु हरेक मीणा मदिरा नही पीता !

एकान्त दुपहरियो म या बहुत खिली चादनियो म यह महुए की नाजायज शराब बनाता है और खूब छककर पीता है और पिलाता है कानून के प्रति यह जितना लापरवाह है, अज्ञानवश उतना उससे डरता भी है !

मालवा के इन खूबसूरत पठारो मे अरावली की उन घु घराली घाटियो मे, वागड के इन हरियाले मैदानो मे और बडा मगरा के उन गहन कातारा म मीलो मीलो तक वनश्री की अनिश्वर देह का स्वामित्व इससे छिन गया है, तो क्या हुआ, यह

उसकी आत्मा के रंग, रूप, रस और सौरभ का स्वामी तो है ही !

दारू, दारा द्रव्य, देह और दुराग्रह के कारण इसे कोर्ट–कचहरी, पुलिस थाने और जेल की हवा खानी पड़ती है

गाली देने वाले को यह तत्काल पीट देता है 'मामा' सम्बोधन पर शत्रु का भी सेवक बन जाता है अनपढ़, असभ्य है शेष सभ्यता की दृष्टि मे, परन्तु पुरुष इस जाति का अपनी प्रेमिका के लिए पल भर म प्राण न्योछावर कर देता है दूसरी ओर चरित्र-हीन स्त्री के पैर की पिंडली के नीचे किसी नस को काट देता है और उसे बाहर निकाल देता है

मीणा वचन को बहुत पवित्र मानते हैं 'वचनहार' व्यक्ति का कोई विश्वास नही करता, उसे न्यात (जाति) से बाहर कर दिया जाता है

ब्राह्मण का सबसे अधिक सम्मान करता है, और भगी को 'भगवान का दूत' मानकर, सबसे पहले उसे दान देता है उसका विश्वास है कि भगी 'हितरा' (शीतला) देवी का स्नेह भाजन है

अन्तिम संस्कार

पाल परा, फला या खेड़ा मे जब किसी की मृत्यु हो जाती है, तो बडी गमगीन और उदास धुन मे ढोल बज उठता है बकरे की खाल मढे इस ढोल को 'नान्दला' कहते है नान्दला का आर्त्तनाद सुनकर प्रत्येक व्यक्ति अपनी मुट्ठी मे थोडा अनाज लेकर मृतक के झापे की ओर जाता है जहा 'कामरिया' या जोगी द्वार पर तैयार मिलता है जोगी के पास पानी भरा मिट्टी का घडा और घोडे का एक पुतला रहता है शोक मनाने वाला अनाज देकर अपनी अजली मे जल लेकर, मृतक के नाम का उच्चारण करता है और पुतले पर पानी छिडक देता है

युद्ध मे खेत रहे सूरमा का 'पारिया' या 'चीरा' (शिलालेख जैसा प्रस्तर खड) किसी ऊची जगह या चबूतरे पर लगाया जाता है उस पर एक अश्वारोही योद्धा की आकृति अकित की जाती है, जिसके हाथ म तलवार, भाला या अन्य कोई शस्त्र दिखाया जाता है मृत्यु पर जातीय भोज 'कायटा' आवश्यक है भोज मे 100 व्यक्ति हो और 500 निमन्त्रित व्यक्ति हो, तब भी टुकडा-टुकडा सबको बाट दिया जाता है सभी महमान विनयपूर्वक अपने मेजबान का मान रखते हैं और बिना किसी आलोचना के, अपने-अपने घर लौट जाते हैं. सरलता और सहनशीलता इनमे असीम है



बोली

विभिन्न स्थानों पर रहने वाले भील-मीणों की बोलियों में अन्तर है. समय के साथ ये लोग अपनी मूल भाषा भूल चुके हैं. भीलों की 'भीली' भाषा गुजराती और राजस्थानी भाषा से कुछ मिलती है. अब तो हिन्दी, उर्दू, मराठी, मालवी, नीमाड़ी और अंग्रेजी के शब्द भी इनकी भाषा में शामिल हो चुके हैं अंग्रेजी शब्दों को जब भील-मीणा इस्तेमाल करते हैं, तब सुनने वालों को हंसी आए बिना नहीं रहती 'हॉस्पिटल' को ये 'अस्टाल', 'होटेल' को 'हुटल्या', 'टिकट' को 'टिकट्या' कहते हैं....

पशु-पक्षियों के नाम

पशु-पक्षियों के नामों को भील-मीणा इस तरह बोलते हैं—

चिड़िया—चरकली, मोर—मोरिया, कुत्ता—कुतरा, शेर—बाघ, बिल्ली—मिनकी,

या माजरी, खरगोश—हाइला, कौआ—कागला, हाथी—ग्राती, बकरी—टेडकी, तोता—हुडा, गाय—ढाढकी, बैल—बलद, मुर्गा—कुकडा, गधा—गधेडा, साप—हाप, बकरी—बकडी, भैंस—डोबी, तोता—हूर्यो, बन्दर—माकडियु

अन्य शब्द

राजा—राजो, बेटा—पूरिया, ससुर—ससोरो, साला—सालोप, भाई—भाईडो भोपडा—भापा या टापरा, लोटा—कलस्यु, जूता—खाडा, रोटी—रोटो, दाल—डाल, गेहू—गेऊ, सोना—होना, बैंगन—रेंगणु, कपडा—बटका, ब्लाउज—पोलका, शादी—माडो, जाना—जाहे, दिन—दनडो, दरवाजा—जापा, किस तरफ—केमनी दौडती—छामती, सूचना देना—हेलो पाडो, जल्दी—बेला, नौजवान—मोटयारा, तीर हरज्यो, समय—जुगे, कुछ भी नही मानता—एक नी मानु, कुल्हाडी—कराडियु, सुन्दरी—रुपाली, मकान—मेडियु, अग्रेज—पुरबीया रजा, कुलदेवी—धनियारी, पछताना—पसमाना .

'भीली' बोली मे प्रयुक्त मराठी शब्द

मीठ—नमक, आम्बा—आम, लिम—नीम, मस्का—मक्खन, परात—थाली, घाटकी—स्टोरी, रहात—रहता, ऊंदरो—चूहा, अन्य अनेक शब्द ..

गुजराती शब्द

पण—परन्तु, मू—क्या, छे—है, घणो—बहुत, सु—क्या, नाहर—शेर, बेन—बहन, पाणी—पानी, रोटला—मोटी रोटी, ने—और, आपी दे—दे दो इत्यादि . .

अरबी-उर्दू शब्द

कत्ल—हत्या, इमान—भरोसा, नफा या फायदा—लाभ, कसम—शपथ, अर्जी—प्रार्थना-पत्र, कसर—कमी आदि शब्द .

नामकरण की विचित्र पद्धति

इन आदिवासियों का नामकरण-संस्कार ब्राह्मण सम्पन्न करता है यदि उसे बुलाने का सामर्थ्य न हो तो शिशु की बूआ या उसका मामा यह कार्य करता है इसकी विधि बहुत सरल है—सप्ताह के जिस दिन जन्म होता है, उस दिन के नाम पर नामकरण किया जाता है—सोमवार को 'सोमला' (होमला), इसी प्रकार, 'मगल्या', और बृहस्पतिवार को उत्पन्न 'बेस्ता' शुक्र को शुक्रा (हुकरा) थावर यानी शनिवार को जन्मे शिशु को 'थावरिया' और आदित्यवार को जन्म लेने पर 'दित्या' नाम रखा जाता है लडकिया होमली, मगली, थावरी नाम पाती हैं
वैसे आजकल अन्य जातियों के नए नाम भी रखे जाते है और बालकों के नामांत मे 'सिंह', 'लाल', 'कुमार', 'चन्द्र' आदि जुडते हैं

जवान लड़किया चोगली, रूपली, गतकी, राधकी, चुनकी बजरी, बगदी, अतुडी द्रुपदा, रीछड़ी, छीतरी, गुली, द्रुपदा, कोमा, भुलकी, मुलकी फुलकी आदि कहलाती है, यदि वह परिवार की सम्पन्नता अथवा फसल के समय पैदा होती है, तो उसे रूपा, मोती, माणक, मनका, हीरा, जवेर (जवाहर), पन्ना कहकर पुकारते है

भील-मीणा युवको के नाम दीत्या, गल्या, पातल्या नथू छादू, किशन, भलजी धनजी, बावर्या कार्या, मोट्या वेस्ता आदि होते है





धार्मिक विश्वास और पर्व-त्योहार

देवी-देवता

आदिवासी भील-मीणों में जितने जाति-भेद हैं, उसी के अनुसार उनके अनेक देवी-देवता हैं. पशु-पक्षी, वन, पहाड़, पत्थर, नाग, महापुरुष आदि इनके देवताओं में शामिल हैं. हर गाव, हर भापे का एक देवता होता है.

भील-मीणों को यह पूरा विश्वास और श्रद्धा रहती है कि जब भी वे अपने देवता को पुकारते हैं, वे उनकी मदद को आ जाते हैं. विपदा के वक्त देवता ही काम आते हैं. घने जंगलों में 'बाघ देवता' प्रकट होते हैं, दहाड़ते हैं, लेकिन उनका कुछ नहीं बिगाड़ते।

इनमें हिंदुओं की तरह कुलदेवी की परम्परा है शुभ अवसरो पर कुलदेवी की पूजा की जाती है शीतला सप्तमी पर 'शीतला माता' का पूजते है इनका विश्वास है कि माताजी को पूजने से छोटी या बडी माता (चेचक) नही होगी पूजा के दिन ये ठडा खाना ही खाते हैं श्रावण में 'बावादेव' को बडी श्रद्धा के साथ पूजते हैं मुर्गे की बलि दी जाती है मदिरा और मिठाई चढाई जाती है इस अवसर पर बावादेव को जमीन भेंट मे दी जाती है.

भगवान शकर का यह अनन्य भक्त है उसे अपना सरक्षक या पिता मानता है चोरी या डकैती मे जाने से पूर्व या सफल होने के बाद शकर की जय-जयकार करता है—'भोले शकर की ही कृपा है.. .'

महाकाली, चण्डी, काली आदि शक्ति-भवानी की पूजा के लिए, सामग्री जुटाने के लिए, वह कुछ भी कर सकता है ! चाहे उसे किसी महाजन को लूटना पडे या कमाने के लिए पच्चीस मील का सफर करना पड़े या अपनी पत्नी के चादी के कडे गिरवी भी रखने पडे, वो रख देता है



नाग की पूजा भी इनमें विशेप रूप से होती है पूजा के समय 'नाग-देवता' (मूर्ति) को सिंदूर से रग दिया जाता है इस पूजा के पीछे उनका विश्वास है कि वन में साप उन्हे अकारण नही काटते ।

'हनुमान' की भक्ति भी ये करते हैं और 'बन्दर' को हनुमान की सेना समझते है बन्दर पर पत्थर फेंकना भी पाप समझते हैं 'कुत्ता' को अपना रखवाला मानकर पूजते हैं. जगली-हिंसक पशु-पक्षियो से कुत्ता इनकी रक्षा करता है ।

आदिवासी मीणा और भील महा देव शिव और महाकाली देवी के भक्त हैं मीणो के बनाए हुए अनेक शिव मदिर विभिन्न स्थानो मे देखे जा सकते हैं धार्मिक कट्टरता मीणो मे नही होती और न ही धर्म के लिए इन्होने कोई युद्ध ही लडा ! पशुपतिनाथ दशपुर, गौतमनाथ अरनोद और रखमनाथ (ऋषभदेव, जैन तीर्थ कर) केसरियाजी (जिन्हे ये 'काला बावजी' कहते हैं) इनके आराध्य देवता हैं इनके स्त्री-पुरुष अनेक प्रकार के गडे तावीज पहनते हैं, ताकि भूत-प्रेत, कुदृष्टि और 'डायन-' ड़े गाव मे 'बाधाओं' को दूर करने वाले भोपे' (ओझा)

रहते हैं पुराने जमाने में गाव म यदि किसी औरत के 'डायन' होने का सदेह हो जाता, तो उसे कठोर से कठोर दण्ड दिया जाता था, यहा तक कि काठल सरकार को इसे रोकने के लिए बडे-कडे कानून बनाने पडे.



हिंगरा (शीतला) के अतिरिक्त चौथ, कारका (कालिका) दिवाक्, नारसिगी (सिहवाहिनी), दच्चा (दक्षा) आदि इनकी परम्परागत देविया हैं भील और मीणो के देवताओं म 'गाधी' एक नया देवता जुड गया है. गाधी ने इन्ह सामतो से मुक्ति दिलाई है और उसका आदर इसलिए भी जरूरी है कि वह इनके-जैसा ही ग्रिहायत गरीब—'नगा-भूखा, देवता है जो फिरगी बदर (अग्रेज) की जेल मे अपना जीवन बिता रहा है इन्ही की तरह 'जेलवासी' है और अपने जादू से या महात्मापन के दैवी-प्रभाव से यदा-कदा जेल क सीखचे तोडकर बाहर आ जाता है' दो हमराही जेलयात्री एक-दूसरे का सुख-दुख जानते हैं गाधी को 'मरा हुआ' नही मानते—'वह भगवान है, वह कभी मर नही सकता' गाधी को मृत घोषित करने वाले की आधुनिक व्यक्ति की अल्पबुद्धि पर तरस खाकर ये हसते हैं

अन्धविश्वास



मुहूर्त और शकुन पर इनका बडा भरोसा है बिल्ली रास्ता काट जाए, देवी की दिशा से उल्लू बोले, हवा का रुख, चाद की आकृति और चोरी-डकैती के पूर्व देवी की मनौतिया लेना, 'आखा' लेना, जेल से भागने मे सफल होने पर देवी को अपनी हथकडी-बेडी चढाना आदि प्रसग सामान्य हैं हैजा, महामारी, प्लेग, चेचक, मोतीझरा आदि का कारण दैवी-प्रकोप और बुरी नजर वाली स्त्रिया मानी जाती हैं. अरडी की लकडी की बेतों से पिटाई की जाती है.

यात्रा या किसी कार्य हेतु घर से बाहर जाते समय यदि सियार की आवाज सुनाई दे जाए, तो आदिवासी अपनी यात्रा स्थगित कर देता है. सावन मे कोयल और मोर का बोलना शुभ माना जाता है. जो व्यक्ति खेती प्रारम्भ करते समय मोर या

कोयल की आवाज सुन लेता है, तो उसकी फसल बहुत अच्छी होती है गोरैया धूल मे स्नान करती है, तो ये मानते हैं कि अब बारीश आएगी गधे के रेंकने को भी शुभ मानते हैं.

यात्रा के समय बछडे को दूध पिलाती हुई गाय को देखना शुभ होता है कौए की काव-काव को यह अच्छा शकुन समझता है लेकिन जब भील बीमार हो जाता है, तब कौए के बोलने को वह 'अशुभ' मानता है उसका विश्वास है कि कौए की कर्कश ध्वनि बीमारी को बढाती है घोडे की हिनहिनाहट सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं

पुराने समय मे जिस स्त्री पर 'डायन' होने का दोष-कलक लगता, उसे ये नगा करके किसी पेड से बाध देते, उसके आगे के दात निकालकर फेंक देते, उसकी आखो मे लाल मिर्च भर देते, जलती लकडी से उसके स्तन, नितम्ब और जाघें जला दी जाती, फिर मुह मे शराब भर दी जाती इस प्रकार सारा 'डायनपन' निकल जाता और वह अभागन तो मर ही जाती !

जन्म से बारह वर्ष की आयु के पूर्व ही भील लडके की कलाइयो और भुजाओ पर, आग में तपी हुई धातु से दाग लगाया जाता है (डाम लगाना) इस बारे मे इनका विश्वास है कि यह चिह्न न होने पर, भील जब भगवान के घर जाएगा, तो उसे बाहर द्वार पर ही रोक दिया जाएगा !

भील-मीणो मे एक अधविश्वास यह भी है कि उनमे अब कोई पढा-लिखा नही हो सकता क्योकि कछावा जयसिंह द्वारा मीणो की बुद्धि होम दी गई थी महाराजा जयसिंह ने जब यज्ञ किया था, तब 'मीणा' का एक पुतला बनाकर जलाया गया था ! . . परन्तु आज जब विभिन्न प्रातो के कई भील मीणे पढ-लिखकर आगे बढ गए है, इस अधविश्वास का कोई महत्व नही ।

भील जरकटी (एक प्रकार का शिकारी पक्षी) को बहादुरी प्रदान करने वाला मानते है उनका विश्वास है कि जरकटी की हड्डी को दाए पैर की पिंडली को चीरकर उसके अदर रख दिया जाए, तो मनुष्य को साहस और शौर्य का वरदान मिल जाता है तथा युद्ध के समय वह हिम्मत नही हारता, पचास-पचास शत्रुओ से वह मुकाबला कर सकता है

होरी (होली), दशहरा और दीवाली त्योहार इनके लिए स्वर्ग की सीढिया है सबसे बडे पर्व होली पर तो दिनो तक ये सारे काम-धाम छोडकर मदिरापान म व्यस्त रहते हैं, तब इनका स्वच्छद, प्रमत्त, उन्मुक्त, प्रकृत रूप देखने को मिलता है रात-दिन ढोलकी गू जती रहती है और डट्या (छोटे-छोटे डडे, ठीक गुजरात की गरबा-रासलीला की तरह) देने के साथ, 'हिंडोलडी' की टेक पर, मीणा-महिलाओ

ग्रौर भीलनियों के ग्राजाद ग्रौर उन्मादक कंठ स्वर ग्रवंली की गिरिमालाग्रो के गले मिलकर, मालवा के पठार पर, दूर दिशाओ मे गू जते रहते है ।

लगभग दस दिन तक 'होरी' का नृत्यगान, भोजनपान चलता रहता है, शिकारें खेली जाती है, ग्रौर जगल में भूनकर खाई जाती हैं, साथ मे महुए ग्रौर गूलर के मीठे-मीठे फलो की ताजा शराब, सारे कानून भूलकर छककर पी जाती है, पास मे प्रेमिकाए रहती हैं ग्रौर पृष्ठ भूमि मे सिंह-शावक उछलते दहाडते रहते है, खरगोश ग्रौर हिरन समीप से कूदते निकल जाते है इन दिनो 'गालिया' (एक प्रकार गीतो के नाम, गाली नही) गाई जाती हैं कुछ वर्ष पूर्व यह प्रथा थी कि अपनी खुशी की खातिर भील-स्त्रिया राहगीरो को पकड लेती ग्रौर भेंट पूजा देने पर ही उन्हे छोडती ।

स्त्री पुरुष दो दल बनाकर, पलाश—'केवडी' के रगीन (केसरिया) पानी से होली खेलते हैं इस क्षेत्र मे 20-20 मील तक लगातार पलाश के वन हैं ग्रीष्म के प्रारभ म इनके कोटि-कोटि फूलो से दिगतो तक एक गलीचा बिछ जाता है

इनके सभी त्योहारो मे 'घेर' नाच होता है 'घूमर', 'घरणा' ग्रौर 'चकया' नृत्यो की ग्रपनी नजाकत है ।





लोक गीत

'आनद' भारतीय सस्कृति का सार है यह सस्कृति मरघट-मसानो, कब्र-मजारो और दर्द-आसुओ की सस्कृति नही है भील-मीणा के लोकगीतो की सबसे बडी विशेषता यही है कि इनमे आनद की अभिव्यक्ति होती है 'निराशा' शब्द जैसे इनकी डिक्शनरी मे है भी नही। हरेक खुशी के अवसर पर भील-मीणा नाचते-गाते हैं विवाह और होली तो गीत गान के प्रमुख अवसर है मेले मे इनके समूह के समूह गीत गाते हुए निकलते हैं आगे-आगे ढोल, पीछे-पीछे गीत स्त्री-पुरुष

भील-मीणो के लोकगीतो मे उनकी सस्कृति, रहन-सहन, रीति-रिवाज और उनके जीवन के प्रत्येक पहलु की झलक दिखाई देती है इनके लोकगीत बडे भावपूर्ण होते हैं शृ गार, विरह, वीर, वीभत्स, करुण, हास्य रस से परिपूर्ण

प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण भी अपने भव्य रूप मे निखरा है कही मोर नृत्य करता है, कही चिडिया चहचहाती है, तो कही वन्य पशु स्वच्छदता से विचरण करते है

प्रेम' आदिवासियों के जीवन की मुख्य भूमिका है. यह सिर्फ प्रेम ही तो है, जो उनके जीवन मे निरंतर रस घोलता है. इनके गीतों मे प्रेम की अमर भावना विभिन्न रूपों मे उजागर होती है प्राय: मिलन के गीत अधिक हैं 'निराश प्रेम' को इनके गीतो म स्थान नही प्रेम के कई गीत सोई हुई वासना को जागृत कर देत है, तो कई वासना मे लिप्त मनुष्य को परिश्रम के लिए प्रेरित करते है

देवर को भाभी के साथ हसी-मजाक करने का अधिकार भील-समाज म है इसकी आलोचना अनुचित है इसलिए इनमे ऐसे अनेक लोकगीत है, जिनमे देवर खुले मन से भाभी को हसाता है, चुटकुले सुनाता है, यह सब बातें भाभी को आनंदित करती है

भील-मीणा एक बहादुर जाति है भय किस चिड़िया का नाम है, यह नही जानते इनके वीर-पुरुषो की शौय-गाथाए लोकगीतो मे चित्रित है, जो आज भी भील-मीणो म साहस का सचार करत हैं

यहा आदिवासी भील-मीणो के कुछ लोकगीत और उनके भावार्थ प्रस्तुत हैं—

लोकगीत—1

रतनी सोकी हुई जलवावे,,,
राइ नै केवा बोले रे
मारग जाती ऊबी रे
कूडा मे बावडिया रे
ईट नी है घोरो
घोरे-घोरे फरे
कोदवन—पाणी दिए
पाणी भामा दौडे
फूल-फूले फरे।।

भाई ते मानु रइयु
भाई नी सेती बोनी,
मै कूडा नी सेती
रतनी सेती नी है हुँसयार
सेता सेता फरे
भाई बेन नी जोडी
बाई एक कूडो तोए मानु
घेर पाग बाटो मानु
भाईनो बाटो मानु

वो ते नानु रइयु है
बापू जाए है तो मार है
बापू है ग्रखारू
वाई जोवन जाता रेही
जोवना जाता नही जणाए
रतनी रई ने वोले
मोए वाटो ग्रालजे
मूं ते नपा नी जाउ
भाई बरोबर कमाई खाई ! ....

प्रस्तुत लोकगीत मे भाई-बहन के स्नेह की झलक है बहन अपने भाई के प्रति इतनी समर्पित है कि वह अविवाहित रहकर भी अपने भाई के कृषि-कार्य मे सहयोग देने के लिए पहुच जाती है और भाई के साथ कमा खाने का निर्णय लेती है !

लोकगीत–2

राई ने केवें बोले गागजी रा रे लिम्बिया भाई....
छेठ नमाडी वाडी रे
पइल नाहि ग्रावे रे
माताए वगला थाजो रे
पाडा पाटरी लावो रे
माता लिम्बस वाजे रे
डावोरें नी माता रे
ऊदार्तन फले रे
माता जई लाग रे
माता पूजा सोरो रे
कुणे भोपू वाजे रे
हलीयू भोपू वाजे रे
देवरे डाक थाली वाजे रे
देवरे भोपू धणे रे
माता ग्ररजाड ग्रावे रे
रईने केवें बोलें रे

मेइलू ग्रावे के नी ग्रावे
माता रईने केवें बोले रे
टूगी वेतें हादो रे

मेदूलू नही ग्रावे रे
जानरी पाला ग्रावे रे...

इस गीत मे कहा गया है—ग्रापाढ का माह है, लेकिन ग्रभी तक वर्षा नही हुई गाव का गमेती (मुखिया) सबको सूचना देता है कि सभी देवी-पूजा का सामान लेकर तिम्वस माता के मदिर में इकट्ठे हो जाए सभी मदिर मे इकट्ठे होते है ग्रौर माता की पूजा करते है थोडी देर मे माता ग्रा जाती है सभी कहते हैं—'हे माता, वर्षा कब ग्राएगी ?' तब माता उत्तर देती है—'इस वर्ष वर्षा बिल्कुल नही ग्राएगी इसलिए तुम सब ग्रपने तीर-कमान तैयार करो।' इस प्रकार देवी के ग्रादेशानुसार सभी बिखर जाते हैं

गीत–3

रपया लाजू वे तो लाव,
ने तो रेजे भापा बार..
टीलडी लाजू वे तो लाव
पहलु लाजू वे तो लाव
दारू लाजू वे तो लाव
घुगरी लाजू वे तो लाव
रुपया लाजू वे तो लाव
मोडिला लाजू वे तो लाव
पागडी लाजू वे तो लाव
हाला कटारी लाजू वे तो लाव ! ...

वधू-पक्ष की मीणा-मुदरिया वर को सम्बोधित करके यह गीत गाती हैं वर से वे कहती हैं—यदि तू रुपए लाया है, तो ग्रदर ग्राना, वरना बाहर ही रहना वधू के माथे पर लगाने के लिए बिंदिया लाया है, तो ग्राना, नहीं तो भीतर मत ग्राना इसी तरह वधू के लिए वस्त्र, घुगरी, पगडी, कटारी ग्रादि वस्तुग्रो की माग की जाती है

लोकगीत–4

रे जालीवार में आला नू राज, जालीवार मे जाला नू राज.
रे छोटा छोटा राजा जालीवार मे छोटा-छोटा राज
रे भीलड़ दुख दीए छोट छोट राज भीलड़ दुख दीए
रे छोटा राज नवे दीयो भीलड़ दुख छोट राज मत दीयो भीलड़ दुख.
रे भीलड़ दुख मत दीयो राज, भीलड़ दुख मत दीयो राज
रे छोटा-छोटा धाम्र मती बुन्नो राज छोटा धाम्र मती रे बुन्नो राज

रे छोटा धन्न वटी कोदरा मती
रे खार धान्न कुरी कागणी मतो
रे खंड धान्न उरद तल मती
रे ग्रम्वरी हन मतो
रे जालवीरा मे भोला भील जोलीवार मे भोला भील.
रे हुंईय मरे भोला भील, हुंईय मरे
रे मुख मरे भोला भील, मुख मरे भोला भील
रे इतरो दुख कुन सेवे राज, इतरो दुख कुन मेवें राज !
रे इतरो दुख वेवे तो पेरो परे राज, पेरो भेरें भ्रो राज !
रे मारी ग्ररजी मुनज्यो राज, मारी ग्ररजी सुनज्यो राज
रे खंर धाम्नरो भोगे मती लेवो राज....

भालावोड के राजपूत-राजा भीलों को बड़ी तकलीफ देते थे, उन्हें परेशान करते थे. इसी बात का चित्रण इस गीत मे बडे मार्मिक ढग से किया गया. भील राजा से विनती करते हैं—हमें कष्ट मत दीजिए हम गरीब हैं भूख से मर रहे हैं.... जंगली धान-वाजरा, कोदरा ग्रादि का भोग मत लीजिए कागणी, उड़द, मूंग, तिल ग्रादि का लेगान मत लीजिए.

लोकगीत–5

होली वाई ग्राजं ने काल
होली वाई जाए रे जाए....
होली वाई ग्राजं को वाहो रे
होली वाई वेलु रा ने ग्रावजे रे
होली वाई उण जेवी पासी ग्रावजें रे
होली वाई तोंए ते खूब रमाडा रे
होली वाई फाग गाहा ने गलाल उडहा रे
होली वाई फाग गाहा ने कल्की करहा रे
होली वाई फाग गाहा ने फागणियु ग्रोडहां रे
होली वाई फाग गाहा ने गैर रमहा रे
होली वाई वारे महिना पासी ग्रावजे रे
होली वाई उण ग्रावी जेवी पासी ग्रावजे रे
होली वाई ग्राज ने काल
होली वाई जाए रे जाए....

यह होली-गीत है. इसमे होली के ग्रवसर पर खेले जाने वाले खेलो का वर्णन है. होली के त्योहार पर यह गीत सामूहिक रूप से गाया जाता है. नाचते-गाते हुए भील कहते

है—हे होलिका ! तू वापस जल्दी आना तुझे बहुत खेल खिलाएंगे फाग गाएंगे और गुलाल उड़ाएंगे, किल्कारी करेंगे, फागनिया पहनेंगे इस वर्ष जिस प्रसन्नता के साथ तू आई है, उसी तरह अगले वर्ष भी आना ।

लोकगीत–6

रई ने केवा बोले रे
वैंवणजी आवणु पड है
खडक माए खेरवाडु
नवी कपणी माडे
भूरियु नवी सावणी माडे
जमी मोल लिए
पाडा वारी खाल जतरी
खालडे जमी मापे
खालडे जतरी जमी माते
भूरियु बगलो माडे
भूरियु सडक बडाडे
रे वैंवणजी हामरो मारी वाता
खालडा नो हेवो माडे
हेवो लाम्बो करे
धरती मापणे लागु
हेवे हेव धरती मापे
मगरा मापे भोलु राजा
राजा मोलवी लीदु
हिंदू राजा हिंदू
भूरियु गोरू लोक
भूरियु दगा नु मरियु
दगो करवे मायु
बीजु नाणु सलावे
कलदार ने कावडिया
नवा दूवडा नवा
मजुराए तेडावे
मजल भरती करे
दन का दूवडा आले
गेंती पावडा आले



वैवाहिक परम्पराएं

संसार के सभी धर्मों ने, नारी के सम्माननीय महत्व को स्वीकार किया है आर्य ग्रंथो ने उसे 'पूज्या' कहा है हिंदू घरो मे मा, बहन और बहू के रूप मे उसका समुचित सम्मान है उसके विचरण स्थान को देवताओ का वासस्थल कहा गया है नारी के त्याग, समर्पण और सेवाभाव को अक्षुण्ण रखने के लिए विश्व के सभी धर्मों तथा समाज-व्यवस्थाओ ने 'विवाह' सम्बन्ध को स्वीकार किया है

मीणा युवक स्वय को विवाहित मानकर बडे गौरव का अनुभव करता है अविवाहित या अविवाहिता को मीणा-समाज मे अच्छी भावना से नही देखा जाता आदिवासी युवक विवाह के लिए बडा कठिन श्रम करता है क्योकि जीवन संगिनी के लिए उसे पैसा देना पडता है यानी वधू के पिता को दहेज देना पडता है आलसियो की आलोचना की जाती है और उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है यह आलोचना ही उसे परिश्रमी बना देती है

भील-मीणा समाज मे यदि कोई युवक और युवती वचन के आधार पर पति-पत्नी के रूप मे साथ रहना शुरू कर दें, तो सामाजिक दृष्टि से उनका विवाह मान्य हो जाता है इसके लिए किसी प्रमाण या सबूत की आवश्यकता नही जीवन भर साथ रहने का परस्पर वचन ही काफी है।

वैवाहिक सम्बन्ध मे आदिवासियो के नियमो मे विशाल और उदार दृष्टिकोण है युवक और युवतियाँ अपना जीवन साथी चुनने के लिए पूर्ण स्वतन्त्र हैं विवाह के पूर्व ये आपस मे मिलते-जुलते है और इस प्रकार के मिलन को मीणा समाज हेय दृष्टि से नही देखता है

मेले की प्रतीक्षा

युवक-युवती मे प्रेम हो जाने पर दोनों प्रायः किसी मेले की प्रतीक्षा करते हैं मेले मे युवक सकेत द्वारा युवती को अपने परिजनों मे ले जाता है और वहा से सीधे अपने गाव गाव मे लडकी के पिता को सदेश भेज दिया जाता है बाद मे विवाह का कार्यक्रम रखा जाता है इनमे हिन्दू पद्धति से विवाह होता है।

यदि किसी कन्या को, मर्जी के खिलाफ, उडा लिया जाता है, तो कन्या के परिजन और गाव वाले मिलकर, उडाने वाले लडके के गाव मे घुसकर, उसका मकान जला देंगे यदि वे ऐसा करने मे असमर्थ रहते है, तो उस गाव का कोई भी मकान जलाकर लौट जाएगे, तब प्रतिपक्ष की ओर से इन आक्रातामो को भरपूर जवाब दिया जाता है और 'झगडा' ठन जाता है 'वारी ढोल' (रण-निमत्रण देने वाला) ऊची पहाडियो, टेकरियो और घाटियो मे गू ज उठता है और जहा-जहा उसका स्वर-सदेश पहुचता है वहा के ढोल भी गू ज उठते हैं और पलक झपकते हजारो-हजार भील तलवार, धनुष, लाठी, भाले, जो भी हाथ आता है, उठाए दौडते, उछलते-कूदते, हुवारते चल पडते हैं ऐसे विकराल विग्रहो के उपरात मैत्री के तरीके बडे विचित्र हैं—कन्या का पिता और प्रेमी लडका, दोनो किसी गड्ढे के भरे जल मे, एक ढेला डुबो देते हैं और सारे विवाद समाप्त समझे जाते हैं।

यदि किसी युवा को कोई युवती पसद आती है और युवती उसके साथ जाना पसद नही करती, तो वह वीर-सूरमा सारे गाव को देखते, चिल्लाकर चुनौती देता है—**'मैं अमुक, अमुक का पुत्र, अमुक गाव का निवासी, इस अमुक कन्या को अपनी पत्नी बनाने के लिए ले जाता हूं, जिस किसी की मा ने सेर भर सोंठ (प्रसूति के समय औषध) खाई हो, वह मेरे सामने आए।'**

'माडा' (विवाह) के समय सप्तपदी के अवसर पर वधू पहले तीन 'फेरो' मे आग रहती है, बाद मे वर चार फेरो मे आगे रहता है तदन्तर कन्या पक्ष के पुरुष उस कन्या वधू को वारी वारी से कधे पर बिठाकर, बडी देर तक नाचते हैं, यहा तक कि वे स्वय और वधू भी थककर चूर हो जाती है।

अन्य हिन्दू परिवार की भांति इनकी वधुएं भी घूंघट या 'छेड़ा' निकालती हैं। नवविवाहिता (लाडी) की सखियां, उसे अपने झापे में शयन के समय अकेली छोड़कर, चली जाती हैं दुल्हे (लाडा) को पकड़कर लाती हैं और उसे भीतर धकेलकर, बाहर से कुंडी चढ़ा देती हैं फिर उसी द्वार पर बैठकर गीत गाती हैं पांच-सात दिन पश्चात् लाडी के पीहर वाले उसे लिवाने आते हैं

भीलों में आमतौर पर यह रिवाज है कि जिस किसी पुरुष के एकाधिक पत्नियां होती हैं, उसके यहां उसका मांचा (खाट) बाहर आंगन में पड़ा रहता है जिस दिन जिस पत्नी की बारी होती है, वह शाम को मांचा अपने झापे में रख लेती है और रात्रि में पति को पाहुन बनाने के पश्चात् भोर में मांचा बाहर रख देती है दूसरी शाम जिस दूसरी या तीसरी की बारी होती है, वही पत्नी मांचा अपने अधिकार में कर लेती है एक-एक मर्द पांच-पांच छः-छः पत्नियां और उपपत्नियां रख सकता है इनमें सगोत्र विवाह नहीं होता है बड़ा भाई छोटे भाई की विधवा को अपनी पत्नी नहीं बना सकता, उससे पुत्रीवत व्यवहार करता है, लेकिन देवर अपनी विधवा भाभी को पत्नीवत रख सकता है, परन्तु विवाह प्रथा के द्वारा नहीं, नातरे के द्वारा. अधिक संतान वाली विधवा नातरा नहीं कर सकती पति की मृत्यु के 12 दिन बाद विधवा चाहे, जब दूसरा घर तथा वर कर सकती है

इनमें विवाहित जीवन की पवित्रता का बड़ा महत्व है किसी कुमारी की अनिच्छा पर बलात् व्यवहार करने वाले व्यक्ति से कन्या के पिता को पंचायत द्वारा हरजाना दिलाया जाता है और वह व्यक्ति उस कन्या से विवाह करने को बाध्य किया जाता है इसी प्रकार दूसरे की पुत्री या पत्नी को अपने यहां रख लेने, भगा लेने या उसे भ्रष्ट करने वाले को पंचायत पूरा दंड देती है।

इनमें संतान वृद्धि असुविधा का कारण नहीं बनती है जितनी प्रसन्नता पुत्र होने पर होती है, उतना ही आनन्द पुत्री जन्म से उन्हें होता है पुत्र बड़ा होने पर पिता को रोज के कार्यों में सहयोग देता है, और पुत्री धन-प्राप्ति (वधू मूल्य) का एक साधन बन जाती है

बाल विवाह पर्दा प्रथा जैसी बुराइयां भील-मीणों में नहीं हैं कई वर्ष पूर्व ये लोग हिंदुओं से प्रभावित होकर बाल विवाह के प्रति आकर्षित हुए थे, लेकिन बाद में मीणा समाज ने बाल विवाह का बहिष्कार कर दिया

कुछ वर्ष पूर्व इनमें यह प्रथा थी कि केवल विवाहित स्त्री ही 'चोली' पहनती थी और अविवाहितें अपने स्तन खुले रखती थीं इनमें किसी प्रकार की कुंठा, कुत्सा, कुदृष्टि और अवरोध जैसी चीज ही नहीं मानी जाती मनुष्य की बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार की बुराइयों से ये आज भी लगभग अपरिचित हैं मध्यप्रदेश के कुछ क्षेत्रों में आज भी आदिवासी युवतियां अपने वक्ष स्थल को ढकने से शरमाती

है। चोली पहनने मे उन्हे अटपटा लगता है, विचित्र सा अनुभव होता है यदि वह वक्ष स्थल को ढकने के लिए वस्त्र पहनने लगे, तो परिवार के बडे बूढे कहने लगते हैं कि यह तो 'खाल पटी' हो गई।

विवाह–गीत

विवाह के अवसर पर गीत गाने की परम्परा भील-मीणो म बरसो पुरानी है विवाह-सम्बन्धित सैंकडो लोकगीत है उन लोकगीतो म इनकी वैवाहिक-परपराए, विवाह के तौर-तरीके आदि का चित्रण होता है

केसरिया नो है मेलो
हाथा माय है हल्दियो,
होमली लगे ना नो ह दाडो,
छलोवियो है मेलो
थारे हाता पगा दोयडो
होमली पोटीली नी भरी
होमली ने हात हगा नकु
होमली लगेना लकता आया
होमली भरावा ना हाटा,
होमली लक्कैरा नी हाटा
होमली हाट ने बजारा,
होमली होनीडा नी हाटा
होमली वनीडा नी हाटा,
होमली पीजेगी मोलावे
होमली नातेडी मोलावे
होमली पीटोला मोलावे
होमली पीटी नो होरम फूटे
होमली लगेना लकता आया

उक्त गीत मे विवाह पूर्व का उत्साह उल्लास का वर्णन किया गया है मीणा युवती होमली की भावनाओ का चित्रण है विवाह क दिन अपनी वेशभूषा सजाने के लिए विभिन्न वस्तुए एकत्रित करती ह

रह ने केवा वोले
धारी नो माडवा है
होम माता न ढाल है
नानजीडु वलवो है

म्र री री खडक माय सैरवाडु
किनी सोरी वाजे है
जाली वाली सोरी है
सोरी सोल माय है
वलाउ म्रानी सोरी है
सोरो मर जोवनिया माय
साना कागद मोकले है
कागद धामा दौडे है
वेवाई ने वेवरा हैं
कागद हेरना करे है
किया वगला यहा
लम्पा वाले पुले
विया वेला म्रावजो
पीली ने परवाता
वी ते म्रावे धामा दौडे
साना लना म्रावे है
लम्पे म्रावी लागा
वाएदे वगला माया है
सोले दलनी वाता है
लागी माया लागी है
वेवाई ने वेवरा है
वे तो जाता रइया हैं........

इस गीत मे भी भील-विवाह के उत्साह और उमग का वर्णन है इसमे प्रेमी-प्रेमिका विवाह से पूर्व प्रेम-सदेश भेजते हैं ....

वइडी चढी मालू तो म्रावा लेरा गाव छे
पिछी फिरी मालू तो भुरियो डूगर देखाय छे

उक्त पक्तियो मे पति के प्रति प्रेम प्रकट करती हुई आदिवासी बाला कहती है— पहाडी पर चढकर देखती हू, तो गाव हरा-भरा दिखाई देता है, लेकिन नीचे उतरने पर वह हरियाली न मालूम क्यो भयावह प्रतीत होने लगती है पति के साथ ससार सुहावना लगता है, परन्तु उसके वियोग मे यही रसीली दुनिया नीरस बन जाती है ।

विवाह-विच्छेद

धार्मिक एव सामाजिक परम्पराओ के होते हुए भी पुरुष और स्त्री मानसिक एव शारीरिक आवश्यकताओ मे परिवर्तन होते रहते हैं और समय पाकर विवाह-सम्बन्ध

टूट जाता है और उसे आप-हम 'विवाह-विच्छेद', 'तलाक' या 'डाइवोर्स' कहते हैं सारी दुनिया के देशो मे एक न एक रूप से विवाह-विच्छेद प्रचलित है और अब तो सवर्ण एव उच्चतम हिंदुओ के लिए भी भारतीय ससद ने विच्छेद विषयक विधेयक स्वीकार कर लिया है

साधारणतया विवाह जीवन भर के लिए किया जाता है, किंतु किन्ही देशो मे अपनी सामाजिक प्रणालियो क अनुसार विवाह-विच्छेद होता है कारण विशेष उपस्थित होने पर पति-पत्नी यह सोचकर अपने विवाह-सम्बन्ध को तोड लेते है कि भावी जीवन मे हम सहयोगी बनकर नही रह सकते !

भील मीणा मे भी विवाह-विच्छेद होते हैं लेकिन परिणीता सहज ही अपने पति को नही छोड सकती यदि वह पत्नी का भरण-पोषण करने म असमर्थ है, शरीर से कमजोर है या हिंदू धर्म से विमुख है, तो पत्नी को उसके परित्याग का अधिकार है !

कुछ समय पूर्व इनमे तलाक की एक यह प्रथा प्रचलित थी—पुरुष अपने दुपट्टे का टुकडा फाडकर अपनी स्त्री को दे देता था, वह स्त्री जल भरे दो घडे सिर पर उठाकर अपनी मनचाही दिशा की ओर बढ जाती थी जो भी उसके घडे उतार लेता था, वही उसका पति बन जाता था.



म री री खडक माय सैरवाडु
किनी सोरी वाजे है
जाखी वाली सोरी है
सोरी सोल माय है
कलाउ म्रानो सोरो है
सोरो भर जोश्रनिया माय
गाना कागद मोक्ले है
कागद धामा दौडे है
वेवाई ने वेवरण हैं
कागद हेरमा करे है
क्यिा वगला यहा
लम्पा वाले पुले
विया वेला म्रावजो
पीली ने परयाता
वी ते म्रावे धामा दौडे
साना सना म्रावे है
लम्पे म्रावी लागा
वाएदे वगला याया है
सोले दलनी वाता है
लागी माया लागी है
वेवाई ने वेवरण है
वे तो जाता रइमा हैं........

इस गीत मे भी भील-विवाह के उत्साह और उमग का वर्णन है इसमे प्रेमी-प्रेमिका विवाह से पूर्व प्रेम-सदेश भेजते हैं.....

वइडी चढी मालू तो म्रावा लेरा गाव छै
पिछी फिरी मालू तो मुरियो डूगर देखाय छै

उक्त पक्तियो मे पति के प्रति प्रेम प्रकट करती हुई आदिवासी बाला कहती है—पहाडी पर चढकर देखती हू, तो गाव हरा-भरा दिखाई देता है, लेकिन नीचे उतरने पर वह हरियाली न मालूम क्यो भयावह प्रतीत होने लगती है पति के साथ ससार सुहावना लगता है, परन्तु उसके वियोग मे यही रसीली दुनिया नीरस बन जाती है।

विवाह-विच्छेद

धार्मिक एव सामाजिक परम्पराम्रो के होते हुए भी पुरुष और स्त्री मानसिक एव शारीरिक म्रावश्यकताम्रो मे परिवर्तन होते रहते हैं और समय पाकर विवाह-सम्बन्ध

टूट जाता है और उसे आप-हम 'विवाह-विच्छेद', 'तलाक' या 'डाइवोर्स' कहते हैं सारी दुनिया के देशो मे एक न एक रूप से विवाह-विच्छेद प्रचलित है और अब तो सवर्ण एव उच्चतम हिंदुओ के लिए भी भारतीय ससद ने विच्छेद विषयक विधेयक स्वीकार कर लिया है

साधारणतया विवाह जीवन भर के लिए किया जाता है, किंतु किन्ही देशो मे अपनी सामाजिक प्रणालियो के अनुसार विवाह-विच्छेद होता है कारण विशेष उपस्थित होने पर पति-पत्नी यह सोचकर अपने विवाह-सम्बन्ध को तोड लेते हैं कि भावी जीवन मे हम सहयोगी बनकर नही रह सकते।

भील-मीणा मे भी विवाह-विच्छेद होते हैं लेकिन परिणीता सहज ही अपने पति को नही छोड सकती यदि वह पत्नी का भरण-पोषण करने मे असमर्थ है, शरीर से कमजोर है या हिंदू धर्म से विमुख है, तो पत्नी को उसके परित्याग का अधिकार है।

कुछ समय पूर्व इनमे तलाक की एक यह प्रथा प्रचलित थी—पुरुष अपने दुपट्टे का टुकड़ा फाडकर अपनी स्त्री को दे देता था, वह स्त्री जल भरे दो घड़े सिर पर उठाकर अपनी मनचाही दिशा की ओर बढ़ जाती थी जो भी उसके घड़े उतार लेता था, वही उसका पति बन जाता था.





नृत्य

भील-मीणा एक नृत्य और गीतमय जाति है नृत्य, संगीत, सुरा और सुंदरी इस जाति के रोम-रोम में रम गए हैं जन्मदिन, नामकरण संस्कार, पूजा-पाठ, विवाह, प्रेम, खेतों में लहलहाती फसल, लूट-खसोट में अच्छा माल हाथ लगना, सुहावना मौसम सावन, होली-दिवाली, पर्व-त्योहार या कोई भी खुशी का अवसर हो, भील-मीणा का मन झूम उठता है वह थिरकने लगता है, नाचने-कूदने और गाने लगता है प्रत्येक स्त्री-पुरुष, युवक-युवती और बच्चे-बूढ़े सभी नृत्य के शौकीन हैं

नृत्य के साथ सुर, सुरा और सुंदरी अति आवश्यक हैं सुर में बांसुरी और थाली की झंकार जरूरी हैं ढोल और नगाड़ें की आवाज से चारों दिशाएं गूंजना भी जरूरी है सुरा—यानी महुड़े की शराब के बिना नृत्य का क्या मजा ? और बिना सुंदरी के साथ नृत्य कैसा ? भील-मीणा प्राय अपनी-अपनी प्रेमिकाओं या पत्नियों के साथ जी भरकर नाचते हैं जब भी उनका मन कहता है, नृत्य में मगन हो जाते हैं अंबामाता का मेला, गौतमनाथ का मेला या फिर सीतामाता

या मेला-वाठल के आदिवासी भील-मीणा के लिए नृत्य के विशेष अवसर होते है मेले के इन मौकों पर आदिवासियों के झुंड के झुंड नाचते-गाते और ढोल बजाते हुए देवी-दर्शन के लिए पहुचते है अपने देवताओ को प्रसन्न करने के लिए नृत्य का विशेष आयोजन करते है और नृत्य द्वारा ही उनकी पूजा करते हैं शिवजी-नृत्य मे इनका यह विश्वास होता है कि भगवान आकर स्वय उनके साथ नृत्य में शामिल होते हैं और उनके साथ ही नाचते-गाते है

'होरी' (होली) इनका प्रमुख त्योहार है उस समय उनके जगलो मे स्थित टापरों के आसपास का वातावरण बडा खुशनुमा हो जाता है सारा मैदान, जगल रग-बिरगे फूलो से आच्छादित हो जाता है चारो ओर केवड़े की खुशबू महक उठती है ऐसे सुहावने मौसम मे मीणा युवक-युवतियो का अग-प्रत्यग नाच उठे, तो आश्चर्य की क्या बात ?

होली नृत्य मे किसी प्रकार का कोई बधन नही ! सभी सीमाए लाघ दी जाती हैं मन-मस्तिष्क हर तरह की चिताओ से मुक्त रहता है 'श्लील' शब्द का अर्थ उनकी डिक्शनरी मे नही होता 'अश्लीलता' इस त्योहार की प्रमुखता है दारू के भरपूर नशे मे ढोल, बासुरी आदि के साथ खूब नाचना और जी भरकर एक-दूसरे को गालिया देना; खासकर अपने शोषक वर्गों को कोसना !

होली-नृत्य मे ये लोग नाचते-गाते कभी एक पक्ति मे खडे हो जाते है और कभी गोल घेरा बना लेते हैं....किसी भी व्यक्ति को चुनकर महिलाओ के वस्त्र पहनाते हैं और उसे गधे पर बिठाकर चारो ओर घुमाते है केवडी और गुलाल व रगो की बौछार से वातावरण इतना उल्लासमय हो जाता है कि वादक स्वय झूमने लगता है

'गैर' भी होली-नृत्य ही है ढोल-मजीरा और झालर के सगीत के साथ अनेक युवक-युवतिया अलग-अलग नृत्य करती हैं यह नृत्य तब तक चलता रहता है, जब तक वे थककर चूर नही हो जाते !

मध्य प्रदेश के बस्तर, निमाड आदि क्षेत्रो में स्थित भीलों म होली के अवसर पर **'भगोरिया'** नृत्य होता है होली के कुछ दिन पूर्व से ही यह नृत्य प्रारम्भ हो जाता है. मेले में रग-बिरगे वस्त्रो से सजे भील-नौजवान ढोल बजाते हुए, बासुरी पर रसीली धुन छेडते हुए नाचते हैं बासुरी की धुन का जादू ही है कि भील-युवती नौजवान भील की आखो मे आखें डालकर बेचैन हो जाती है और तडप उठती है इस नृत्य का उद्देश्य ही प्रणय-प्रदर्शन है युवक अपनी प्रेमिका के गालो में गुलाल लगाकर या केवडी का रग डालकर अपना प्रेम-प्रदर्शित करता है यह नृत्य सचमुच दर्शनीय है

'भूमर' सिर्फ महिलाओं का नृत्य है मीणा-महिलाए एक-दूसरी के कधे पर हाथ रखकर, गोल घेरा बनाती हैं और गाती-थिरकती हुई कभी आगे बढती हैं और कभी पीछे हटती हैं.

भील-मीणो मे 'लाठी-नृत्य' भी बहुत लोकप्रिय है इस नृत्य मे केवल युवक ही भाग लेते है ढोल खूब जोर से बजता है और युवक हाथो मे लाठिया लेकर, वृत्ताकार नाचते हैं नाचते हुए भी यह वृत्त बना रहता है एक-दूसरे से लाठिया टकराते हैं, जमीन पर मारते हैं, मानो इस तरह वे अपनी 'शक्ति' का परीक्षण कर रहे हो.

'युद्ध-नृत्य' भील-मीणो का सबसे खतरनाक नृत्य है! हालाकि इस नृत्य का उद्देश्य नवयुवको को युद्ध-कलाए सीखाना है, लेकिन इसमे जरा-सी असावधानी हो जाए, तो गभीर चोट लग जाने मे देर नही लगती किसी की जान भी चली जाए, तो आश्चर्य नही! समय के साथ इस नृत्य का महत्व कम होता जा रहा है

इस नृत्य मे दो दल होते हैं दोनो दलो के पास लाठिया, तलवार, भाले आदि होते है ढोल, नगाडे आदि बजते ही दोनो दल चिल्लाकर, जोर-जोर से हुकारे भर-कर, एक-दूसरे पर आक्रमण करते है किंतु यह लडाई नकली होती है इस नृत्य मे इस बात का खास ध्यान रखा जाता है कि भूल से कोई वार गलत न चला जाए

भीलो मे 'गरबा नृत्य' भी बहुत लोकप्रिय है यह नृत्य नवरात्रि मे होता है किसी विशेष स्थान पर देवी का खभा गाड दिया जाता है और एक मटके को बड़े ही सुदर ढग से मजाकर, बीच मे रखकर चारो ओर महिलाए हाथ से ताली बजाती हुई नाचती हैं पहले महिलाए नाचती हैं और उसके बाद पुरुष उनका अनुसरण करते हैं इस नृत्य मे किसी भी तरह का बाज उपयोग मे नहीं लाया जाता गरबा नृत्य के साथ गीत भी गाए जाते हैं इन गीतो म गुजरात की छाप है

विवाह के अवसर पर होने वाले नृत्यो मे प्रमुख है—'सुंदरी-नृत्य', इसमे सभी युवतिया चादी, पीतल या लाख के आभूषण और रग-बिरगे वस्त्रो से सुसज्जित होकर एक-दूसरे का हाथ थामे, ढोल-बाँसुरी आदि के स्वर के साथ, अपने पैरों को एक साथ आगे बढाती हैं और एक साथ ही पीछे हटाती है और उनकी अपनी बोली मे प्यार-विवाह के गीत भी गाती रहती हैं चारो ओर रसीला वातावरण हो जाता है युवक सुदरियो का सामूहिक नृत्य देखकर मोहित हो जाते हैं और अनायास ही भूमने लगते हैं फिर उनके सुर मे सुर मिलाकर गाने लगते है यह नृत्य बडा आकर्षक होता है!

विवाह के अवसर पर 'भिलाले' (भीलो की एक उप जाति) पुरुष घेरा बनाकर, लाठियों को, हवा मे लहराते हुए नाचते हैं इस नृत्य म पुरुष ही भाग लाते है

'मोहुलो' भी विवाह–नृत्य है, जिसमें महिलाएं बिना साज के नृत्य करती हैं व हाथ पकड़कर गोल घेरे में खड़ी हो जाती हैं फिर एक महिला गीत शुरू करती है और उसके साथ ही सभी नीचे झुकते हुए, थिरकते हुए, नृत्य में लीन हो जाती हैं।

नृत्य-गीत

कृषि के लिए वर्षा पर निर्भर रहते हैं इसलिए आसमान में काले-काले बादल देखते ही झूम उठते हैं मोर की भांति थिरकने लगते हैं, नृत्य करते हैं बांसुरी ढोल-मादल बजने लगते हैं बिजली की चमक और गड़गड़ाहट के साथ तालियां बजाने लगते हैं ऐसे अवसर पर मीणा-सुन्दरियां भी झापे में बैठी रहना पसंद नहीं करतीं, बाहर आकर नाचने गाने लगती हैं वर्षा–आगमन पर इन्द्र भगवान की पूजा करते हैं वर्षा-ऋतु पर यह नृत्य-गीत भील-मीणों में बहुत लोकप्रिय है—

असल घड़ाव जो रे मामा मारे मोरेली वाह ली
ताजी रगाड जो रे मामा मारी बादली
असल ताजी रगाडी रे नाना भाणेज थारी वाह ली
रेंडा उद्यारीया अमलिया माल रे
वे वाण उदारीया रेंडा अमलिया माल रे
अमलिया माल जानो भाणेज वाहली बजाडे रे
वाही दौ लाकता वे वाणये हाथ लियो नानो भाणेज वाहली बजाडे रे
दौड़तीयें धावती गई है मारी चोदी आमलिया माल रे

० ०

बरसात का मौसम शीतल पवन मंद-मंद बह रही है ...

झापे के द्वार पर एक भील-युवती खड़ी है, उसे देखकर एक भील युवक कह देता है, 'काले घने केशों पर पानी की बूंद चमक रही है.... पानी की बूंदें धीरे-धीरे युवती के गले में इस तरह छा गई, जैसे उसने मोतियों की माला पहन रखी हो!' युवती थिरक उठती है और उसकी थिरकन के साथ पैरों की पायल छमछमा उठती है साथ ही गाने लगती है—

काली काली बादली मा मेलती डगेली,
सीडी सीडी पाणी पड़े भागोनी-नी झोपडी
गले न गल सुण पाय मा बीछीया,
बीछीया ने छमके जासु वो जुवानाय





लोक कथाएं

किसी भी देश, प्रान्त, समाज या जाति के बारे में जानने के लिए लोक कथा सबसे उत्तम माध्यम है लोक कथाएं लोक जीवन की छवि है, लोकमानस का प्रतिबिम्ब है इनमें न सिर्फ मनुष्य की कल्पनाएं, भावनाएं और अनुभूतियां चित्रित होती है, बल्कि उनका इतिहास भी भलकता है मनोरंजन के साथ-साथ लोक कथाएं मार्ग-दर्शन भी देती हैं. इसलिए किसी भी वर्ग-विशेष की सभ्यता संस्कृति और इतिहास के बारे में जानने की हमें जिज्ञासा है, तो लोक कथाओं का अध्ययन अनिवार्य है।

आदिवासी भील-मीणों की अपनी सैंकड़ों लोक कथाएं हैं जिनमें उनके जीवन का सजीव चित्रण मिलता है अधिकतर कथाएं भूत-प्रेत, दैवी-चमत्कार और अन्ध-विश्वासों पर आधारित हैं भील-मीणों ने हमेशा गरीबी में अपनी जिंदगी गुजारी है ..दो वक्त की रोटी के लिए कठोर श्रम किया है शायद इसीलिए इन्हें ऐसी कथाएं अधिक पसंद हैं, जिनमें चमत्कार हो और जादू के बल से कोई 'बड़ा आदमी' या 'पैसे वाला' बन जाए इनकी लोक कथाओं में इन बातों की छाप नजर आती है।

आदिवासी भील-मीणो की कुछ लोक कथाएँ प्रस्तुत हैं—

डुंगरिया भील की कहानी

डूगरा गाव मे एक भील रहता था—डुगरिया वह बहादुर था, लेकिन स्वभाव का बडा ही भोला। रोज परिश्रम करके अपना पेट भरता था सिर पर पगडी बाधता था और हमेशा हाथ मे हथियार लेकर ही घूमता भगवान का वह भक्त था, रोज पूजा-पाठ करता

एक रात डुगरिया ने सपना देखा कि उसके मामा के यहा की होली माता उसे वहा जाने के लिए कह रही है सुबह नीद खुली, तो उसने अपनी पत्नी से कहा, 'ऐ मुलकी, मैने रात को एक सपना देखा'

क्या देखा, तुमने सपने मे ?' मुलकी ने उत्सुकता से पूछा।

डुगरिया भील ने अपनी पत्नी को सपने की बात बता दी और कहा, 'मैं मामा के गाव जाऊगा वहा होली खेलूगा'

सपने तो ऐसे ही आते रहते हैं' मुलकी ने समझाया, 'रात को तुमने ज्यादा दारू पी ली थी, इसलिए तुम्हे यह झूठा सपना आया है'

'लेकिन मैं तो वहा जाऊगा' डुगरिया बोला

'वहा जाने से तुम्हे खतरा है तुम्हारे दुश्मन वही रहते हैं जाओगे, तो तुम्हे छोडेंगे नही तुम वहा मत जाओ'

लेकिन डुगरिया ने मुलकी की बात नही मानी वह मामा के यहा होली खेलने जाने की तैयारी करने लगा घर म सबने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन होली माता की बात को वह कैसे टाल सकता था ?

उसने मक्की की राबडी खाई और हाथ-मुह धोकर, कंधे मे कुल्हाडी लटाकर, अपने झोपडे से बाहर निकल गया अपने गाव से बाहर निकलने से पहले उसने शकुन देखना चाहा वह शीशम के पेड के पास जाकर खडा हो गया और उस पर कुल्हाडी का वार करने लगा पहले ही वार मे शीशम की डाल टूटकर जमीन पर आ गिरी और उसमे से लाल खून जैसा रस बहने लगा डुगरिया यह देखकर चौक गया उसने सोचा—शकुन तो खराब ही हो रहे हैं लेकिन होली माता ने कहा है तो मामा के वहा जाना ही चाहिए आज शकुन बुरे हैं तो कल चला जाऊगा वह घर लौट आया

अगले दिन वह सुबह उठा और सामान खरीदने के लिए शहर चला गया नए कपडे खरीदे और बनिए के पास चादी का कडा गिरवी रखकर, कुछ रुपए उधार लिए फिर वापस घर आ गया उसके हाथ म सामान देखकर, घर के सभी लोग समझ

गए कि यह मानेगा नही और मामा के गाव देवल जाएगा डु गरिया के इस निश्चय से मुलकी भयभीत हो गई उसने फिर प्यार से समझाया, देखो, देवल मत जाओ, वहा तुम्हारे दुश्मन हैं तुम्हे वे छोडेंगे नही !'

'तू मुझे इतना कमजोर समझती है ?' डु गरिया ने हसकर जवाब दिया, 'मैं किसी से नही डरता मैं तो वहा जाऊगा !'

यह सुनकर मुलकी रोने लगी घर के सभी सदस्यो की आखो मे आसू आ गए, पर डु गरिया घर वालो की बात टाल सकता था, किन्तु होली माता की नही ! शाम तक तैयार होकर वह रवाना हो गया मामा के साथ होली खेलने की खुशी म उसके पैर थकते नही थे घने जगल के बीच वह चलता रहा .रात को बारह बजे तक वह देवल पहुच गया रात के वक्त वह घर जाकर, मामा की नीद खराब करना नही चाहता था, इसलिए एक पेड के नीचे ही भूखा सो गया

आज होली का दिन था मामा के साथ वह होली खेलता हुआ देवल के भीलो के समूह मे जा मिला सबने खूब दारू पी रखी थी गागजी नामक भील ने डु गरिया का अपरिचित चेहरा देखकर, अपने एक साथी से पूछा, 'यह अपने खेडे मे कौन आया है ?'

यह कुटडो (गोत्र) का भाणेज है' उसे जवाब मिला

'तब तो यह हमारा शत्रु है यह तो अच्छा ही हुआ कि शत्रु अपने घर मे ही आ मरा !' यह कहकर गागजी भील ने धनुष का निशाना डु गरिया की ओर साधा और तीर छोड दिया निशाना बिल्कुल सही लगा डु गरिया ने वही दम तोड दिया !

००

मगल्या भील राजा बना

बरसो पहले देवगढ गाव के चारो ओर बडा भयकर जगल था उसमे ■ राक्षस रहते थे वे बहुत बलवान और क्रूर थे ये सभी राक्षस देवगढ मे रहने वाले भीलो को बहुत सताते थे, उन्हे तरह-तरह से परेशान करते थे भीलो से कष्ट सहा न जाता था

आखिर तग आकर कुछ भील अपने पूज्य वृद्ध गमेती (मुखिया) के पास गए और उन्हे सारी कहानी कह सुनाई तब वृद्ध गमेती ने कहा परिया के दूत से यह बात सुनने मे आई है कि जो सबसे वीर होगा, परियो के देश म मे एक परी आकर सफेद रग का पख उसके मुकुट म लगा देगी वही वीर अपनी भील-जाति को राक्षसो स बचाकर, उन्नति के शिखर पर पहुचाएगा !'

ग्रब देवगढ के भील इस बात की राह देखने लगे कि वह ग्रादमी ग्राएगा ग्रौर ग्रपनी जाति को राक्षसो से बचाएगा

दो मास बीते

चार मास बीते

एक साल बीत गया लेकिन ऐसा कोई बहादुर उनकी नजरो मे नही ग्राया ग्रब देवगढ के कई भील स्त्री पुरुष गाव छोडकर चल दिए राक्षसो का उनको बडा भारी डर था

उस समय देवगढ म एक बूढा ग्रादमी रहता था उसके एक लडका था—मगल्या भील ! वह मगलवार के दिन पैदा हुग्रा था इसलिए मा-बाप ने उसका नाम मगल्या रख दिया था हनुमानजी का वह परम भक्त था

एक दिन मगल्या जगल म शिकार करने चला चलते चलते वह थक गया ग्रौर पीपल के पेड के नीचे लेट गया ग्रभी वह कुछ देर लेटा ही था कि उसे एक भारी ग्रावाज सुनाई दी वह चौंककर जाग उठा उसने एक खूबसूरत परी को पास म खडे हुए देखा तो वह तुरत उसके पांवो म गिर गया

परी ने मगल्या को उठाया ग्रौर एक सफद रग का पख उसके मुकुट मे लगा दिया फिर वह बोली यह पख तुम्हारी भील जाति के बचाव के लिए है इससे तुम सार गाव को उन्नति के शिखर पर पहुचा सकते हो ! इसके साथ मैं तीन चीजें ग्रौर देती हू पहली चीज तो यह एक जाल है दूसरा यह एक बोरा है ग्रौर तीसरी चीज यह एक चिलम है जाल म बडा जादू है तुम राक्षस के साथ दौड की बाजी लगाना ग्रौर यह शत लगाना कि जो इस दौड म हार जाए वह ग्रपना सिर कटवा ले जब वह दौडने लगे, तब यह जाल उस राक्षस पर फैंक देना जिससे वह इस जाल मे फस जाएगा ग्रौर ग्रागे नही बढ सकेगा इस जाल को वह देख भी नही सकेगा !

ग्रब इस बोरे का हाल सुनो—इस बोरे म भी करामात है तुम इस बोरे म छिप जाग्रोगे तो राक्षस तुम्हे नही देख सकेगा ग्रौर भी बहुत सी चीजें इसम एसी हैं जो समय पर तुम्हार काम ग्राएगी !

'तीसरी चीज यह चिलम है इसमे सुरती डालकर जलाना ग्रौर इसको पीना धुए की जगह इसमे से सफेद रग के पक्षी निकलेंगे वे तुम्हे राक्षसो के घर का रास्ता बताएगे मेरी यह सब बातें ध्यान म रखना तुम्हारी विजय होगी ।'

इतना कहकर परी ग्रन्तर्ध्यान हो गई !

मगल्या ग्रपन घर लौट ग्राया ग्रौर उसने सारी बातें ग्रपने बूढे पिता से कही पिता बडे खुश हुए ग्रौर मगल्या की किस्मत की सराहना करने लगे

सब लोग राक्षस के पास सफेद पक्ष देखकर, कहने लगे कि यही वह वीर है सभी भील उसका स्वागत करने लगे इतने मे मगल्या भी वहा आ पहुचा उसने गाव वालो से कहा, 'यह राक्षस है।'

यह सुनकर सभी भील मिलकर, मगल्या को मारने लगे. इतने में एक बूढा भील बोला कि क्यो न दोनो की परीक्षा ले ली जाए

यह बात तय हो गई उसमे से एक वृद्ध ने आकर राक्षस को पत्थर दिया और कहा, 'तुम पत्थर का कुत्ता बना दो और पेड की डाली मे से नेवला बना दो

राक्षस को मत्रो का ज्ञान था इसलिए उसने कुत्ता और नेवला बना दिया जब मगल्या से उन लोगो न कहा, तो उसने अपने जादू के बोरे मे से एक पत्थर और एक डाली निकाली और उन्हे कुत्ता और नेवला बना दिया. यह देखकर सभी विस्मय में पड गए।

आखिर एक बूढा भील बोला, 'मैने सुना है कि जिसको हमारा राजा नियुक्त किया जाएगा, उसके पास एक ऐसी चिलम है कि जब वह जलती है, तो उसमे से सफेद रग के पक्षी निकलते हैं।'

यह सुनकर भीलो ने दोनो को अपनी-अपनी चिलम जलाने के लिए कहा.

जब मगल्या ने चिलम जलाई, तो अदर से सफेद रग के पक्षी निकलने लगे. और राक्षस को चोच मारने लगे सभी समझ गए कि देवगढ के भीलो को उन्नति के शिखर पर ले जाने वाला वीर मगल्या ही है।

सबने मिलकर राक्षस को मार डाला और मगल्या को अपना राजा बनाया मगल्या अपने पिता के साथ आराम से रहने लगा और उसने कई वर्षों तक देवगढ़ पर ईमानदारी से राज किया

○ ○

पीटन डंडा

भीमा भील पाडलिया गाव में रहता था वह बडा आलसी था अपने आलसपन के कारण ही उसे एक वक्त का भोजन भी भरपेट नही मिल पाता था. भगवान शकर का वह भक्त था

भीमा की पत्नी अक्सर उसे ताने देती रहती थी लेकिन मेहनत करने से वह घबराता था. पत्नी की बातें इस कान से सुनता और दूसरे कान से निकाल देता बेचारी वही एक बनिए के खेत मे मजदूरी करके अपना और पति का पेट पालती थी

एक दिन वह बीमार हो गई भीमा परेशान हो गया—जब तक यह ठीक न होगी, तब तक भूखा ही रहना पडेगा. तीन दिन बीत गए. आखिर भूख से परेशान होकर, उसने पत्नी से कहा, 'मैं अब काम करूगा. मेहनत करूगा मजदूरी करूगा।'

मगल्या ने सुरती भरकर चिलम जलाई, तो सचमुच धुए की जगह उसमे से सफेद पक्षी निकलने लगे वह उन सफेद पक्षियो के पीछे जाने लगा बहुत दूर जाने पर वह सब पक्षी रुक गए मगल्या भी वहा जाकर रुक गया

मगल्या ने राक्षसो के घर का दरवाजा खटखटाया

दरवाजा खटखटाते ही अदर से एक राक्षस बाहर निकला और कहने लगा, 'तुमने इस दरवाजे को क्यो खटखटाया ?'

मगल्या बोला, 'मैं तुम्हारे साथ दौड की बाजी लगाने आया हू'

'हम बिना शर्त किए नही दौडते !' राक्षस ने कहा

'शर्त यह है कि जो हारे, वह अपना सिर कटवा दे !' मगल्या ने कहा

राक्षस ने इस शर्त को यह सोचकर मजूर कर लिया कि उसे मनुष्य का मास खाने को मिलेगा

मगल्या और राक्षस दौडे लेकिन राक्षस के आगे मगल्या की क्या चल सकती थी राक्षस दौडता-दौडता आगे निकल गया मगल्या ने तुरन्त उस पर जाल उछालकर फैक दिया

राक्षस जाल मे फस गया लेकिन उसे जाल दिखाई नही दिया अब मगल्या दौड मे आगे निकल गया उसने शर्त जीत ली, उसने राक्षस का सिर काट लिया

पाचो राक्षसो के साथ मगल्या ने इसी प्रकार की शर्त रखी और सभी राक्षस पहले राक्षस की तरह हार गए

अब छटे राक्षस की बारी आई जो उन राक्षसो का सरदार था मगल्या के साथ वह दौडा और दौड मे मगल्या से आगे निकल गया ज्योही मगल्या राक्षस पर जाल डालने लगा, पीछे से आवाज आई—मगल्या ! मगल्या !, आवाज सुनकर मगल्या ने पीछे देखा, तो कोई नही था

वह फिर राक्षस पर जाल डालने लगा, लेकिन इस बार भी पहले की तरह आवाज सुनी वह फिर रुक गया उसने पीछे की ओर देखा, तो कोई नही था यह सब राक्षस की चालाकी थी इतनी देर मे वह दौडकर आगे निकल गया राक्षस ने शर्त जीत ली अब वह मगल्या की ओर दौडा

मगल्या ने राक्षस को अपनी ओर आते देखा, तो वह तत्काल बोरे मे छिप गया राक्षस मगल्या को न देखकर बडे आश्चर्य म पड गया ! लेकिन इस बीच मगल्या ने एक बडी भारी भूल कर दी उसके पास जो सफेद रगवाला पख था, वह उसके मुकुट मे रह गया था और वह मुकुट नीचे गिर गया था राक्षस उसे उठाकर गाव की ओर चल दिया !

गाव वालो को इतना मालूम था कि कोई सफेद पख लगाया हुआ बहादुर हमारी सारी भील जाति को आगे बढाएगा

सब लोग राक्षस के पास सफेद पख देखकर, कहने लगे कि यही वह वीर है सभी भील उसका स्वागत करने लगे इतने मे मगल्या भी वहा आ पहुचा उसने गाव वालो से कहा, 'यह राक्षस है !'

यह सुनकर सभी भील मिलकर, मगल्या को मारने लगे. इतने मे एक बूढा भील बोला कि क्यो न दोनो की परीक्षा ले ली जाए

यह बात तय हो गई उसम म एक वृद्ध ने आकर राक्षस को पत्थर दिया और कहा, 'तुम पत्थर का कुत्ता बना दो और पेड की डाली म से नेवला बना दो

राक्षस को मत्रो का ज्ञान था इसलिए उसने कुत्ता और नेवला बना दिया जब मगल्या से उन लोगो न कहा, तो उसन अपने जादू के बोरे मे से एक पत्थर और एक डाली निकाली और उन्हें कुत्ता और नेवला बना दिया. यह देखकर सभी विस्मय म पड गए !

आखिर एक बूढा भील बोला 'मैंने सुना है कि जिसको हमारा राजा नियुक्त किया जाएगा, उसके पास एक ऐसी चिलम है कि जब वह जलती है, तो उसमे से सफेद रग के पक्षी निकलते हैं !'

यह सुनकर भीलो ने दोनो को अपनी-अपनी चिलम जलाने के लिए कहा

जब मगल्या ने चिलम जलाई, तो अदर से सफेद रग के पक्षी निकलने लगे और राक्षस को चोच मारने लगे सभी समझ गए कि देवगढ के भीलो को उन्नति के शिखर पर ल जाने वाला वीर मगल्या ही है !

सबने मिलकर राक्षस को मार डाला और मगल्या को अपना राजा बनाया मगल्या अपने पिता के साथ आराम से रहने लगा और उसने कई वर्षों तक देवगढ पर इमानदारी स राज किया

० ०

पोटन डंडा

भीमा भील पाडलिया गाव मे रहता था वह बडा आलसी था अपने आलसपन के कारण ही उसे एक वक्त का भोजन भी भरपेट नही मिल पाता था भगवान शकर का वह भक्त था

भीमा की पत्नी अक्सर उसे ताने देती रहती थी लेकिन मेहनत करने से वह घबराता था पत्नी की बातें इस कान से सुनता और दूसरे कान से निकाल देता बेचारी वही एक बनिए के खेत म मजदूरी करके अपना और पति का पेट पालती थी

एक दिन वह बीमार हो गई भीमा परेशान हो गया—जब तक यह ठीक न होगी, तब तक भूखा ही रहना पडेगा तीन दिन बीत गए आखिर भूख से परेशान होकर, उसने पत्नी से कहा, 'मैं अब काम करू गा मेहनत करू गा मजदूरी करू गा !'

यह सुनकर भीमा की पत्नी की आखों में आंसू आ गए मगर ये आंसू खुशी के आसू थे बीमार चेहरे पर प्रसन्नता लाकर वह बोली, 'आज तुमने काम की बात की है तुम शहर जाने की तैयारी करो मैं तुम्हारे लिए रोटियां बना देती हू'

भीमा जाने की तैयारी करने लगा और उसकी पत्नी बीमार होते हुए भी चूल्हे की ओर बढ गई थोडी देर मे रोटिया बन गई, तो उसने पोटली मे बाध दी भीमा काम पर जाने के लिए तैयार हो चुका था पोटली लेकर वह घर से बाहर आ गया उसकी पत्नी की आखें गीली हो गई।

भीमा भील चलता ही रहा जब वह थक गया, तब एक कुए के पास आकर रुक गया उसके पेट मे चूहे दौड रहे थे उसने तुरन्त पोटली खोली पर, पोटली की रोटिया देखकर, उसने अपना माथा ठोक लिया पोटली मे लकडी की राख की दो रोटिया थी राख की रोटी भला कौन खा सकता है ? भूखा भीमा ललचाई नजरो से इधर-उधर ताकने लगा शायद कही से कुछ खाने को मिल जाए लेकिन वहा जगली पेड-पत्तो के अलावा कुछ नही था आखिर उसने तय किया कि वह घर लौट जाए भूखे पेट तो वह मजदूरी पर नही जा सकता भगवान शकर का नाम लेकर वह अपनी किस्मत को कोसने लगा।

भीमा भील की करुण पुकार सुनकर, भगवान शकर प्रगट हुए. उनके साथ पार्वती भी थी भीमा भील की हालत देखकर, पार्वती ने शकर से कहा, 'देखो यह भील कितना दुखी है ! लगता है, कई दिनो से इसने कुछ खाया भी नही है इसका दुख दूर कीजिए'

भगवान शकर को भी अपने भक्त पर दया आ गई वह भीमा के पास आए और उसे एक कमडल देते हुए बोले, 'यह जादू का कमडल है इससे जो भी चीज तुम मागोगे, मिल जाएगा' यह कहकर शकर भगवान अन्तर्ध्यान हो गए

अब तो भीमा भील की खुशी का ठिकाना न था कमडल लेकर वह घर लौट आया उसे देखकर, पत्नी ने अपना सिर पीट लिया झल्लाकर बोली, 'वापस क्यो आ गए ?'

'कमाई करने गया था कमाकर लाया हू !' भीमा ने सहजता से कहा

'इतनी-सी देर म तुम क्या कमा लाए ?'

उत्तर मे भीमा भील ने पत्नी को कमडल दिखा दिया उसे और गुस्सा आ गया, 'इस कमडल से क्या तुम्हारा पेट भर जाएगा ?...'

भीमा मौन रहा आख मीचकर, मन ही मन उसने भगवान शकर का ध्यान किया और कमडल से अपनी पत्नी के स्वस्थ होने की कामना की दूसरे ही क्षण उसकी

पत्नी स्वस्थ होकर उठ बैठी । उसकी समझ मे कुछ भी नही आया आश्चर्य मे पड गई कि एकाएक उसकी बीमारी दूर कैसे हो गई ?

अब भीमा ने पेट पूजा के लिए कमडल से बढिया भोजन की माग की अगले ही क्षण, चादी की थाली मे सजकर, मिठाइया और खाने-पीने की कई सामग्री उसके सामने आ गई देखकर, उनकी आखें फटी की फटी रह गई अब भीमा ने पत्नी को सारी बात बता दी फिर दोनो ने भरपेट भोजन किया

ठाट बाट से भीमा और उसकी पत्नी के दिन बीतने लगे किसी बात की उन्हे कमी नही थी धीरे-धीरे कमडल की बात सारे गाव म फैल गई गाव के ठाकुर को पता चला, तो वह भीमा के घर जा पहुचा उसने भीमा को खूब पीटा और कमडल छीनकर अपनी हवेली म लौट आया

भीमा भील दु खी हो गया अगले दिन वह फिर कुए के पास पहुचा और सच्चे मन से भगवान शकर को याद करने लगा शकर पुन प्रगट हुए भीमा ने दोनो हाथ जोडकर, उन्हे सारी बात बताते हुए कहा 'मैं उस ठाकुर से बदला लेना चाहता हू जिस तरह उसने मुझे पीटकर कमडल छीना है उसी तरह मैं भी उसे पीटकर अपना कमडल वापस लेना चाहता हू ।'

भगवान शकर न एक बार फिर अपने भक्त भीमा भील पर कृपा की और उसे एक जादू का डडा देते हुए कहा, 'यह पीटन डडा है तू जिसे पीटने के लिए इस डडे को आदेश देगा, यह उसकी खूब मरम्मत कर देगा ।'

भीमा का चेहरा खिल उठा वह भगवान शकर से आभार व्यक्त करता, इससे पहले वे अन्तर्ध्यान हो गए

खुशी-खुशी भीमा ने पीटन डडा उठाया और ठाकुर की हवेली की ओर बढ गया हवेली तक वह पहुच गया लेकिन द्वारपाल ने उसे भीतर जाने से मना कर दिया बस फिर क्या था भीमा ने तत्काल पीटन डडा को आदेश दिया 'इस द्वारपाल को ठिकाने लगा दे !' सिर्फ कहने की देर थी पीटन डडा द्वारपाल को पीटने लगा द्वारपाल चिल्लाया, 'मुझे छोड दो मेरे बाप ! तुम अन्दर चले जाओ '

भीमा ने पीटन डडा उठाया और हवेली के भीतर घुस गया ठाकुर ने उसे देखा, तो आखो म अगारे भरकर चिल्लाया, 'तुम यहा क्यो आए ? तुम्हे भीतर किसने आने दिया ?'

भीमा मुस्कराया, मैं अपना कमडल लेने आया हू मुझे तुम्हारे द्वारपाल ने भीतर आने की इजाजत दी है '

ठाकुर का गुस्सा और बढ गया उसने ताली पीटकर अपने आदमियो को बुलवाया लेकिन भीमा ने पीटन डडा को आदेश देकर, सबकी जमकर मरम्मत करवा दी

सभी भाग खडे हुए यह देखकर लालची ठाकुर के होश उड गए लेकिन फिर भी उसने कमडल देने से इकार कर दिया

अब भीमा को गुस्सा आ गया उसने पीटन डडा से कहा, 'इस ठाकुर की इतनी पिटाई कर दे कि यह ठाकुर फिर कभी किसी गरीब को नही सताए !'

पीटन डडा हवा मे लहराया और सीधा ठाकुर की पीठ पर आकर जोर से गिरा ठाकुर के मुह से चीख निकल गई—हाय, मैं मरा. लेकिन पीटन डडा ने ठाकुर को मार-मारकर अधमरा करके ही छोडा ठाकुर ने माफी मागकर, भीमा को कमडल लौटा दिया

और भीमा भील पीटन डडा को हाथ मे लेकर सीधा अपने घर लौट आया घर म फिर से प्रसन्नता की लहर दौड गई।

००

लम्बी नाक वाली रानी

आसपुर गाव मे नत्थू नाम का मीणा रहता था उसके तीन बेटे थे—मोट्या, छोट्या और खोट्या

एक दिन नत्थू ने अपने तीनो बेटो को बुलाया और कहा, 'मैं अब बूढा हो गया हू मेरे दिन अब पूरे हो गए हैं'

यह सुनकर तीनो बेटे रोने लगे, तो नत्थू ने कहा, 'तुम तीनो मेरी चिंता मत करो भगवान के घर एक न एक दिन जाना ही होता है मैंने तुम तीनो के लिए काली पेटी मे चीजें सहेज कर रखी हैं मैंने स्वय उनका कभी उपयोग नहीं किया, पर तुम तीनो भाई उन चीजो को काम मे लेना'

छोट्या तुरन्त काली पेटी उठा लाया आज तक उस पेटी को किसी ने भी नही खोला था नत्थू ने पेटी खोली और बोला, 'मेरे पास जादू की एक थैली है इस थैली से जो मागोगे, वही मिलेगा' उसने थैली खोट्या को दे दी

दूसरी बार नत्थू ने उस पेटी मे से एक बासुरी निकाली उसे छोट्या को देते हुए कहा, 'यह जादू की बासुरी है यह जिसके पास रहेगी, उसका किसी का डर नही रहेगा इसे बजाने पर बहुत-से सशस्त्र सिपाही उसे बचाने के लिए आ जाया करेंगे'

और फिर मोट्या को एक टोपी देते हुए कहा, 'यह जादू की टोपी है, इसको जो आदमी पहनेगा, उसे कोई नहीं देख सकेगा !' इस तरह तीनो बेटो को एक-एक भेंट देकर नत्थू मीणा ने हमेशा के लिए आखें मूद ली

एक दिन खोट्या थैली लेकर एक शहर मे पहुचा रात होने पर वह शहर के बाहर एक पेड के नीचे सो गया जहा वह सो रहा था, उसके सामने रानी का महल था महल बहुत बडा था. उसमे एक बडी-सी खिडकी थी खिडकी के पास महल की रानी खडी थी. रानी ने खोट्या को पेड के नीचे सोते देखा

अभी खोट्या लेटा ही था कि एक फल बेचने वाला उधर से आ निकला खोट्या को भूख लग रही थी. उसने थैली खोलकर, एक मोहर निकाली और फल वाले को देकर कहा, 'एक पाव अगूर और आम दे दो.' खोट्या ने पेट भरकर फल खाए.

रानी ने खिडकी से खोट्या की थैली को देख लिया.

वह नीचे उतर कर, खोट्या के पास आकर बोली, 'तुम वास्तव मे ढोर हो ! ... एक पाव फल के लिए एक मोहर दे देना ढोरो का ही तो काम है ! मैं यहा की रानी हू फिर भी ऐसा नही कर सकती !'

खोट्या सीधा-सादा था. रानी चतुर और लोभी थी. उसने खोट्या को फुसलाकर थैली माग ली. फिर वह महल मे चली गई. यह देखकर खोट्या घबरा गया और निराश होकर घर लौट आया

घर पर खोट्या ने अपने भाइयो को सारा हाल बताया तब छोट्या ने कहा, 'बासुरी मेरी तुम ले जाओ और उस रानी को मार भगाओ'

यह सुनकर खोट्या बडा खुश हुआ. दूसरे दिन उसने छोट्या से बासुरी लेकर रानी के महल की राह ली. उसने कहा, 'रानी, तुम मुझे मेरी थैली दे दो. मेरा कहना मान जाओ मैं भारी सेना लाया हू तुमसे लडने आया हू !'

खोट्या की बोली पहचान कर रानी महल से बाहर निकल आई वह खोट्या के पास आकर बोली, 'तुम मुझसे लडने आए हो ! तुम भारी सेना लाए हो ! जरा मुझे अपनी सेना तो दिखाओ ?'

रानी की बातें सुनकर खोट्या ने कहा, 'अभी मेरे पास सेना नही है. देखो, मैं अभी बासुरी बजाता हू और अपनी सेना बुलाता हू.'

'अभी नही, थोडी देर और ठहर जाओ. मुझे भी अपनी सेना बुला लेने दो.' रानी ने बडी चालाकी से कहा और उससे बासुरी छीनकर बजा दी !

बासुरी बजते ही एक सेना आ खडी हुई. उसके सैनिको ने रानी से कहा, 'क्या आज्ञा है ?'

'इस लड़के को यहा से भगा दो फिर तुम लोग यहा से चले जाओ'

रानी की बात सुनते ही एक सैनिक ने खोट्या को बाहर भगा दिया. और वह आखो से ओझल हो गया.

खोट्या घर लौट आया और अपने बडे भाई मोट्या से बोला, 'वह रानी बडी चतुर है यदि आप मुझे अपनी जादू की टोपी दे दें, तो मैं छोट्या भाई की बासुरी और अपनी थैली उससे छीन लाऊ और फिर कभी उसका नाम न लू '

बडे भाई ने जादू की टोपी खोट्या को दे दी खोट्या उसे लेकर फिर रानी के पास पहुचा रानी उस समय खाना खा रही थी खोट्या ने उसके सामने से थाली खीच ली यह देखकर रानी आश्चर्य मे पड गई उसने इधर-उधर देखा, मगर कोई नजर नही आया रानी ने कहा, 'कौन महल म आया है ? किसने शोर मचाया है ?'

खोट्या ने देखा—रानी डर के मारे थर थर काप रही है

उसने कहा, 'मैं हू खोट्या भील ! तुम मुझे नही देख सकती अब तुम मेरी थैली दे दो वरना मै तुम्हारा जीना हराम कर दू गा !'

रानी ने खोट्या की आवाज पहचान कर, फिर उसे ठगने की तरकीब सोची उसने अपने नौकर से कहा, 'यह लडका बडा शरारती है इसे थैली और बासुरी लौटा दो वरना यह हमको सुख से न रहने देगा'

रानी की आज्ञा मानकर नौकर बासुरी और थैली उठा लाया यह देखकर, खोट्या ने अपनी टोपी हटा ली और रानी के आगे खडा हो गया रानी ने तुरन्त उसके हाथ से टोपी छीन ली और उसे महल से बाहर कर दिया

इस बार बेचारे खोट्या को घर लौटने की हिम्मत नही हुई वह उदास मन से एक जगल की ओर बढ गया रात होते होते वह उस जगल मे पहुच गया और एक पेड पर चढ कर सो गया सुबह होने पर वह उठा उसे भूख लग रही थी सामने की झाडी मे लाल बेर लग रहे थे उसने उन्हे तोडने क लिए हाथ बढाया, तो झाडी से एक बौना बाहर निकल आया उसने खोट्या से कहा, 'लाल बेर मत खाना बेटा'

'क्यो ?' खोट्या ने पूछा

यह जादू की झाडी है जो आदमी इस झाडी के लाल बेर खा लेता है, उसकी नाक बहुत लम्बी हो जाती है' बौना बोला

बौना की बातें सुनते ही खोट्या ने उसके पास आकर अपना सब हाल कह दिया

बौने ने कहा, 'एक टोकरी मे तुम इस झाडी के बेर भरकर, रानी के पास ले जाओ और उसे किसी बहाने खिला दो'

खोट्या ने ऐसा ही किया एक टोकरी म बेर भरकर उसने महल की राह ली थोडी दूर पहुचकर, उसने अपना भेष बदल दिया, और रानी के पास पहुचा खटटे-मीठे लाल लाल बेर देखकर रानी के मुह म पानी भर आया उसने तुरन्त सारे बेर खरीद लिए और एक-एक बेर उठाकर खाने लगी अब क्या था ? बेर खात हुए उसे कुछ देर भी नही हुई थी कि उसकी नाक बढने लगी और बढते बढते जमीन पर लटकने लगी

यह देखकर खोट्या ने रानी से कहा, 'रूपाली रानी, जरा दर्पण मे अपना चेहरा तो देखो कितना सुन्दर लग रहा है . ! अब तुम मेरी थैली, बासुरी और टोपी दे दो और वादा करो कि तुम फिर कभी किसी की चीज जबरदस्ती छीनकर नही लोगी !'

रानी अपनी लम्बी नाक पर बडी लज्जित हुई वह डायन जैसी लग रही थी उसने चुपचाप खोट्या को उसकी चीजें लौटा दी लबी नाक ने उसका सारा घमड चूर-चूर कर दिया था.

जादू की थैली, बासुरी और टोपी लेकर खोट्या खुशी-खुशी अपने घर लौट आया ■

आज भी भील-मीणा मे यह मान्यता है कि जिस महिला की नाक लम्बी होती है वह घमडी और लालची स्वभाव की होती है !

○ ○

अपमान का बदला

वेस्ता नाम का एक भील था उसके पास बहुत सारी गाए थी उसके दो चचेरे भाई भी थे

एक दिन वेस्ता की पत्नी बदली गायो को लेकर जगल मे चराने गई वह दिन भर गायो के साथ-साथ जगल म घूमती रही घूमते-घूमते वह पास के गाव तक आ गई यह गाव काफी बडा था और इसमे एक ठाकुर भी रहता था ठाकुर बुरे स्वभाव का था उसका चाल-चलन ठीक नहीं था

ठाकुर की हवेली किसी राजा के किले से कम नही थी हवेली का सिंह द्वार मजबूत लोहे का बना हुआ था जिस पर तीखी पतरिया लगी हुई थी और भी छोटे-बडे दरवाजे थे

वेस्ता की पत्नी बदली अपनी गाए चराते-चराते ठाकुर के गाव के पास पहुच गई अचानक शोर सुनकर गाए भागने लगी एक बूढी गाय वही रह गई वह भाग न सकती थी बदली ने देखा—सामने से कुछ व्यक्ति आ रहे हैं, वह भागने के लिए मुडती, इससे पहले तो ठाकुर और उसके साथियो ने घेर लिया बदली घबरा गई 'कौन हो तुम लोग ?'

'मैं ठाकुर शमशेरसिंह हू तुम्हे ले जाने आया हू मैं तुम्हे अपने घर की रानी बनाऊ गा' ठाकुर ने गरजकर कहा

बदली इतन आदमियो का मुकाबला अकेली कैसे कर सकती थी ? ठाकुर और उसके साथी उसे पकडकर ले गए

बूढ़ी गाय ने बदली को उठाकर ले जाते हुए देखा, तो उसकी आखो मे आसू आ गए, फिर वह चुपचाप बदली के घर की ओर बढ गई बदली के पति को उसने सारा हाल बता दिया

वेस्ता ने यह बात अपने पिता को बताई पिता ने सारे गाव को यह समाचार दिया गाव के सभी भीलो को गमेती ने ढोल बजवाकर, पचायत मे इकट्ठा होने की सूचना दी थोडी ही देर मे सभी भील एक स्थान पर इकट्ठे हो गए, वहा जाजम बिछाई गई परम्परा के अनुसार सबको दारू पिलाया गया फिर गमेती ने कहा, 'भाइयो, वेस्ता की पत्नी को ठाकुर शमशेरसिह उठाकर ले गया है यह हमारे पाल (गाव) की इज्जत का प्रश्न है वेस्ता के जीवित रहते उसकी पत्नी को पकड लेना हमारा अपमान है अब हम सबको लडने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।'

गमेती के कहने की देर थी कुछ ही देर मे सभी भील हथियारो से सज्जित हो गए और ठाकुर के गाव की ओर बढ गए उन सब की आखो से अगारे बरस रहे थे

गाव नजदीक आ गया, तो उन्होने योजना बनाई कि पहले बदली को ले आते हैं फिर हम इस हवेली को जलाकर होली खेलेंगे।

हुआ भी ऐसा ही स्त्री का भेष बनाकर वेस्ता हवेली मे घुस गया इधर-उधर घूमता हुआ वह एक कमरे मे पहुचा उसने देखा—बदली रस्सी मे बधी हुई है और रो-रोकर उसका हाल बुरा हो रहा है वहा उस समय कोई नही था उसने तुरन्त रस्सी खोली और बडी चतुराई से दोनो हवेली के बाहर आ गए

बदली के आते ही सभी भील हवेली के सामने आ गए एक ने ठाकुर की खिडकी पर गोली मारी और बाकी सबने हवेली म आग लगा दी ठाकुर की हवेली से धुआ निकलना शुरू हो गया यह देखकर सबने होली खेलना आरम्भ कर दिया ढोल-बाजे बजने लगे, हवेली के भीतर शोर मचने लगा जब पूरी हवेली जलकर राख हो गई, तो सभी भील अपने गाव लौट आए इस सफलता की खुशी म पाल के सभी लोगो को दावत दी गई।

० ०

राजकुमारी और 'काला' भील

डूगरपुर के पास मे 'मातु' नामक गाव था वहा 'काला' नाम का भील मुखिया था

डूगरपुर मे एक राजकुमारी का राज्य था वह बडे ठाट-बाट से रहती थी इस-लिए एक दिन उसके राज्य का सारा कोष खाली हो गया

इस पर सभी चिंता मे पड गए राजकुमारी ने एक बैठक का आयोजन किया जिसमे सभी मत्रियो और सरदारो ने भाग लिया

बैठक शुरू हुई राजकुमारी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा, 'राज-कोष खाली हो गया है इसलिए हमे कुछ करना चाहिए डूगरपुर मे बडी-बडी पालें हैं उन पर इस समय 'टीली वराड' (विवाह के समय का विशेष कर) लागू करना चाहिए इसके अलावा 'धुआ वराड' (जगलात का कर) भी लगाए जाने चाहिए इससे हम अच्छी आमदानी हो जाएगी और कोष भर जाएगा,'

सभी राजकुमारी की इस बात पर सहमत हुए सभा विसर्जित हुई

राजकुमारी ने लालू सिपाही को आज्ञा दी, 'तुम तुरत जाओ और काला गमेती को बुलाकर ले आओ।'

राजकुमारी की आज्ञा सुनकर लालू सिपाही तुरन्त तैयार होकर चल पड़ा और मातु गाव मे जा पहुचा वह काला गमेती के झोपड़े के पास पहुच गया काला गमेती उस समय खाट पर बैठा हुआ हुक्का गुडगुडा रहा था

लालू सिपाही ने काला गमेती से कहा 'गमेतीजी, आपको राजकुमारीजी ने बुलवाया है'

यह सुनकर गमेती बोला, 'मैं कल-परसो तक आ जाऊगा अभी मैं आराम कर रहा हू'

लालू सिपाही झल्ला उठा, 'गमेतीजी, जरा सोच-समझकर जवाब दो राजकुमारी का गुस्सा आप नही जानते है '

काम क्या है उनको ?' काला ने पूछा

'राजकुमारीजी के कोष खाली हो गए हैं और 'टीली वराड' लेने के लिए आपको बुलाया है।'

यह सुनकर काला गमेती तुरन्त उठकर खडा हो गया और तैयार होकर सिपाही के साथ राजकुमारी के महल जा पहुचा

राजकुमारी ने काला गमेती को 'वराड' जमा कराने के लिए कहा, तो वह बोला, 'मै अकेला वराड स्वीकार नही कर सकता और भी तो बडी बडी पालें हैं'

काला के इकार करने पर राजकुमारी ने उसे चार-पाच सिपाही की निगरानी मे कैद कर लिया कुछ दिन वह कैद म रहा फिर किसी तरह उसने राजकुमारी से घर जाने की आज्ञा ले ली

गाव आकर उसने 'कारी' ढोल बजवाया और चोरे (पचायत के स्थान) पर जाजम बिछवाई सब लोग आकर यथा स्थान बैठ गए, तो अमल (अफीम) बटवाई गई फिर नशे म मस्त होकर, सभी आपस मे बातें करने लगे.

काला गमेती ने कहा, 'भाइयो, मेरी बात ध्यान से सुनो, मुझे डूंगरपुर की राजकुमारी ने कुछ दिन के लिए कैद कर लिया था और वराड जमा करने के लिए कहा गया था. क्या आप सब वराड भरने के लिए तैयार हैं ?'

'हम मर मिटेंगे, पर वराड नही देंगे !' भीलो का सामूहिक स्वर गूंज उठा

'ठीक है फिर सब पालो को इकट्ठा करो सबको सूचना भेजो' काला गमेती ने कहा.

कुछ ही देर मे पादेर, मडेव, पोकर आदि गावो मे सूचना भेज दी गई

सब पालें एकत्रित हो गई फिर से विचार-विमर्श होने लगा लेकिन तभी सिपाही लोग भी वहा आ गए उनमे आधे घुडसवार थे और आधे पैदल सिपाहियो ने वराड की माग की. भीलो ने इकार कर दिया आपस मे बहस हुई बात बढ गई सिपाही झगडे पर उतारू हो गए

उसी समय 'वारी' ढोल बजाया गया. पालें युद्ध के लिए तैयार हो गई शोर मच गया, सिपाहियो को बुरी तरह मारा गया लालू सिपाही को भी जान से मार दिया गया

काला गमेती और अन्य भील सिह की भाति गर्जन कर रहे थे, 'यह है, तुम्हारा टीली वराड ! और यह है, धुआ वराड !

भील जीत गए राजकुमारी के सारे सिपाही मारे गए

० ०

इस लोककथा पर भीलो मे एक लोकगीत भी प्रचलित है मुखडा इस प्रकार है—

डूंगरपुर ने थोक माँ मातु गामडूँ काला गमेती
डूंगरपुर तें केनु राज वाजे
डूंगरपुर माँ तें बाहीराजु नु राज
बाही राज ना कोठा खाली पडिया
बादल मेला ते नीली पीली जाजम
बादल मेला आडी ने कट डोडी....

० ०

शकर की सवारी बैल क्यों ?

भगवान शकर को अपने लिए एक सवारी की तलाश थी एक दिन वे घने वन में गए और वन के सभी पशुओ को इकट्ठा किया फिर सबको अपने मन की बात बताई बस, भगवान शकर के कहने की देर थी, सभी पशु उनकी सवारी बनने

की इच्छा प्रकट करने लगे

सिंह ने कहा, 'भगवान, मैं वन का राजा हू मेरी सवारी करने से आपको भी गर्व का अनुभव होगा मैं बहुत बलवान हू और किसी से भी नही डरता ।'

हाथी ने कहा, 'मेरी सवारी से आपकी शान बढेगी देखिए, मैं कितना बडा हू ।'

इस तरह वन के सभी पशु भगवान शकर की सवारी बनने के लिए अपनी-अपनी प्रशसा करने लगे भालू, लोमडी, खरगोश, चीता आदि ने अपनी विशेषताए बताई

सबकी बात सुनकर, भगवान शकर ने कहा, 'ठीक है मैं तुम सबकी परीक्षा लूगा, जो मेरी परीक्षा मे सबसे खरा उतरेगा, उसे ही अपनी सवारी बनाऊगा'

'बताइए, आप हमारी कौन-सी परीक्षा लेना चाहते हैं ?' सभी पशु एक साथ बोल उठे

'अभी नही, बाद मे बताऊगा,' भगवान शकर ने कहा सभी पशु चले गए बैल वही एक बडे पेड की ओट मे खडा था

पार्वती ने शकर से पूछा, 'मुझे तो बताओ, तुम इनकी कैसी परीक्षा लेना चाहते हो ?'

'बारीश के मौसम मे मुझे सूखी लकडियों की जरूरत पडती है जो पशु मुझे सूखी लकडिया ला देगा, उसे ही मैं अपनी सवारी बनाऊगा' शकर ने कहा

बैल ने यह बात सुन ली और धीरे-से वहा से खिसक गया फिर उसने एक किसान से दोस्ती की उसका काम करने लगा और एक दिन जगल से सूखी लकडिया लाकर घर मे भर दी

बरसात का मौसम आया चारो ओर मूसलाधार बारीश होने लगी सारा वन बरसात के पानी से गीला हो गया भगवान शकर को ऐसे मौसम में सूखी लकडियो की जरूरत पडी उन्होंने अपना डमरू बजाया और सब जानवर आकर उनके पास इकट्ठे हो गए

शकर भगवान ने कहा, 'दोस्तो, मुझे आज सूखी लकडियो की जरूरत है सूखी लकडिया लेकर आओ .'

शकर की बात सुनकर, सबको बुरा लगा वे चिल्लाए, 'ऐसी बारीश मे सूखी लकडिया कहा से मिलेंगी ? आपको ऐसी चीजें मागनी चाहिए, जो मिल सकें'

'ठीक है अब मैं समझ गया कि तुममे से कोई भी मेरी सवारी के लायक नही ।'.

शकर की बात पूरी भी नही हुई थी कि सामने से बैल आ गया उसकी पीठ पर

सूखी लकडियो का गट्ठर था, शकर के पास आकर उसने गट्ठर को जमीन पर रख दिया फिर आदर से सिर झुकाकर एक ओर खडा हो गया

सभी पशु यह देख रहे थे मन ही मन बैल की तारीफ करने लगे शकर भगवान उस पर प्रसन्न हुए और प्रेम से उसकी पीठ पर हाथ फेरकर, अपने पास रख लिया सभी पशु मुह लटकाकर, वन म चले गए.

बस, उस दिन से बैल शकर की सवारी बना हुआ है लोग उसकी भी पूजा करते हैं !

० ०

चटोरी चिमी

मालवा के पाल मे एक मीणा-स्त्री रहती थी उसका नाम था—चीमी बडी चटोरी हर वक्त कुछ न कुछ खाती रहती थी उसके सात बच्चे थे सातो के नाम उसने सख्या के आधार पर रखे थे सबसे बडे बच्चे का नाम था—सीन उससे छोटे का छक्क इस तरह उससे छोटो का नाम क्रमश. पाच, चार, तीन, दुई और इक था सातो बच्चे अभी छोटे थे

चीमी के पति का नाम था—चोमा मीणा बडा ही परिश्रमी और भोला जो भी कमाता, चीमी के हाथ मे थमा देता

चीमी बडी चतुर थी जब चोमा घर मे नही होता, वह इस बात का लाभ उठा लेती और घर मे अपनी पसद की चीजें बनाकर भरपेट खा लेती खा-पीकर वह दिन-दिन मोटी होती जा रही थी इसके विपरीत चोमा रात-दिन मेहनत करके दुबला होता जा रहा था उसे तो खाने के लिए घर म हरी मिर्च के साथ मक्का की सूखी रोटी मिलती

चीमी के रोज-रोज माल बनाकर खाने से घर मे तगी आ गई राशन वगैरह खत्म होने लगा खर्च बढ गया चोमा समझ गया कि घर म गरीबी कैसे आ गई ! आखिर उसने चीमी से कह दिया 'चीमी, तुम दिन-प्रतिदिन मुटल्ली होती जा रही हो ! तुम्हारी जबान चटोरी हो गई है मै जब घर म नही होता हू, तुम पकवान बनाकर खाती हो अब यह सब बद कर दो, वरना घर की हालत और बिगड जाएगी

'तुम दो-चार रुपए रोज कमाते हो, फिर कहते हो कि मै चटोरी हू महगाई इतनी बढ गई है कि पैसा सारा समाप्त हो जाता है' चीमी सुबकने लगी आखो मे आसू बहाते हुए आगे बोली 'तुम मुझ पर विश्वास नही करते हो अब मुझसे बात मत करना !'

चोमा मीणा को समझते देर नही लगी कि चीमी मगर के आसू बहा रही है उसने

सोचा—चीमी को रंगे हाथों पकड़ना चाहिए. तभी यह सही रास्ते पर आएगी.

एक दिन चोमा ने चीमी से कहा, 'मुझे मजदूरी के लिए शहर जाना है. कुछ दिन बाद ही लौटूंगा.. तुम बच्चों का ध्यान रखना और फालतू खर्चा मत करना !'

चीमी ने यह सुना, तो बड़ी खुश हो गई—अब तो आराम से खाऊंगी चोमा का डर भी नहीं रहेगा.

चोमा शहर जाने के बजाय अपने झोंपे की छत पर जा बैठा और छत में हो रहे छेद में से सारा नजारा देखने लगा

रात हुई चीमी ने सातों बच्चों की पीठ थपथपाकर सुला दिया फिर दबे पांव रसोईघर में गई—आज जी भरकर मालपुए खाऊंगी वह मालपुए बनाने की तैयारी करने लगी गुड़ गरमकर, आटे का घोल तैयार किया और चूल्हे पर कड़ाही रख दी फिर एक चम्मच में आटे का घोल लेकर, कड़ाही में डाल दिया... शू.. .शूं.... की आवाज हुई और दो मिनट में मालपुआ बनकर तैयार हो गया

लेकिन 'शूं-शूं' की आवाज ने चीमी के सबसे बड़े बच्चे सोत को जगा दिया रसोईघर से आती खुशबू से वह समझ गया कि मां मालपुए बना रही है वह तुरंत उठा और रसोईघर में आ गया, 'मां.. .मां... मैं भी मालपुए खाऊंगा'

चीमी चौंक पड़ी, 'अरे, तू कैसे जाग गया ?'

'मां, शू-शूं की आवाज से मेरी नींद खुल गई'

'अच्छा, तू यह मालपुआ खा ले और जाकर चुपचाप सो जा अपने भाई-बहन को मत जगाना.... हां, बस पिताजी आए, तो उनसे मत कहना कि तूने मालपुआ खाया था....'

चीमी ने जल्दी-जल्दी आठवां मालपुआ तैयार किया वह बड़ी खुश हो रही थी कि यह मालपुआ कितना स्वादिष्ट होगा अभी वह सोच ही रही थी कि चोमा भीतर आ पहुंचा, 'यह मालपुआ तो मैं खाऊंगा !

चोमा को देखते ही चीमी के होश उड़ गए घबराते हुए बोली, 'तुम इतनी जल्दी कैसे आ गए ? तुम तो शहर गए थे, मजदूरी के लिए ?.... हां, बच्चे मालपुए खाने की जिद कर रहे थे, इसलिए मैंने....'

'मजदूरी के लिए गया कौन था ? मैं तो छत पर बैठा सारा नजारा देख रहा था'

'क्या ?' चीमी की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई, 'तुमने सब कुछ देख लिया होगा ?... चोमा, मुझे माफ कर दो ... फिर कभी मैं....'

चीमी बड़ी शर्मिन्दा हुई चोमा ने कहा, 'चीमी, अब तुम्हारे चटोरेपन की यही

रोज है कि तुम मालपूए बनाती जाओ और हम सब खाएंगे तुम एक टुकड़ा भी नहीं चखोगी'

और चोंमा ने सारे बच्चों को जगा दिया चींची रातभर मालपूए बनाती रही चोंमा और बच्चे मज़े से खाते रहे चींची के मुह म पानी आता रहा !

∘ ∘

लोमड़ी और भील में दोस्ती क्यों ?

एक दिन वन का राजा शेर एक भील के पिता को मारकर खा गया भील को पता चला, तो उसे बड़ा दु ख हुआ उसने प्रतिज्ञा की कि वह शेर को मार देगा

भील रोज नदी के किनारे धनुष म तीर चढ़ाकर बैठता और शेर का इन्तजार करता वहां वन के बहुत-से पशु-पक्षी पानी पीने आते थे भील ने किसी को भी पानी पीने नहीं दिया शेर को भी भील की प्रतिज्ञा मालूम थी इसलिए वह गुफा से बाहर भी नहीं निकलता था

एक रोज सन्ध्या के समय एक लोमड़ी भील के पास आई और बोली, 'भाई भील, तुम बहुत गुस्से म मालूम होते हो मुझे बताओ, तुम्हें किस बात का गुस्सा है ? सम्भव है, मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकू ?....'

'लोमड़ी रानी, बात यह है कि शेर ने मेरे पिता को मार दिया है मैं अब शेर को मारना चाहता हू जब तक मैं शेर को नहीं मार दू गा, चैन से नहीं रहूगा'

देखो भाई, शेर को मारना आसान नहीं है वह तो इन दिनों गुफा में ही छिपकर बैठा रहता है मैं कोशिश करूगी कि वह यहां तक आ जाए और तुम उसे मारकर, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो'

तुम मेरा यह काम कर दोगी, तो मैं जिन्दगी भर तुम्हारा आभारी रहू गा'

'सिर्फ आभारी रहने से मुझे क्या लाभ होगा ?' लोमड़ी बोली, बताओ तुम मुझे बदले मे क्या दोगे ?'

'मैं तुम्हें रोज मीठे बेर खिलाऊ गा' भील ने कहा

लोमड़ी खुश हो गई वह शेर की गुफा मे गई और पू छ हिलाते हुए बोली, 'राजा साहब, आप इतने बड़े वन के राजा हैं और एक मामूली भील से डरते हैं ? यह तो बड़ी शर्म की बात है वह भील तो आख का अन्धा है मैंने उसके सामने आपका नाम लिया, तो वह बुरी-बुरी गालियां दे रहा था कह रहा था—शेर तो बड़ा कायर है ! मुझसे डरता है ! .'

लोमड़ी की बात सुनते ही शेर को तो गुस्सा आ गया वह तुरन्त नदी के तट पर आकर दहाड़ने लगा भील चौकन्ना हो गया उसने तत्क्षण धनुष की डोरी खींची और जहरीला तीर छोड़ दिया

अगले ही पल तीर शेर के मुह मे जा लगा शेर वही मर गया भील की प्रतिज्ञा पूरी हो गई.

वादे के अनुसार भील रोज लोमडी को बेर खिलाने लगा आज भी भील और लोमडी म मित्रता है भील लोमडी को नही मारता. लोमडी को मारना वह बडा पाप समझता है

० ०

दैत्यराज और हुरजी भील

एक भील था—हुरजी वह बडा मेहनती था दिन-रात अपने छोटे-से खेत पर मेहनत करता समय पर जमीन जोतता उसमें बीज बोता और अच्छी-अच्छी फसल तैयार करता इसके बाद वह अपना माल पास के गाव की मडी मे ले जाता और बडी कोशिश करके अधिक से अधिक मूल्य पर उसे बेचता इस प्रकार प्रति वर्ष वह काफी कमा लेता यहा तक कि उसके साथी कहने लगे कि कोई भी सौदेबाजी मे हुरजी भील से टक्कर नही ले सकता।

एक बार फसल बोने के वक्त पर, हुरजी ने देखा—उसके एक खेत के बीच मे बडी-सी एक टेकरी या पहाडी है जिस पर जगली घास के सिवाय कुछ नही उगता था फौरन उसने अपने सहायक भीलो को बुलाया और उन्हे काम पर लगा दिया उसने कहा, 'मेरे इस खेत के बीच मे इतनी बडी टेकरी बेकार पडी रह, यह हो नही सकता।'

उसने टेकरी पर इधर-उधर देख-रेख के लिए दो-चार चक्कर काटे थे कि टेकरी हिलने लगी अचानक एक छाते की तरह टेकरी की जमीन धीरे-धीरे ऊपर उठने लगी हुरजी ने देखा—लाल रग के खभे-से उठ आए है और सारी जमीन ऊपर उठकर, छतनार, चदोवा-सा बन गई है

हुरजी को सारी बात समझ मे आ गई वह जानता था कि जमीन के नीचे कुछ बौने दैत्य रहते हैं वे सूरज की धूप से छिपकर भूगर्भ मे चले गए है क्योकि उन पर सूरज की धूप पड गई, तो वे तत्काल पत्थर बन जाएगे इसलिए सूरज से बचने के लिए दिन मे तो वे दैत्य भूगर्भ मे छिपे रहते हैं और शाम होते ही बाहर निकल आते हैं जमीन ऊपर उठ जाती, खभे तन जाते और मजे से इस तबू के नीचे से निकलकर वे अपनी शिकार की खोज मे चल देते और हुरजी तो इसी जमीन पर हल चला रहा था

अब जब भेद खुल गया, दैत्यो के डेरे का पता लग गया, तो उस डेरे मे रहने वाले तीन अत्यन्त विकराल दैत्य बहुत क्रुद्ध हुए उनकी बडी-बडी लाल आखें उल्लुओ जैसी थी उनके दात शेर के पजे जैसे थे और सारे शरीर पर रीछ से भी बडे-बडे

बात ये उनकी शक्ल देखकर, मार्तम की बातें बघारने वाले बडे-बडे सूरमा डर जाते थे.

दैत्यों का सरदार बडा चालाक था और हमेशा सूरज की किरण से बचकर रहता था इस डेरे में बीच में बैठा था क्योंकि इससे उसके चारों ओर गहरी छाया रहती थी उसने बडी कर्कश आवाज में गुर्राकर, हुरजी से कहा, 'क्या तू मुझे नहीं जानता तेरी इतनी हिम्मत, मेरे डेरे पर हल चलाए ? मैं तुझे छोड़ूगा नहीं, आज मैं तुझे मार कर खा जाऊंगा इससे तुझ जैसे मूर्खों को सबक मिल जाएगा कि वे हम जैसे भूगर्भवासियों से टकराए '

हुरजी भील भी कुछ कम न था वह दैत्य को अकेला ही ललकार कर, आगे बढा, जबकि उसके साथी-दैत्यों को देखते ही नौ-दो ग्यारह हो गए थे हुरजी बोला, 'क्या बकता है ? मुझे क्या मालूम कि यह पहाडी तेरे डेरे की छत है येकार पड़ी थी, मैंने सोचा, इस पर हल चले, तो लाभ होगा '

इस बातचीत में चतुर हुरजी ने यह ध्यान रखा कि अगर दैत्य उसकी ओर झपटे, तो वह फौरन धूप में खडा हो जाए इसलिए उसने धूप का किनारा नहीं छोडा और दैत्यों की हलचल के प्रति चौकन्ना रहा

दैत्यों का सरदार बहुत लोभी था दुनिया में लोभी लोग ही धीरे धीरे दैत्य बन जाते हैं इसलिए उसने हुरजी भील से पूछा, 'हल चलाकर तू क्या करेगा ?'

'फसल पैदा करूंगा तुम्हारी छत पर जो जमीन है, वह मेरी है '

दैत्य गुर्राया, 'देख, यह मेरा मकान है और अगर इसकी छत पर कोई खेती कर सकता है, तो वह मैं हू '

'बिल्कुल ठीक ' हुरजी ने कहा 'अगर तुम खेती करने चले तो बेटा कम जाओगे एक तो इस काम में तन-तोड मेहनत करनी पडती है जिंदगी भर आराम की खाते-खाते तुम आलसी बन गए हो और मुझे बताओ, सूरज-किरणों का क्या होगा ? मेरा तो यही ख्याल है, धूप और किरण से तुम्हारी दुश्मनी है !'

दैत्यराज अपना एक सिर खुजलाने लगा उसके तीन सिर थे लेकिन तीनों सिरों में से किसी में भी दिमाग नाम की चीज नहीं थी

फिर वह बोला, 'दिन में तो धूप पडती है मैं रात में आकर बीज बो दूंगा '

इस पर हुरजी ने कहा, 'क्यों तुम तकलीफ करते हो, मैं तुम्हारे बदले, तुम्हारे लिए, बीज बोऊंगा और अनाज इकट्ठा कर लूंगा बाद में हम बटवारा कर लेंगे जो भी चीज तुम्हारी छत पर उगेगी हम उसे भी बराबर बांट लेंगे पहले साल तुम वह सारी फसल लोगे, जो जमीन के ऊपर उगेगी और मैं उस भाग का मालिक होऊंगा, जो जमीन के नीचे उगेगा उसके बाद दूसरे वर्ष तुम जमीन के नीचे की फसल लो और मैं जमीन के ऊपर का भाग लूंगा

दैत्यों के सरदार ने अपने तीनों सिर खुजलाए और तीनों पर जोर देता हुआ देर तक सोचता रहा अन्त में उसने कहा, 'तुम भले आदमी हो और तुमने न्याय की बात की है तुम बहुत अच्छे पड़ोसी हो, मुझे दुख है कि मैंने तुम्हें निगल जाने की धमकी दी थी खैर – अब तुम जाओ क्योंकि मुझे नीद की झपकी आ रही है. दिन में इस तरह जगा दिया जाना, मैं पसद नही करता. लेकिन यह मत भूलना कि तुमने मुझे वचन दिया है—जमीन पर उगने वाली पहली फसल मैं लूगा और मैं भी वचन देता हू कि दूसरी फसल तुम लोगे जब मैं ऊपर की फसल लूगा, तुम जमीन के भीतर की फसल लोगे और जब तुम ऊपर की फसल लोगे, मैं नीचे की फसल का मालिक बनूगा '

हुरजी ने गभीरतापूर्वक वचन दिया और दैत्य उसे धन्यवाद देकर कुम्भकर्ण की नीद सो गया धीरे-धीरे उसके डेरे के छत की जमीन नीचे उतरने लगी यहा तक कि उस स्थल पर पहले की तरह एक पहाडी नजर आने लगी

हुरजी भील हल चलाने में जुट गया दैत्य-सरदार से हुए अपने समझौते पर वह मन ही मन हस रहा था

डेरे की छत वाली जमीन पर भली-भांति जुताई कर हुरजी ने उसमे गाजर के बीज बो दिए बहुत बढ़िया फसल आई और सौदे के अनुसार जमीन के नीचे का भाग यानी गाजर की फसल पर हुरजी ने अपना कब्जा कर लिया, जबकि दैत्यराज को ऊपरी हरे पत्ते मिले, जो बिल्कुल बेकार थे

दूसरी बार जब ऊपरी फसल लेने की हुरजी की बारी थी. उसने समूचे खेत मे और दैत्य के डेरे की छत पर सर्वत्र गेहू की फसल बो दी. जब वह फसल पक गई, तब उसने सारा गेहू अपने खलिहान मे भेज दिया और जड़ें खुदवाकर दैत्यराज को सौंप दी. इस प्रकार बारी-बारी से हुरजी को गाडिया भर-भरकर गाजर और गेहू की फसलें मिली और मूर्ख दैत्यराज को गाजर की ऊपरी हरी घास और गेहू की जड़ें प्राप्त हुई.

हुरजी भील अपनी विजय पर बहुत प्रसन्न था और बेचारा दैत्यराज, जो वास्तव में इन बातों के बारे में कुछ जानता-बूझता नही था, अपना हिस्सा पाकर पूर्ण सतुष्ट था.

इस प्रकार इन्ही शर्तों पर दोनों दोस्त—एक मानव, एक दानव, बहुत बरसों तक बड़े आनन्द मे रहे बेचारा दैत्यराज यह कभी समझ भी न पाया कि हुरजी ने कैसी चतुराई से उसके साथ सौदा किया है।

००

धोबी और मछली

बरसों पुरानी बात है.

एक धोबी नदी किनारे बैठा हुआ आसमान की ओर मुंह करके ताक रहा था, तभी एक मछली ने पानी के ऊपर मुंह करते हुए कहा, 'भाई, तुम एक नेक इंसान हो तुमने हमेशा मुझे और मेरे परिवार को आटे की गोलियां खिलाकर उपकार किया है तुम्हारे इस एहसान को हम जिंदगी भर नहीं भूल सकते तुम हमारे ही परिवार के सदस्य हो हमारे ही वंश के हो. इसलिए एक काम की बात तुम्हें बता दूं— परसों इस संसार में प्रलय होगा, सभी जीव पानी में डूबकर, मर जाएंगे लेकिन तुम एक बड़े संदूक में छिपकर बैठ जाना मैं जान देकर भी तुम्हारी रक्षा करूंगी, पर पर सबको समझाना कि साहस से काम लें घबराए नहीं! हिम्मत के साथ प्रलय का सामना करें!'

इतना कहकर मछली पुन पानी के भीतर चली गई धोबी ने उसकी बात सुनी और तुरन्त घर की ओर दौड़ गया उसने एक बड़ा-सा संदूक लिया और नदी में डाल दिया उसमें अपनी मुंहबोली बहन और एक चतुर मुर्गे को भी भीतर रख दिया फिर स्वयं अच्छे कपड़े पहनकर, संदूक मे घुस गया और संदूक बंद कर दिया

मछली के बताए अनुसार ठीक समय पर आंधी-तूफान के साथ भयंकर बारीश हुई सारी दुनिया भीषण वर्षा से त्राहि-त्राहि करने लगी हजारों-लाखों लोग, पशु-पक्षी आदि सभी प्रलय के शिकार हो गए

लेकिन एक संदूक ऐसा था, जो लहरों के ऊपर धीरे-धीरे बह रहा था प्रलय समाप्त हुआ, तो भगवान राम ने अपने सेवकों को समाचार लाने के लिए भेजा भगवान राम के सेवक इधर-उधर घूमने लगे इन्सान तो क्या एक भी पशु या पक्षी उन्हें नजर नहीं आया, लौटने लगे, तो उन्हें एक मुर्गे की आवाज सुनाई दी देखा—एक संदूक नदी-किनारे शांत पड़ा है उसी में से मुर्गे की आवाज सुनाई दे रही है सेवकों ने मिलकर संदूक उठाया और अपने दरबार में ले आए

संदूक खोला गया उसमें से एक धोबी, एक सुन्दरी और एक मुर्गा बाहर निकला राम ने धोबी से सुन्दरी के बारे में पूछा, तो उस सुन्दरी को उसने अपनी बहन बताया लेकिन उसने जब दक्षिण की ओर मुंह किया, तो सुन्दरी को अपनी पत्नी बताया फिर मछली की बताई सारी बातें भगवान राम को बता दी उसकी बात सुनकर राम ने उस मछली-विशेष की जीभ कटवाने की आज्ञा दी आज भी मछली की एक जाति बिना जीभ की होती है

राम ने धोबी को आदेश दिया कि वह इस सुंदरी के साथ विवाह करे धोबी को यही करना पड़ा कुछ वर्षों बाद उसके सात पुत्र और सात पुत्रियां हुईं सबसे बड़े पुत्र को राम ने एक घोड़ा दिया लेकिन वह घोड़े पर चढ़ना भी नहीं जानता था

उसने घोड़े को तो छोड़ दिया और वन में जाकर रहने लगा उसी धोबी को भील जाति का संस्थापक माना जाता है, उसी के वंशज भील के रूप में वनों में रहते हैं, ऐसा आदिवासियों का विश्वास भी है

००

भील वन में क्यों रहते हैं ?

पाच व्यक्ति महादेव के पास गए पार्वती उन्हें देखकर, भगवान महादेव से बोली, 'ये मेरे भाई हैं आपने मुझसे विवाह किया है, इसलिए आपको इन्हें वधू-मूल्य देना चाहिए.'

'मेरे पास तो सिवाय नदी और कमडल के अतिरिक्त कुछ भी नही है' महादेव ने कहा.

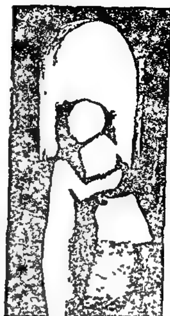
पाचो व्यक्ति घर की ओर लौट गए उनके जाते ही महादेव का मन पिघल गया.

उन्होंने उनकी राह मे चादी की एक चौकी बनवा दी. लेकिन पाचो मे से किसी की भी नजर उस पर नही पडी पार्वती दौडी-दौडी अपने भाइयो के पास आई, 'तुम सब अधे हो रास्ते मे पडी हुई चादी की चौकी भी तुम्हे नजर नही आई ? तुम कभी सुख से नही रह सकोगे अब मैं तुम्हें नदी देती हू इसके कूबड मे रत्न रखे हैं इस नदी के साथ प्रेम का बर्ताव करना इसे किसी प्रकार की तकलीफ मत देना.'

पाचो खुश हो गए. रत्न के लिए नदी से प्रार्थना की, लेकिन कूबड से कुछ नही निकला. उन्हे गुस्सा आ गया और नदी को मार ही डाला और जोर-जोर से रोने लगे तभी पार्वती प्रकट हुई. बोली, 'तुम लोग तो मेरे भाई कहलाने भी लायक नही हो ! मैने तुम्हे नदी खेती करने के लिए दी थी, खेती से ही रत्न की प्राप्ति होती है नदी खेती मे बडी प्रवीण थी, लेकिन तुमने तो उसे मार दिया . यह एक भयकर पाप हुआ. अब तुम कभी चैन से नही रह सकोगे. घने जगलो मे दर-दर की ठोकरें खाओगे, तुम्हारी जाति का अब कोई महत्व नही रहेगा !'

कहा जाता है कि भील-मीणा भगवान की सतान होने के बावजूद भी, नदी-हत्या के कारण वन मे रहने की सजा भुगत रहे हैं.





आदिवासियों के दर्शनीय-स्थान

सीता माता

प्रतापगढ से देवलिया होकर, आदि कवि वाल्मीकि के आश्रम सीता माता तक जाना पड़ता है नगर से आश्रम तक की यात्रा दो घण्टे की है. अच्छी जीप या मजबूत मोटर कार ही वहां तक जा सकती है अब तो मीलो तक वन वृक्षविहीन हो गए है भला हो, ठेकेदारी प्रथा का, मैदान और घाटिया अर्द्ध-नग्न हो गई हैं वरना दस बरस पहले तो कोई घुड़सवार यात्री भी कठिनाई से इस वन प्रदेश से गुजर सकता था.

आदि कवि के इस आश्रम का दूसरा नाम 'सीता माता' भी है. क्योंकि भक्तो ने एक ऊंची पहाड़ी पर सीताजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा की है

सीता माता जाना है, तो पहला पडाव देवगढ होना चाहिए देवगढ के खण्डहर, सून सरोवर और सरोवर मे बने हुए महल, सून कूप-बावडिया आदिवासी भीलों

की बहादुरी का ग्राज भी गुण-गान करते है।

देवगढ़ के दर्शनीय राज महलों ग्रौर कमल सरोवरों के दर्शन पर, स्वल्प विश्राम के पश्चात् इक्कीस मील की यात्रा ग्रारम्भ होती है पहाड़ी घाटियों के उतार-चढ़ाव ग्रौर उनकी परिक्रमा करते हुए पथ बहुत ही मनमोहक लगते हैं

खुशनुमा वातावरण

इक्कीस मील का यह पूरा प्रान्तर, पलाश ग्रौर बांस के पेड़ों से भरा हुग्रा है ये वन इतने सघन है कि कठिनाई से ग्रादमी उनमें प्रविष्ट हो सकता है खिलते हुए रंग-बिरंगे पलाश ग्रौर फूटते हुए बांसों की ध्वनियां ! बड़ा ही खुशनुमा वातावरण ! इन्हीं पलाश वनों के बीच होकर जब हमारी कार या जीप गुजरती है, तो खुशी के मारे गाड़ी में से कूद पड़ने को मन मचल उठता है

पलाश वन के पार दूसरा पड़ाव पड़ता है-भेवा नामक झील के किनारे !

यह झील बहुत ही लम्बी ग्रौर चौड़ी है इसके दोनों किनारों पर घने ग्रौर ऊंचे वृक्षों की कतारें हैं इन वृक्षों में चिरौंजी प्रमुख हैं ग्रौर कोई चाहे तो महीनों चिरौंजी खाकर रह सकता है

बन्दरों की यहां कमी नहीं ! सैकड़ों बन्दर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलते-कूदते, शोर मचाते हुए देखे जा सकते हैं

इस क्षेत्र में ग्रास-पास बसे कई ग्रादिवासियों का कहना है कि सुबह-शाम शेर यहां पानी पीने के लिए ग्राते हैं उनकी सूनी गुफाएं दर्शनीय है यात्री दिन-रात्रि में वनराजों की दहाड़ सुन सकता है !

विशाल प्रस्तर-खण्ड

भवा के किनारे विशाल प्रस्तर-खण्ड है एकदम काले हैं, पर बहुत भले लगते हैं भेवा का जल इतना साफ है कि किनारे पर गहरा-गहरा तल दृष्टिगोचर होता है यहीं से जालम नदी निकलती है !

भेवा के बाद 'काला ग्राम्बा' जो लगभग 70-80 फुट ऊंचा है, ग्राम्र वृक्ष राज है यहां के ग्रादिवासियों का विश्वास है कि लव-कुश ने यहीं ग्रश्वमेध के ग्रश्व को रोककर थाम लिया था इस वृक्ष के नीचे निर्मल जल की कई धाराएं लहरा रही हैं ग्रौर तीन दो मील का भू-भाग ग्रत्यन्त सुहावना ग्रौर सुरम्य है

रास्ते भर लाल ग्रौर सफेद संगमरमर मिलता है लाल पत्थर पर सफेदी रेखाएं, देखकर इच्छा होती है कि ढेरों टुकड़े साथ ले लिए जाएं

यहां से ग्रागे बढ़ा जाए, तो वे सभी चिन्ह मिलते हैं, जिनके फलस्वरूप 'रत्नाकर' वाल्मीकि बना सुप्रसिद्ध साहित्यकार परदेशी ने ग्रपने ग्रंथ 'महाराणा के ग्रन्तराल में' इस स्थल का वर्णन करते हुए लिखा है —'यही है, वह स्थल, जहां डाकू

रत्नाकर वाणी का वरदपुत्र कवि बना अज्ञान ज्ञान की परम ज्योति मे परिणत हो गया। वाल्मीकि ने अपने दिव्य-काव्य मे जितना भी प्रकृति-चित्रण किया है, उस समस्त वर्णन की प्रामाणिक छवि हमे यहां सुलभ है लता-द्रुम, वृक्ष-वल्लरिया, पशु-पक्षी, पर्वत-नदियां, सभी एक-एक और सम्पूर्ण अनेक यहा प्रस्तुत हैं.

आसपास की भूमि दीमक के घर वल्मीक (बिमोट) से आच्छादित है. ये वल्मीक कही-कही 8-8, 10-10 फुट के घेरे मे फैले हुए हैं, सख्या मे अगणित हैं. इनकी उपस्थिति इस सत्य की द्योतक है कि वल्मीक सम्पन्न प्रदेश का निवासी कवि 'वाल्मीकि' है. (वल्मीके भव) जैसे मालवा का रहने वाला 'मालवी' या 'मालवीय' है, शास्त्रकथा या किंवदन्ती भले कहे की तपस्वी रत्नाकर की देह पर दीमको ने अपने घर बना लिए और वे वाल्मीकि कहलाए.

इस क्षेत्र के आदिवासियो का कहना है कि जिस स्थान पर वल्मीक होते है, उस स्थान के नीचे खुदाई पर, अनन्त जल मिलता है.

बहुत लम्बे ढलान को पार कर 'सीता माता' स्थान की ओर ज्यो ही हम बढते हैं, मन इतना प्रसन्न होता है कि कहा नही जा सकता कैसा ही कठोर से कठोर, हिंस्र वृत्ति वाला व्यक्ति हो, यहा आने पर, अवश्य विगलित हो उठेगा.

वाल्मीकि-उपत्यका', वास्तव मे अरावली का ढलुवा कोण है. इस कोण के सीमान्त पर, मालवा का पठार फैला पडा है. इस प्रकार 'सीता माता' अथवा 'वाल्मीकि का आश्रम' उस बिन्दु पर है, जहा मालवी पठार के अक मे विलीन होने के लिए अरावली की श्रेणियाँ झुकती और झुकती चली गई हैं वाल्मीकि-उपत्यका की परिक्रमा एक नही सात बार करती है अत सात बार वह हमारे मार्ग मे आती है और सात बार हमे उसे पार करना पडता है, पार करने के लिए जहां रोड बनी हुई है, उस स्थान पर जल अधिक गहरा नही है, परन्तु बारहो मास वैसा ही रहता है आश्रम मे प्रवेश करते ही, तुलसीदास का कण्ठ-कोकिल कुहुकने लगता है—

देखत बन सर सैल सुहाए
वाल्मीकि आश्रम प्रभु आए
राम दीख मुनि बासु सुहावन
सुन्दर गिरि-कानन जलु पावन
सरनि सरोज विटप बन फूले
गुंजत मंजु मधुप रस भूले
खग-मृग विपुल कुलाहल करही
बिरहित बैर मुदित मन चरही

सुचि सुन्दर आश्रमु निरखि, हरषे राजिव नैन
सुनि रघुवर आगमनु मुनि, आगे आयउ लेन !

यहा एक ओर नदी है, जिसमे स्थान-स्थान पर जलकु ड सुशोभित हैं दूसरी ओर प्रकृति की वनश्री है, वृक्षो मे आम, शाल्मली, पीपल, अशोक, जामुन, केतकी, केला, चिरौंजी, बरगद, हिन्ताल आदि हजारो की सख्या मे झूम रहे हैं

सीतावाड़ी : प्राकृतिक उद्यान

यहा से कुछ ही दूर 'सीतावाडी' नामक प्राकृतिक उद्यान है मीलो तक फैला हुआ, सैकडो वृक्षो से सुसज्जित ऐसी कोई वनस्पति नही, जो यहा सुलभ न हो, सर्वत्र निर्मल जल के सोते बह रहे है केले के असख्य पेड और दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह फीट लबे-चौडे उसके पत्ते मनमोहक लगते हैं

केले के वन के पास ही केवडे का वन है केवडे के गहन और ऊचे-ऊचे पौधे देखकर, यह विश्वास गहरा हो जाता है कि अवश्य इसी स्थलमणि को देखकर, आदिकवि के कठ से ये कमनीय पक्तिया गू जी थी—

मेघोदर विनिर्मुक्ता कर्पूरदल शीतला
शक्य मजलिभि पातु वाता केतकगधिन

पर्वतो से बहकर आने वाले जल का रग यहा एकदम लाल है, उससे जलस्रोतो के नीचे पाषाण खडो पर लाल रग की गहरी पर्तें जम गई हैं आदिवासी-श्रद्धालुओ का विश्वास है कि माता सीता यहा स्नानोपरान्त अपनी माग मे सिन्दूर और गौर भाल पर, बिंदी लगाया करती थी

सीताकु ड मे वर्षो से एक शिला पानी मे तैर रही है ऊपर, छोटी-सी गुहा के द्वार पर, सीतामाता की मूर्ति स्थापित की गई है और स्थानीय नरेश की ओर से यात्रियो के लिए यहा पक्की सीढिया बना दी गई हैं !

●●

भारत प्रसिद्ध शिवालय :

गौतमनाथ

चित्तौडगढ जिले मे प्रतापगढ शहर से बीस किलोमीटर दूर एक गाव है—अरुणोदय, (आज का अरनोद) जहा से एक-दो किलोमीटर दूरी पर आदिवासियो का अपना तीर्थ-स्थल गौतमनाथ है यहा तालाब के किनारे खडे रहन पर, सूर्योदय का अप्रतिम मनोरम दृश्य दृष्टिगोचर होता है सभवत इसीलिए इस बस्ती को नाम 'अरुणोदय' मिला तालाब म रगीन कमला की शोभा अलौकिक है

गौतमनाथ का शिवमंदिर अति विराट चट्टान की गोद मे विराजमान है यहा तक पहुचने के लिए 150 सीढिया उतरनी पड़ती है ऊपर शिलाओ से झरते झरने का जल मन्दिर के बाहर एक कुण्ड मे एकत्रित होता है वैसे हल्की निर्झर-धाराए कई है पचास-पचहत्तर फुट ऊपर शिलाओ से झरते झरने का जल जिस कुण्ड म एकत्र होता है, उसे 'पाप मुक्ति कुण्ड' कहते है धार्मिक दृष्टि से इस कुण्ड का बडा महत्व है गौतमनाथ मे मालवा और मेवाड भर के यात्री पाप-निवारण और प्रायश्चित के लिए यहा आते है और पाप कुण्ड मे स्नान करते हैं—जाने-अनजाने किसी व्यक्ति के हाथ स पशु-पक्षी या मनुष्य की हत्या होने पर उसे तभी जाति-समाज मे स्वीकार किया जाता है, जब वह स्थानीय मठाधीश का पत्र प्रस्तुत करता है कि अमुक व्यक्ति पाप से मुक्त हो गया है। प्रमाण-पत्र के लिए दस रुपए शुल्क लिया जाता है

मन्दिर के पृष्ठ भाग मे एक लम्बी गुफा है, जिसकी खोज अभी नही हुई है मन्दिर के सामने फैली हुई दो भुजाओ के समान घाटी की दो पत्तिया हैं नीचे अनत वनश्री है प्रतिवर्ष वैशाखी मेले मे हजारो आदिवासी भील-मीणा एकत्र होते है यहा आदिवासी केवल दर्शन या स्नान ही नही करते, सिर्फ बाजार या सौदा ही नही करते, बल्कि कई सामाजिक, पारिवारिक, जातीय व्यवहारो का निर्वाह भी करते हैं यही उनके 'वैर की वसूलात' होती है अपने शत्रुओ को इसी मेले मे वे ढूढ निकालकर मारते है, पीटते है, परकीया के प्रेमी तलवार के घाट उतारे जाते हैं और प्रथम मिलन पर विवाह की वल्लरी लहराती है

प्रेमावस्था मे मीणा या भील-जाति की नवयौवना अपने प्रेमी को वचन देती है कि गौतमनाथ के मेले मे अमुक सकेतस्थल पर मिलेंगे, निश्चित समय पर दोनों का मिलन होता है, जबकि लडकी अपने परिजनों को छोडकर, चुपके-से निकल आती है दोनों मजे से मेले मे सैर करते हैं झूला झूलते हैं, कठपुतली का नाच देखते हैं और प्यार की बसी बजाते हैं फिर आदिवासी बाला, सप्ताह भर मे, सुहाग की मुसकान और पार्वती के आशीष लेकर लौट आती है अपने नैहर।

विशाल नन्दी

शिवमन्दिर के सम्मुख वन की ओर जो शीशविहीन नन्दी पडा है वही पहला नन्दी है अति भव्य, अति विशाल। तत्कालीन शिल्पकारो ने पहली बार, जब इस प्रस्तर नदी को किसी गौ के निकट बैठाया होगा, तो अवश्य ही वह गौ इसे सूघकर प्यार करने लगी होगी दर्शक अनायास हाथ फेर-फेर कर इसे सहलाते हैं

यह प्रथम नन्दी मालवा के गोरी सुलतानो के शासनकाल म विनष्ट हुआ है, जबकि शिवमन्दिर के महालिंग पर गोरी बादशाह ने अपने भयकर घन से प्रहार किया था लिंग टूटा नही आसपास की भूमि खोदने पर भी उसका मूल मिला नही लिंग की तडकन आज भी देखी जा सकती है

दिलावर गोरी मुहम्मद तुगलक (ई० स० 1389-1394) का हाकिम था दिल्ली की सल्तनत कमजोर हुई तो, आप मालवा का सुलतान बन बैठा इतिहास मौन है कि शिवमंदिर पर आक्रमण उसने किया था या उसके बाद मुहम्मद गजनी खा गौरी ने किया, जो सन् 1401 मे मालवा का शासक था. लेकिन इन शासको के विपरीत भी एक शासक था मकबूल खा सन 1505 मे मालवा के सुलतान नासिर शाह खिलजी के अरनोद परगने के हाकिम खान आलम मकबूल खा ने अपनी धार्मिक सहिष्णुता का परिचय दिया और आदेशयुक्त एक शिलालेख मन्दिर के बाहर स्थापित किया. जो इस प्रकार है—'मन्दिर की क्षेत्र सीमा म कोई भी व्यक्ति किसी प्रकार की हिंसा न करे—हिंदू को गौ और मुसलमान को सूअर की सौगद है' सभव है, इसी परम्परा मे सधमशील सम्राट औरगजेब आलमगीर ने राजकीय व्यय से उज्जैन के महाकाल देवालय म प्रतिदिन पाच सर घी के नदादीप सजोने का हुक्म दिया था।

आदिवासियो के तीर्थ-स्थल गोतमनाथ के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को देखते हुए, इसे पर्यटक स्थल घोषित किया जाना चाहिए

आदिवासियों के और भी अनेक दर्शनीय स्थल हैं

आदिवासी इलाको मे वीरपुर, खेरोट, अरनोद, मचू डला, नीनोर, शेवना, बोरदिया, छोटी सादडी आदि अनेक स्थानो मे प्राचीन काल के मन्दिरो के भग्नावशेष और यावडिया आदि विद्यमान है इन क्षेत्रो मे खुदाई का काम बिल्कुल नहीं हुआ है इतिहास और पुरातत्व के अन्वेषकों के लिए विपुल कार्य अछूता पडा है. शोध और खुदाई की आवश्यकता है अतीत सोया पडा है—भूगर्भ मे छिपा हुआ है।





अन्य आदिम जातियां

हमारे देश म कई आदिम जातिया हैं सभी म कुछ न कुछ असमानताए हैं भील मीणा को अपने देश की सभी आदिम जातियो म श्रेष्ठ माना जा सकता है वैस तो भील मीणा धार्मिक प्रवृत्ति के होते है और अंधविश्वासी भी लकिन उतन नही जितने कि देश की अन्य आदिम जातिया। जापान की एनु जाति तो ससार की सबसे पिछडी आदिम जातियो म गिनी जाती हैं यहा अन्य आदि वासियो के बारे म सक्षिप्त जानकारी दी जा रही है ताकि यह आभास हो सके कि भील मीणा और दूसरी जन जातियो म कितनी भिन्नता है ? भील मीणा को ससार की सभी मुख्य आदिम जातियो म किस श्रेणी मे रखा जा सकता है ? उत्तरी अमरीका म प्राचीन जाति रेड इ डियन है दक्षिण अमरीका म भी कई आदिम जातिया थी जो धीर धीरे लुप्त हो गई उन आदिवासियो म सबसे प्रमुख और प्रसिद्ध जाति इका थी इका और रेड इ डियन जाति म भी काफी अतर है।

सिर की चौडाई के बराबर, एक कान से दूसरे कान के ऊपरी हिस्से तक, बालो को त्वचा सहित चार या छ रेखाओ मे बाट दिया जाता है ये निशान इतने गहरे होते हैं कि दूर से ही दिखाई पड जाते हैं

'गोड' आदिवासियो की मान्यता है कि गुदना एक काला बुत्ता है, जिसकी परछाई नही होती ! बुदेलखण्ड क्षेत्र म रहने वाले आदिवासियो मे यह अधविश्वास प्रचलित है कि महिला मृत्यु के बाद स्वर्ग मे सिर्फ गुदना ही ले जाती है शेष तो नष्ट हो जाते हैं मालवा मे आदिवासियो का यह विश्वास है कि गुदना-चिह्नो से अलकृत स्त्री-पुरुष को स्वर्ग मे स्थान मिलता है गुदवाने से सारे पाप धुल जाते है

बस्तर के आदिवासी सौंदर्य के लिए गुदना गुदवाते है जो स्त्री जितनी अधिक गोदना गुदवाती है, वह उतनी ही अधिक खूबसूरत लगती है साप की त्वचा को जलाकर, उसके राख को तेल मे मिलाकर गुदना-लेप तैयार किया जाता है तिल के तेल मे कागज मिलाकर, लेप बनाते हैं और उससे गुदना करवाते हैं लेकिन आजकल मेलो मे बिजली की कलम से गोदने गुदवाने लगे हैं !

वर्षा-अनुष्ठान

उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलो मे सूखा पडने पर आदिवासी-महिलाए पूर्णिमा की अर्द्ध रात्रि के समय पूर्ण रूप से नग्न होकर नृत्य करती हैं अपने कधो पर कुल्हाडी या कृषि-सम्बन्धी कोई चीज रखकर, बैलो की तरह चलती है ऐसा करने म उनका विश्वास है कि इसस इद्र भगवान खुश होगे और उनके सूखे खेतो, कुओ और तालाबो के लिए पानी बरसाएगे

पहाडी-आदिवासी पहाड पर चढकर जोर-जोर से ढोल बजाते हैं, गर्जना करते है और यदि मूसलाधार बारीश हुई, उससे नुकसान होने लगा, तो कपडे की गुडिया तथा लोहे का धारदार शस्त्र जमीन पर गाड देते है !

भारतीय-संस्कृति मे वर्षा की महत्ता इस तथ्य से भी उजागर हो जाती है कि अनेक प्रकार के आधार, विचार और विश्वास पर उसका अनुमान लगाया जाता है यदि कोई लडकी हल को स्पर्श करती है, तो यह माना जाता है कि अब वर्षा नही होगी वर्षा-प्रारम्भ के कुछ समय बाद 'बावला' वृक्ष की पत्तियो मे कीडो ने पत्तियों को खाकर नष्ट कर दिया हो, तो यह माना जाता है कि भयकर बारीश होगी.

हमारे देश की विभिन्न आदिम जातियो मे वर्षा के सम्बन्ध मे अनेक धार्मिक विश्वास और अधविश्वास प्रचलित हैं *'उराव' आदिवासी वर्षा-अनुष्ठान* के लिए तीन

पानी से शुद्ध जल लाते हैं और जल के घड़े को पूजा-स्थल के पास रख दिया जाता है इसी आधार पर वर्षा होने या न होने की भविष्यवाणी की जाती है यदि घड़े का पानी अपने आप घट जाता है, तो प्रांत मे सूखा पड़ने का अंदेशा रहता है पानी बहकर निकलता है, तो अतिवृष्टि और ज्यो का त्यों रहने पर अच्छी फसल के योग्य वर्षा का अनुमान लगाया जाता है

छोटा नागपुर की इस आदिवासी जाति मे एक और विधि प्रचलित है ग्राम के प्रमुख जलाशय का जल धरती माता को अर्पित किया जाता है एक नए घड़े मे जल भरकर, धरतीमाता के पास ही रख दिया जाता है अगले दिन आदिवासी इस घड़े का देखने आते हैं यदि घड़े के चारो ओर नमी रहती है, तो वर्ष भर अच्छी वर्षा होने का अनुमान होता है और यदि घड़े के चारो ओर का स्थान सूखा रहता है, तो बारीश की सभावना नही रहती

वर्षा-निमन्त्रण के लिए 'उराव' जाति के आदिवासी अपने इष्टदेव की पूजा मे एक काली मुर्गी, एक चितकबरी मुर्गी, और एक लाल रग का मुर्गा चढाते है इस प्रकार की पूजा म उनका यह विश्वास है कि वर्षा पर्याप्त होगी छत्तीसगढ़-क्षेत्र मे गोड, मुड़िया आदिवासी वर्षा-आगमन के लिए आषाढ माह मे मेढक मेढकी का विधिवत ब्याह करते हैं वर्षा हुई, तो 'भीमादेव' (वर्षा देव) को भेंट चढाते हैं अधिक वर्षा से फसल को नुकसान पहुचने पर, देवता का प्रकोप मानकर, उसे प्रसन्न करने का प्रयास करते है बहुत कम वर्षा होने पर भीमादेव के यहा जाकर, उस पर गोबर उडेलकर कहते हैं—यदि तुममे शक्ति हो, तो स्वय पानी बरसाकर, अपने ऊपर से गोबर हटा दो' फिर यदि बारीश अच्छी हो गई, तो भीमादेव की शक्ति को स्वीकार करते हैं और उसकी पूजा एक बकरा या सूअर की बलि चढाकर करते हैं

मध्यप्रदेश की 'खैरवार', 'भूमिया', 'बैगा' आदि आदिवासी जातिया जल को सबसे बड़ा देवता मानती हैं और उसमे अनेक देवताओ का प्रतिबिम्ब देखती है क्योकि जल ही आदिवासियो का जीवन है इसीलिए गगा, नर्मदा, सोन आदि नदियो की वे समय-समय पर पूजा करते हैं

भील इन्द्र को आसमान का देवता मानते हैं इन्द्र को 'बादूराना' (बादलो का राजा) नाम से भी सम्बोधित करते है वर्षा के लिए इन्द्र की पूजा करने की परपरा है सरगुजा के आदिवासी समय पर वर्षा के लिए 'बड़का देव' की पूजा करते हैं 'मुण्डा' आदिवासी पर्वत देवता के रूप मे 'मारग बोगा' की उपासना करते हैं यह देवता ग्राम के निकटवर्ती पर्वत पर निवास करता है और वर्षा पर नियत्रण रखता है, सबका सूखे से बचाता है, ऐसी इनकी मान्यता है पशुओ

की बलि देकर, इसे प्रसन्न किया जाता है. 'क्वर' आदिवासी भी पहाड को वर्षा-देवता के रूप मे मानते हैं

'कोल', 'संथाल', 'बिरहोर' आदि आदिवासी जातियां वर्षा के लिए जादू का आश्रय लेती हैं यह विश्वास है कि एक प्रकार की वस्तु से वैसी ही दूसरी वस्तु उत्पन्न होती है, इसलिए पहले वे किसी पहाड की चोटी पर चढकर पूजा करते हैं और फिर पत्थर उठाकर पहाड की घाटी की ओर नीचे लुढकाते हैं इससे बादलो की तरह गडगडाहट की ध्वनि होती है उनका यह दृढ विश्वास है कि ऐसा करने से आसमान काले-काले बादलो से ढक जाएगा, गर्जना होगी और वर्षा निश्चित रूप से होगी

जापान की 'एनु' जाति

ससार मे ऐसी अनेक जातियां हैं, जिनके अनोखे रहन-सहन और रीति-रिवाजो का पता दुनिया को बहुत कम है हेयरी एनु भी एक ऐसी ही आदिम जाति है यही एनु लोग जापानियो के मूल पुरुष हैं

हाकेडो नामक जापानी द्वीप पर आज भी हेयरी एनु नामक जाति के लगभग 2,000 नर-नारी रहते है सेखालिन और कुरीलेस उत्तरी जापानी द्वीपो मे भी इस जाति के कुछ लोग है

हेयरी एनु नाम से ऐसा लगता है कि इन लोगो के शरीर पर बहुत ज्यादा बाल होते होंगे लेकिन औसत दर्जे के किसी भी पश्चिमी निवासी से ज्यादा बाल इनके शरीर पर नही होते हा, पडोसी जापानियो के शरीर पर बहुत ही कम बाल होते है, इसलिए इन लोगो ने ही शायद एनु लोगो का यह नाम रख दिया होगा

एनु लोग जो जीवित है उनमे मुश्किल से तीन प्रतिशत ही कुलीन हैं इनका चमडा हलके पीले रंग का और आवे हलके नीले रंग की होती है

मानव विज्ञान के कुछ जानकारो का विश्वास है कि इस जाति के पूर्वज पाषाण-युग मे यूरोप के उत्तरी भाग मे रहते थे धीरे-धीरे उत्तर पूर्व एशिया से होते हुए ये लोग जापान मे आकर बस गए अमरीका के उत्तर पश्चिम म रहन वाल इण्डियन लोगो से भी अधिक आदिम हैं, एनु लोग !

सैकडों वर्षों तक जापान मे एनु जाति प्राय सभी स्थानो मे खूब फैली रही ! परन्तु ईसवी सन् से लगभग 400 साल पहले जब मगोलिया निवासी जापानी पूर्वज पहले-पहल जापान मे पहुचे, तो उन्होने इन लोगो को धीरे-धीरे ऐसे द्वीपो की तरफ खदेड दिया, जहा जीविका चलाने की सुविधाए बहुत ही कम थी

एनु लोगो मे जो भयकर रोग फैले हुए हैं, उसका सबसे बडा कारण यह है कि

ये न तो सफाई से रहते हैं, न कभी किसी दवा का सेवन करते हैं जिन घरों में ये लोग रहते हैं, वे बहुत ही गंदे और बदबू से भरे रहते हैं घर का कूड़ा-करकट अथवा जूठन आदि दरवाजे के बाहर कहीं भी फेंक दी जाती है और वह जहां की तहां पड़ी सड़ती गलती रहती हैं। सफाई से मानो इनकी दुश्मनी है इन लोगों का विश्वास है कि यदि ये स्नान करेंगे, तो मर जाएंगे। नतीजा यह है कि सप्ताह में सिर्फ एक बार ये लोग अपने हाथ पैर धो लेना काफी समझते हैं जिस पानी से ये लोग हाथ पैर धोते हैं, वही पानी भोजन बनाने के काम में भी लिया जाता है.

इनकी भाषा आज तक कहीं किसी भी रूप में लिखी हुई नहीं मिल सकी जो बोली ये बोलते हैं, वह भी संसार की किसी भाषा से मिलती-जुलती नहीं कही जा सकती, इनकी शिल्प-विद्या अपूर्व है इनके जातीय रीति-रिवाज अन्धविश्वासों से भरे हुए हैं

स्त्रियों का सम्मान इस जाति में तनिक भी नहीं किया जाता। किसी उत्सव आदि में इनकी स्त्रियां शामिल नहीं हो सकतीं जिन रीति-रिवाजों का इनमें चलन है, वे गांव के बुड्ढों की आज्ञा पर चलते हैं

इनके आपसी झगड़े-झमेलों का निपटारा यही बूढ़े करते हैं और सभी लोग उनका फैसला खुशी-खुशी मानते हैं किसी का मन मैला नहीं होता, किसी को कोई शिकायत नहीं होती

एनु लोग बहुत से देवी-देवताओं की पूजा करते हैं भिन्न-भिन्न मौकों पर भिन्न-भिन्न देवी देवता पूजे जाते हैं अग्नि, समुद्र और रीछ की भी ये लोग पूजा करते हैं रीछ के चमड़े को झोपड़ी के किसी पवित्र कोने में खास-खास मौकों पर देवता की तरह किसी गद्दी पर रखा जाता है

इन लोगों में एक खास उत्सव होता है इसके लिए ये लोग रीछ का शिकार करते हैं गांव का मुखिया इस रीछ पर शराब छिड़कता है. ऐसा करके ये लोग समझते हैं कि रीछ में देवत्व आ जाता है। इसके बाद रीछ का सिर उस समाधि-स्थल के बाहरी दरवाजे पर रख दिया जाता है, जहां प्रतिवर्ष इसी प्रकार रीछों के सिर रखे जाते हैं

गांव का मुखिया इस रीछ का खून जी भर भर पीता है और उसके कलेजे को भी खा जाता है रीछ के शरीर से उसकी चमड़ी उधेड़ते समय ही यह सब किया जाता है इसके बाद जो लोग इस उत्सव में शामिल होते हैं, वे खूब नाचते, गाते और शराब पीते हैं ये सब लोग रीछ का मांस कई दिनों तक खाते रहते हैं.

एनु लोग मछली मारने और शिकार करने के बड़े शौकीन होते हैं. जिन कुछ लोगों पर आधुनिक जापानियों का प्रभाव पड़ चुका है, वे नए तौर-तरीकों से भी शिकार करने लगे हैं परन्तु असली एनु आजकल भी धनुष-बाण से ही रीछों का शिकार करते हैं

जब किसी एनु की मृत्यु हो जाती है, तो उसकी लाश उसी चटाई में लपेटी जाती है, जिस पर वह मर जाता है. इसके बाद उसके घर की किसी दीवार में एक बड़ा-सा छेद किया जाता है, जिसमें से मुर्दे को घर से बाहर निकाला जाता है, दरवाजे में से मुर्दे निकालने का चलन इनमें नहीं है। यह अंधविश्वास इनमें घर कर चुका है कि यदि दरवाजे से मुर्दा बाहर निकाला जाएगा, तो उसकी प्रेतात्मा उस घर पर धावा बोल देगी और अनेक परेशानियां सामने आएंगी। इनके मकानों में पूर्व दिशा वाली दीवार में एक खिड़की होती है, जिसे देव झरोखा कहते हैं इन लोगों की समझ में, इस खिड़की में कभी कोई प्रेत आदि घर के भीतर नहीं झांक सकता।

एनु लोग खेती करने से घृणा करते हैं जिन जापानियों ने कभी प्रयत्न किया और यह चाहा कि ये लोग खेती-बाड़ी करने लगें, उन्हें निराश होना पड़ा। किसी भी शिक्षा का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ये लोग जापानियों से ही बहुत-सा चावल खरीदते हैं बदले में जापानी इन लोगों से मछलियां और कच्चा तथा पशुओं का पकाया हुआ चमड़ा खरीद लेते हैं

रीछ में जिस देव की प्रतिष्ठा की बात ऊपर लिखी गई है, उसका आरम्भ बसन्त ऋतु के प्रारम्भ में हो हो जाता है बसन्त के आने पर ज्यों ही वर्फ पिघलने लगती है, शिकारी नए रीछ की खोज में निकल पड़ते हैं कभी-कभी तो तीन-तीन दिन के बाद इन्हें रीछ मिल पाता है रीछ का शिकार कर इसे समूचा ये लोग अपने गांव में ले जाते हैं जहां मुखिया उत्सव के लिए इस रीछ में नए देवता की प्रतिष्ठा करता है।

मृत प्रेतों से ये लोग बहुत डरते हैं कब्रिस्तान में ये लोग भूलकर भी नहीं जाते सिर्फ मुर्दों को दफनाने के समय ही वहां इन्हें जाना पड़ता है, सो भी अकेले नहीं।

दक्षिण अमरीका की प्राचीन जाति : इंका

जिस प्रकार उत्तर अमरीका की प्राचीन जाति रेड इण्डियन है उसी प्रकार दक्षिण अमरीका में कई आदिम जातियां थीं उनमें एक प्रमुख और प्रसिद्ध जाति इंका थी आज जिस देश को हम पेरू के नाम से पहचानते हैं, वहां करीब 500 वर्ष पहले इंका कबीलों के लोगों का जोर था

सन 1438 मे इकाओ का अपना सम्राट पश्कुटी राज्य करता था ये लोग ऐंडीज पर्वतमाला के प्रदेश म रहते थे और उनका प्रमुख नगर 'कूस्को' था पश्कुटी ने एक बार तय किया कि आस-पास की सभी जातियो को एक झण्डे के नीचे लाना चाहिए इसलिए उसने अपने पुत्र टोपाइन की सहायता से लगभग 50 वर्ष म दूर-दूर के सभी प्रदेशो और भूमि पर अपना अधिकार कर लिया. अब आज के इक्वेडोर से लेकर सेन्टियागो (चिली) तक 4,800 किलोमीटर का प्रदेश पश्कुटी के शासन में आ गया

पश्कुटी बहुत बुद्धिमान था विजय के बाद उसने अपने अधिकारियो को हुक्म दिया कि वे जीते हुए प्रदेश का निरीक्षण करके पूरा विवरण तैयार करें अधिकारियों ने जनगणना की और पशुओ को भी गिन डाला उनका विवरण मिलने पर सम्राट ने उसका अध्ययन किया और यह निर्णय किया कि नए प्रदेश म किस जगह नई राजधानी बननी चाहिए और उसी जगह अपने महल और मन्दिर बनाने का हुक्म दिया उसने अपनी प्रजा के लिए कर की दरें निश्चित की और यह नियम बनाया कि वे सही ढग से उपयोगी फसलें बोए तथा पशुपालन को महत्व दें

इकाओ को योजनाओ के विषय मे एक भी अक्षर नही लिखना पडा, क्योकि इका लोग अभी लिखना नही जानते थे और न उन्हे कागज या वृक्ष की छाल का ही पता था हाकिमो ने मिट्टी के माडल बनाए, जिनम जीते हुए प्रदेश की पर्वत-मालाए, नदिया, मनुष्य और जगल आदि दिखाए गए थे अब ये पर्वत, नदी, घाटी, ग्राम या मनुष्य और कितने हैं यह गिनने के लिए अधिकारियो ने 'क्विपू' का तरीका अपनाया क्विपू का अर्थ है—डोरे पर गाठ लगाना और इस प्रकार गणना के अनुसार गाठें लगाते जाना इस प्रकार ढेरो डोरे तैयार हुए इनमे भी गाठो की दूरी, उनके रग आदि के भिन्न अर्थ थे

वर्णमाला के आविष्कार से पहले मनुष्य को अपनी बात दूसरे देश तक पहु चाने मे कितना परिश्रम करना पडा !

इकाओ के पास न तो बैल थ और न घोडे ही, अभी वहाँ पहिए का आविष्कार भी नही हुआ था, इसलिए सबसे अधिक तेजी से सदेश ले जाने वाला, पैदल चलने वाला आदमी ही था इनके देश म ऊट से मिलता-जुलता एक जानवर लामा होता है यही इनका प्यारा पशु था अपने राज्य के दूर-दूर के प्रदेशो तक सन्देश ले जाने वाले आदमिया, सामान या सेना को जल्दी भेजने के लिए पश्कुटी ने सब जगह सडकें बनवाई

यही-कही पहाडो मे से गुजरने वाली सडकें सिर्फ तीन फीट चौडी थी मगर हैरानी की बात है कि इकाओ ने बिना किसी नक्शे के, एकदम सीधी और सपाट सडको

का जाल बिछा दिया इन सड़कों पर यात्रियों के लिए स्थान-स्थान पर विश्राम-गृह बने हुए थे

जब कोई सन्देश जल्दी पहुंचाना होता, तो लगातार 24 घण्टों तक एक से दूसरा सन्देशवाहक आगे बढ़ता जाता था हर मील पर सड़क के दोनों ओर दो छोटे-छोटे मकान बनाए जाते थे इनमें एक-एक नौजवान तैयार रहता था इनमें से एक आदमी यह ध्यान रखता था कि क्या दौड़ता हुआ कोई सन्देशवाहक आ रहा है जब आता हुआ सन्देशवाहक दिखाई पड़ता, तो दूसरा नौजवान अपने मकान से निकलकर उसके साथ-साथ दौड़ने लगता और रास्ते में सन्देश का ब्यौरा भी जान लेता उसे जरूरत होने पर 'क्विपू' भी दिए जाते उसके बाद वह दूसरे पड़ाव की ओर बड़ी तेजी से दौड़ पड़ता.

सेना का सामान लामा ढोते थे ये भार ढोने में बहुत मजबूत होते हैं लेकिन 50 किलोग्राम से अधिक वजन वे नहीं उठा सकते थे और वे दिन भर में केवल 10 मील चलते थे भार उठाकर ले जाने वाले काफिलों में कई सौ लामा होते थे

इंकाओं को खेती के लिए भूमि राजा की ओर से दी जाती थी परिवार में जितने लोग होते थे, उनके गुजारे के लिए काफी जमीन मिलती थी यदि किसी नए बच्चे का जन्म होता या किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती, तो भूमि की सीमा बढ़-घट जाती थी इंका लोग आलू, मक्का, मटर, टमाटर आदि की खेती करते थे

प्रत्येक इंका महिला कपड़ा बुनना जानती थी ये लोग सीधे-सादे कपड़े या चोगे पहनते थे कपड़ा काटकर सीना अभी इनके यहां शुरू नहीं हुआ था एक इतिहासकार का कहना है, इंका स्त्रियां आज की आधुनिक मशीनों से भी अधिक बारीक और बढ़िया सूत कातती थीं इनके करघे बहुत सादा किस्म के होते थे, फिर भी मामूली करघों से ये स्त्रियां तरह-तरह के डिजाइनों वाले बड़े ही सुन्दर रंग-बिरंगे कपड़े बुन लेती थीं

इंका पुरुष बरतन बनाने में होशियार थे वे बढ़िया प्याले और सुराहियां बनाते थे चांदी और सोने के गहने बनाने में भी वे कुशल थे

पश्कुटी का पोता, जो तीसरा सम्राट था, सन 1525 में मर गया इसके दो लड़के थे—हुआस्कार और अताहुआल्पा इन दोनों में सम्राट बनने की होड़ थी हुआस्कार कूस्को में सम्राट बन गया लेकिन इक्वेडोर की जनता ने अताहुआल्पा को सम्राट बना दिया. तब दोनों भाइयों में कई लड़ाइयां हुईं

इंकाओं का चेहरा मोहरा इण्डियनों जैसा लगता है इनके रीति-रिवाज इण्डियन थे ये लोग सूर्य की पूजा करते थे प्याले में आग जलाकर सूर्य की आराधना करते

थे इनका यह भी रिवाज था कि सुन्दर लडकियो का ब्याह सूर्य से किया जाता था इ्काग्रो मे अपने ढग की पगडी बाधने का रिवाज था और यह जरूरी था इका सम्राट और दूसरे धनवान लोग एक बार पहना हुआ कपडा दूसरी बार नही पहनते थे राजा के उस दिन के पहने कीमती कपडे शाम को जला दिए जाते थे और वह नए कपडे पहन लेता था

तीसरे इका सम्राट के बेटो मे जब आपसी लडाई चल रही थी और साम्राज्य टुकडे-टुकडे हो रहा था, तब स्पेन का एक यात्री फाँसिस्को पिजारो इस देश में पहुचा.

उसके साथ सिर्फ 180 साहसी साथी थे पिजारो ने हुआस्कार को कैद कर कत्ल कर डाला, फिर दूसरे भाई की भी बारी आई पर उसने कहा कि अगर उसे छोड दिया जाए, तो बदले मे वह जेल की कोठरी सोने से भर देगा पिजारो ने उसकी बात मान ली उसे खूब सोना मिला. फिर भी उसने अताहुआल्पा को धोखे से मार डाला और इस प्रकार मुट्ठी भर सैनिको की मदद से उसने विशाल इका साम्राज्य पर कब्जा कर लिया. इस तरह यह देश स्पेन के अधिकार मे आ गया.





खातू रावत

साँझ के सूरज का सिन्दूरी बिम्ब पश्चिम की पहाड़ियो से टकराकर टूट गया था घाटियो से उतरती हुई घनश्याम भीलनी-सी तमच्छाया मैदानो मे उतर आई थी दूर क्षितिज के कगार पर गोधूलि के आचल से बधा हुआ वैशाख का पल्लव उड रहा था धीमा और मादक वेणु-रव एक गहरी, रसीली और धारदार रात्रि के आगमन का सकेत दे रहा था—'सांवरें, धतूरे के बीज की तरह कड़वी और स्याह रात घिर आई है तू दूर है, क्योकि अब तेरी सासो की सुगन्धिया मन मे शोर नही मचाती तू पास है, क्योकि उस रात अपनी निराकुल अलको मे तूने बादलो के बोझ गूथ लिए थे ! . .'

सुहाग की साझ ही अपने पति के शव के समीप बैठी हुई खामोश कुलवधू की भाति अमावस्या जैसे अपने ही अचेतन मौन से डर रही थी

पहाडो के पैरो मे जहा पगडण्डिया एक-दूसरी के गले मे गलबाही डाले अगडाइया

रही थी, वहा गुफा मे भरे हुए पवन की तरह गुस्से से भरा हुआ खातू रावत अपनी बन्दूक साधे बैठा हुआ था।

और इस समय उसके मन मे प्रतप्त अहम् की एक पतली धार वह रही थी—खातू रावत मीणा का यह रोब! कुदरत भी डर के मारे बुत बन गई है! नीचे गागाखोह मे नाहर का गर्जन बन्द है और शेरनी नाहर की बजाय मेरे सग रहने को ललचा रही है!

खातू रावत ने काले कमल-सी बडी-बडी और खूख्वार अपनी आखो से राइफल पर निशाना देखा—दूर, मैदान जहा नीचे झुक गया था, हल्की-सी काली रेखा बन गई थी उसके ऊपर राख के रग की आसमान की किनार उठ रही थी खातू रावत के मन ने फैसला दिया—अब यदि कोई पगडण्डी से होकर मैदानी चढाव की राह आगे बढेगा तो राख की इस मन्द-धु धली रेखा पर धब्बे-सा उभर आएगा, उभर कर रह जाएगा! हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा

खातू रावत को नीचे, गागाखोह मे खल-खल सुनाई दी खोह के किनारे सिंह-सिंहनी लड रहे थे, क्योकि सिंह सिंहनी को सियार के हाथ सौप देना चाहता था लेकिन सिंहनी थी कि कायर को अपना पति मानने से इनकार कर रही थी. खातू रावत के जी मे आया, वह हसे, जोर-जोर से हसे, इतना हसे कि पगडण्डियो की गलबहिया छूट जाए और पहाडी खोहो मे पडे हुए सिन्दूरी सूरज के टुकडे जुड जाए.

खल-खल बन्द हो गई थी इससे उसे आभास हुआ, शेरनी शायद अकेली रह गई है और शेर उसे छोड कर सियारो के साथ चला गया है

जोलरधावडा की पगडण्डियो पर गोधूलि की छाया मे वेणु रव अब नही गू जता और न दूध की मटकी लिए राधा-सी गोरी भुनकी ही उधर आती है....शायद उसके भाई ने उसे बेच दिया है शायद उसका बाप उसे लेकर कही चला गया है!...
जोलरधावडा की लडकिया बेहद खूबसूरत होती हैं, क्योकि जोलरधावडा के मैदानी भांपो की कन्याए चांदनी का दूध पीती है और पलाश वनो की एकान्त झीलो में नहाती है लेकिन नारसिंगी (सिंहवाहिनी देवी) का भोपा कहता है, उन्हें देवी का शाप है कि उनमे से एक भी जवान नहीं होगी जवान होने से पहले ही उन्हे बेच दिया जाता है, क्योकि जोलरधावडा अकाल और भुखमरी का घर है, इसलिए जोलरधावडा के पुरुष सामन्त और महाजन से तग आकर वनो मे भाग जाते हैं जहा वे खातू रावत के गिरोह मे शामिल हो जाते है और जोलरधावडा की लडकिया या तो रोटी के एवज पेट की आग मे झोक दी जाती हैं, या काठल मालवा की ओर वे स्वय भाग जाती हैं, जहां कोसो तक काली माटी के हरियाले खेतो मे गेहू, गन्ना, अफीम, कपास, तिल और तम्बाकू की फसलें पहाडी झरनो और

मदमाती नदियों की आवाज पर ताल देती हैं दरअसल जोलरधावडा की सुन्दरता को महाजन का लोभ निगल गया है, या शोषण के नाग ने उसे छीन कर अपने माथे की मणि बना लिया है

नाग के पास इस मणि को देखकर खातू रावत के मन मे ईर्ष्या होती है पहले तो वह चुपचाप इस मणि को देखता है, फिर उसे विस्मय होता है, फिर मन म एक प्रश्न उठता है—रूप क्या जहर के पहरे मे ही रक्षित रह सकता है ? फिर नाग के विरुद्ध ईर्ष्या के घटा टोप से उसका मानस घिर जाता है फिर वह नाग से मणि छीन लेने की कोशिश म रहता है और उसे मार डालने के मौके की तलाश मे धाय धाय.. !

ज्यो ही खातू रावत को महसूस हुआ, राख की रेखा पर एक धब्बा उठा है, कन्धे पर जिसके लाठी है, उसने राइफल का घोडा दबा दिया और जोलरधावडा की खूबसूरती और जोलरधावडा की भुखमरी, दोनो को भूलकर वह अपनी राइफल की गोली की दिशा मे आगे बढ़ गया

मैदानी ढाल की काली परिधि के सिरे पर राख की रेखा बहुत विस्तृत हो गयी है और गोली के धुए ने उसे और भी बढा दिया है ! . लाठी एक ओर पड़ी है एक ओर एक धब्बा पडा है और एक छाया उसके पास मे बैठी है—समोसाफ ही चूड़ियां जिसकी फूट गई हो उस कुआरी सुहागन विधवा की तरह !

सिर झुकाए बैठी उस छाया ने अपने पीछे उठने वाले खातू रावत के पदचाप पर ध्यान नहीं दिया और वह अपने सुहाग की लालिमा से काल की कालिमा की गोद भर चुपचाप बैठी रही न हिली, न डुली

राइफल का कुन्दा जमीन पर छुपाए और उसके सिरे पर अपने हाथ धरे और हाथो पर ठोढी टिकाए खातू रावत बडी देर तक उस छाया की प्रशस्त पीठ रहा, जोलर-धावडा के भाग्य ने जिसे गढकर भुखमरी के हाथ बेच दिया था !

खातू रावत का गुस्सा ठण्डा हो गया था और ठण्डा होकर भी भारी हो गया था लेकिन वह अब भी वैसा ही खडा था—खामोश और उदास

जब उसके मन को यह समाधि असह्य हुई उसने अपने सिहकण्ठ से मेमने के स्वर म पुकारा—'चुनकी !'

वह कुछ नहीं बोली

'चुनकी !'

वह वैसी ही बैठी रही

'चुनकी !'

सहसा आंधी की तरह वह उठी और खातू रावत के वज्रवक्ष पर अपने घूसे स वार करने लगी

'मुझे फूल मत मार, चुनकी !'

उत्तर—'मैं तुझे मार डालूंगी !'

हवाओ के बन्ध खुल गए थे और अब वे उड-उडकर पहाडियो की दीवारो पर किरण की कूचियो से अपने प्रेमियो के नाम लिख रही थी गागाखोह के तट पर एकाकिनी सिहनी अकेली बैठी थी और जोलरधावडा की मुसमरी उसके पास मडरा रही थी सियारो की जमात मे चली जाने के लिए उसे लुभा रही थी !

पहले रात्र की रेखा को बारूद के धुए ने अपने आवरण मे छिपा लिया फिर गरम बारूद और गरम खून उछला चुनकी के आसू उन दोनो की समाधि पर न गिरकर खातू रावत के सीने पर गिरे !

आसू से भीगे कपोलो को चूमकर खातू रावत ने दोनो हाथो म धरती से कुछ उठी चुनकी की ओर देखा वह पूछ रही थी—

'तूने इसकी हत्या क्यो की ?'

'यह कायर था'

'तू बडा मर्द है !'

यह, गोगला, मेरा अपराधी है, क्योकि यह वचनहार है

'कैसे ?'

'इसने वचन दिया था'

'तुझे ?'

'हा, कि यह मेरी चुनकी को कोतवाल के पास नही भेजेगा'

'इसने नही भेजा'

'खा बावजी के देवरे के पास, मोटे आम्ब के नीचे, तम्बू तानकर कोतवाल गूलर की दारू पी रहा है यह गोगला तुझे वही ले जा रहा था'

'इसीलिए तूने इसे मार डाला ?' चुनकी छटक कर खडी हो गई और उसने झुक कर गोगला का मुह देखना चाहा.

'न देख उसका मुह, तुझे पाप लगेगा !'

मुझे पाप लगेगा तेरा मुह देखने पर !'

'हा—हा—हा !'

तू डाकू है .मिनखमार है हत्यारा है !'

'सो तो सारी दुनिया कहती है'

'अब तू चला जा'

'लेकिन तू जानती है, मैं तुझे चाहता हू !'

'खातू, तेरे सात-सात औरतें हैं, फिर भी तेरी प्यास नही बुझी ?'

'तब तक नही बुझेगी, जब तक चुनकी मेरी आठवी औरत नही बन जाती !'

'..... .....'

'चुनकी !'

'दुनिया क्या कहेगी ?'

'यही कि सिंघनी सियार के पास नही रही !'

'अच्छा, अब मुझे जाने दे मोटे आम्बे के नीचे कोतवाल मेरी राह देख रहा होगा !'—चुनकी ने उसे चिढाकर कहा

'मैं कोतवाल को पकड कर बाघ लू गा'

'क्यो ?' इस 'क्यो' म चुनकी की कई कामनाए छिपी थी

'कोतवाल को पेड से बाध दू गा और चुनकी, उसके आसुओ से तेरे पैर धुलाऊगा'

'आखा तीज की रात मैं तेरे पास चली आऊगी' अधेरे म चुनकी के दात खातू रावत के भाग्य की तरह चमक उठे पहले वह मुस्कराई, फिर हसी और हसते-हसते भाग गई

खातू रावत के सात औरतें हैं

उन सातो सुन्दरियो मे वह पुरुषसिंह अपने पौरुष के बल पर शोभा देता है बडी-बडी, बहुत लम्बी घनी काली मू छें, बडी-बडी, बहुत बडी आखें और उनम तैरते लाल-लाल डोरे काठल के राजा धरती के धणी उदैसिंह जैसा बडा उसका चेहरा बलिष्ठ उसकी भुजाए, विशाल, अपरम्पार उसकी छाती, चौडाई जिसकी इतनी कि चाहे तो दो-दो औरतो को एक साथ इस छाती स चिपटा ले कद लम्बा, ऐसा कि जिसकी बराबरी मे लम्बा आदमी भी ठिगना दिखाई दे

उछल कर जब खातू रावत अपने काठियावाडी अबलक घाडे पर बैठता है तो घोडे की पीठ झुक जाती है घोडा उछलता है और उसके खुरो से जमीन मे गड्ढे पड जाते हैं इस दृश्य को मगरे के झोपडो और झापो के अधखुले द्वार पर खडी हुई औरतें, नौजवान लडकिया और नवपरिणिताए घू घट की ओर से झाक-झाक कर देखती हैं और उन सबके मन मे एक तहलका मच जाता है भरी दोपहरी मे सूनी मसजिद म अजान देते मुल्ला की आवाज की तरह एक परवश, प्यासी और उदास आवाज उनके मनो मे घबराकर वात्याचक्र की तरह गोल-गोल घूम जाती है उस

पर घोडा जब हिनहिनाता है, तो अन्तर और बाह्य की सारी आवाजों को ढक कर बाढ की धारा या हवा की बलवन्ती लहर की तरह सर से ऊपर होकर निकल जाती है और खेगा तलाब की तरगो मे एक हलकी डुबकी लेती हुई पहाडियो की चोटी पर जा बैठती है, मानो वहा बैठ कर यह आवाज अब अपने बाल सूखा रही है

लेकिन चाहे खातू रावत राजा उदैसिह जैसा हो, चाहे उसके घर मे सात-सात सिंहनिया हो और चाहे उसकी बन्दूक का निशाना अचूक हो और चाहे उसकी तलवार की धार इस तरह चमकती हो, मानो उस पर चीटियो की अनन्त सेनाए चल रही हो, फिर भी खातू रावत लोक मे बुरा है, बदनाम है, कुख्यात है उसके नाम से लोग डरते है. थानेदार थर-थर कापते हैं. पुलिस के सिपाही तो उसका हुक्म बजा लाने मे अपना अहोभाग्य मानते है देश-परदेश की सुन्दरियां उसकी स्त्रियो से ईर्ष्या करती हैं उसकी जाति वाले उसका लोहा मानते है उसको अपना नेता मानते हैं अपने त्राता के रूप मे पहचानते हैं मगर एक भयकर दबदबा अपने मन-प्राण पर पड़ता देते हुए पाते हैं. क्योकि जब वह दूर रहता है, तब उनको ऐसा बोध होता है मानो वे मुक्त हैं, निर्भय है, और जैसे शेर की एक ऐसी माद के सामने खड़े है, जिसमे शेर नही है

यह सब—यह रोब, यह दबदबा, यह भय और यह दिल दहलाने वाले आतक—इसलिए कि खातू रावत डाकू है, लुटेरा है 'मिनखमार' हत्यारा है उसने आज तक जितनी हत्याए की, उतनी से तो एक अच्छा-सा गाव बस सकता है खातू रावत की बिरादरी और बिरादरी के निकट के जवामर्दों को, जो चाहे जिस औरत को उडा लाने मे सिद्धहस्त हैं, चाहे जिस जगह चोरी कर सकते हैं और महाजन बनियों को पूर्व सूचना देकर डाका डालते हैं और उडती चिड़िया को गुलेल के चक्कर से मारते हैं और भालू-चीते को अकेले ही लाठी से मार कर गिरा देते है, इस कानूनी सचाई पर गर्व है कि उनके नायक और बे-ताज के बादशाह खातू रावत की तस्वीर जयपुर मे पुलिस के बडे जण्डल के कमरे मे लगी हुई है और मन्त्रीजी ने एक लाख रुपए का इनाम उसे पकडने वाले के लिए सुरक्षित रखा है.

लेकिन खातू रावत का कहना है कि दुनिया ने उसे नही पहचाना. क्या मैंने आज तक किसी गरीब को कभी सताया है ? लूटा है, तो सब कुछ बाट भी दिया है. लिया है, तो दे भी दिया है खातू रावत के पास तो अपने काठियावाडी घोडे, एजण्ट साब (पोलिटिकल एजेण्ट) से छीनी हुई बन्दूक और सिरोही की इस तलवार के अलावा कुछ भी नही है कुछ भी धन नही है.

हा, धन भी है—रमणी-धन !

सात-सात पत्नियां, एक से एक सुन्दर, एक से एक सुनहरी, एक से एक चढती-

बढती, मानो इन्द्र धनुष ने सातो रगो की खुमारिया हैं और नीलाम्बर खातू रावत का मुक्त मन है

उसकी सबसे बडी औरत मगली मेहदी-खेडा की ठकुराइन की बहन थी गाव के तालाब मे नहा रही थी और वह उसी गाव के तालाब मे अपने घोडे को पानी पिला रहा था मगली ने खातू रावत को देखा खातू रावत ने मगली को देखा उसने इसकी आखे देखी—कानो तक पहुची बडी-बडी आखें इसने उसकी मू छे देखी—कानो को छूती बडी-बडी मू छे खातू रावत पराई स्त्रियो पर आख नही उठाता, इसलिए पहले उसने नही देखा, मेहदीखेडा की ठकुराइन ने बहुत शोर-गुल मचाया लेकिन उसके चचेरे भाइयो ने उसे समझाकर शान्त कर दिया, 'मगली की शादी कही अपनी जाति मे करोगी, तो दस हजार का दहेज देना पडेगा, तुम समझो मर गई'

दूसरी पत्नी बदली थी उसका असली नाम तो मन्नु था, किन्तु खातू रावत ने उसके तन की सावरी नीलिमा निहारकर उसका नाम 'बदली' रख दिया था बदली को वह बाकायदा ब्याहकर लाया था और इस ब्याह म दो सौ गाडिया भर लोग-लुगाई और दो हजार घुडसवार साथी बारात मे गए थे खातू रावत का खर्च अधिक नही हुआ था, यही पानमोडी गाव के मसाराम महाजन की हवेली रात भर लुटती रही थी और काना-फूसी के घटना-विशारदो का कहना है कि दस चरवा सोने की मुहरें भी लुटेरो को मिली थी

तीसरी औरत कडकी थी वह गाव के कमेनी की बेटी थी और लालपुरा की रहने वाली थी, इसलिए बेहद खूबसूरत थी उससे खातू का प्रथम मिलन कुछ उसी प्रकार हुआ, जिस प्रकार शान्तनु का मत्स्यगन्धा से हुआ था खातू रावत ने कडकी के बाप की सभी शर्तें मान ली थी चाँदी की मुहरो से कडकी के भाइयो के मुह बन्द कर खातू रावत पैसे की पालकी मे कडकी को बिठा कर अपनी मडी म ले आया था

चू कि इन तीनो के अभी कोई बच्चा नही हुआ था खातू रावत चौथी को लाया लेकिन तीनो की सलाह से, वे कुछ कम चतुर नही थी एक दिन अपने मालिक स बोली—"चौथी शादी कर लो, नही तो सारी जमीन-जायदाद सौतेले भाइयो के हाथो मे चली जाएगी और बुढापे मे हम पानी कौन देगा ?"

इसलिए खातू रावत ने चौथी लडकी से ब्याह तो नही किया, नातरा किया वह दूर के उसके बडे भाई की औरत थी और सुहाग की रात ही विधवा हो गई थी चू कि खातू रावत उम्र मे छोटा था इसलिए बडे भाई की औरत को रख सकता था

लेकिन जिस साल खातू रावत ने मझ रात म नारसिंगी देवी की मनौती ली और

वह झण्डे वाले नए राजा की जेल से सकुशल भागने मे सफल हो गया उसने रातो-रात दौड़ते हुए सीधे नारसिंगी देवी के दरबार मे शरण ली और वही देवी को अपनी बेडिया चढाई दूसरी सुबह वह देवी को चढाने के लिए बकरे और पाडे की तलाश मे भटक रहा था कि गागाखोह मे जामूकूडी को पार कर दच्चा माता-सी खूबसूरत एक लडकी उसे मिली बडे महुए के नीचे महुए ढूढकर बडी उतावली मे खा रही थी भूख की पीर का एक-एक पल उसके गोरे मुखड पर अकित था खातू रावत को दया आ गई उसके मन के रेगिस्तान के नितान्त एकान्त कोने की काली पथरीली चट्टान से दूध की धारा बह निकली । पीपल का अनि नन्हा एक अकुर फूट आया ।

लोग कहते हैं, महुए वाली गोरी लडकी खातू रावत की मेडी पर आने के बाद से ही खातू रावत सिर्फ मालदारो को लूटने लगा है । गोरी की भूख खातू रावत के मन की सहस्र जिह्वाओ वाली आग्नेय प्रतिहिंसा बन गई है

गोरी के आगमन के उपरान्त खातू रावत का चमन लहलहा उठा ! घर म, झापो मे पालने झूलने लगे और खलिहानो तक लोरिया गूज उठी पन्द्रह या बीस बरस बीतते मगली से लेकर गोरी की कोख से जन्मे उसके बच्चे और नाती-पोतो का पूरा एक गाव, घाटी की उतराई के पार मैदान मे बस गया ऊचे पहाड पर अपनी गुप्त गुफा के द्वार पर बैठा खातू रावत गाव को, बच्चो को, घूघट वाली पनिहा-रिन बहुओ को, तेल-पिलाए काले लट्ठ कन्धे पर लिए, जिनकी मूछो की रेख अभी नही उतरी, ऐसे जवान बेटो को और धूल भरी पगडण्डियो पर रेंगते-रोते खलत पोतो को देखता और मन के दूध की धार और तेज हो जाती और नन्हे पीपल पर एक और नया पत्ता आ जाता

खातू रावत पाचवी बार जब जेल तोडकर भागा था, तब सदा की तरह अकेला पैदल या किसी साथी के साथ नही था इस बार उसके लिए दो-तीन बढिया घोडियो का इन्तजाम किया गया था क्योकि दाढी वाले जेलर हुसैन अहमद की मनचली बेटी गुलबदन को वह अपने साथ लाया था अथवा यो कह, गुलबदन उसे उडाकर उसके गाव ले आई थी

खातू की सभी औरतो मे गुलबदन ही सबसे ज्यादा फैशन-परस्त थी यो कहे, गुलबदन के आने पर ही खातू की औरतो ने केश सवारना सीखा और काजल-सुरमे की लकीरो ने उनके बडे लोचनो की कथाए कानो तक अकित कर दी अगर खातू की औरतो मे कोई उस पर जान देती थी, तो गुलबदन !

सातवी सबसे छोटी, धोगली थी आमलीमेडा के भामरिया चरपोटा की लडकी थी एक साल सूखे के समय, गांव के सभी देवी-देवताओ को गोबर से ढक देने पर भी जब पानी न बरसा और 'गादी-माराज' की झण्डे वाली सरकार से भी कुछ

महगी शराब पीता और एक हाथ से मूछो की नोक सवारता रहता जब वह पूरी मस्ती मे आता जाता, तो सातो औरतो को नाचने का आदेश देता

इनाम मे एक-एक प्याली दारू पाकर घूघट म चाद खिलाए, बीच आगन म आती और घेरा बनाकर धीमे धीमे नाच की शुरुआत करती खातू रावन बहुत खुश होता, कवायद के फौजी अफसर की तरह अपनी साना स्त्रियो को सही ढग से नाचने के लिए प्रेरित करता और उनकी त्रुटिया बताता।

धीमे बहुत धीमे स्वर म गीत उगेर (आरम्भ) कर सातो स्त्रिया मथर गति मे नाचती इस नाच को देखकर खातू रावत को अनन्त तृप्ति मिलती तब वह अपने कमाण्डर इन चीफ राजिया बूज की पसली म गुदगुदी चलाकर कहता—'ये राडें नाचना क्या जानें ! बूज, मैने सिखाया इन्हे नाच और माच ! स्त्रियो की ओर सकेत कर वह कहता—'मेरे सम्पर्क से ही इनके अगो म लोच आई है !' फिर बूज और उसका मालिक, दोनो मिलाकर अट्टहास करते बूज अच्छी तरह जानता था कब किस जगह से, क्यो और कैसे खातू रावत इन सुन्दरियो को लाया है और कैसे वह अपने मालिक को खुश रख सकता है

अपने ड गराट से उछलकर, वह सबसे पहले मगली पर अपने गले का सोने का कठहार न्यौछावर करता उसके बाद प्रत्येक सुन्दरी पर एक-एक आभूषण बाटता

रात की चाल पूरे वेग पर थी

'उदैसिह राजा की पदमणी', पुखराज के मुखडे-सा अक्षयतृतीया का चाद, बादलो की पारदर्शक लहरो म झिलमिला रहा था। सातवी पत्नी चोगली पर बडी-सी अगूठी न्यौछावर कर खातू रावत ने ढोलिन की ओर फेंक दी थी और अब वह फिर से अपने ड गराट पर बैठकर मुस्करा रहा था हल्दीघाटी म मीणो के बरसते तीरो की तरह खातू रावत के मस्तिष्क मे कई ख्याल उमड रहे थे

सामने नायलोन के लाल लुगडे मे सजी चचल चोगली ऐसी सुन्दर लग रही थी, मानो जिलेटिन कागज से ढकी पुस्तक के आवरण की तसवीर की कोई अप्सरा हो ! जितनी चचल उसकी प्रकृति थी, उतने चचल उसके सुलोचन थे और जितने चचल थे सुलोचन, उनसे कही अधिक चचल थी उसकी पद-गति मेवाड की अलबेली ढोलिनो के मादक कण्ठ से आसावरी थाट म दरबारी कान्हड़ा के बोल मध्य रात्रि की अलमस्त घडियो को और भी अधिक उन्मत्त बना रहे थे ढोलिनो के नाजुक कण्ठ मे रस की बू दो के समान झरते आरोह के स्वर ज्वार की तरह चाद के मुख का चुम्बन कर रहे थे

खातू रावत के निकट बोतलो का ढेर लगा था—प्याले म चाद डूबता नजर आ रहा था और जैसे कभी-कभी टूटता तारा प्याल मे ओझल हो जाता

इस पर चोगली एक और पात्र भर लाई थी, 'लो, आरोगो !'

खातू रावत ने यह पात्र अस्वीकार कर दिया, तो चोगली ने ठुनक कर ताना दिया—'आज मेरी मनुहार का अन्तिम अवसर है. मझरात हो गई, अब वह आने वाली है, फिर तो उसी के हाथों पीना और खूब जीना !'

खातू रावत पी गया ! पात्र फेंक कर बोला, 'इस पात्तर से ज्यादा नशा तुझमें है, चोगली !'

'तो मुझे भी पी जाओ !"

सुनकर सभी दर्शक हंस दिए खातू रावत भी मुस्कराया, लेकिन वह अपने आप में नहीं था एक विस्मृति-सी छा रही थी. उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्यों हंस रहा है

शायद इसलिए कि सामने चुनवी हंस रही है घुंघरू बांधनी हुई वह उसकी ओर देख रही है और खातू रावत उसे देख रहा है और वह उसे देख रही है .. लेकिन नहीं यह चोगली है . यह चोगली है

खातू रावत ने अचानक अपने डंगराट से उठकर कहा, 'मेरा घोड़ा लाओ !'

तीन-चार सेवक दौड़े खातू की कमर पर बंधे केसरिया पट्टे पर भगली ने तलवार बांध दी उछलता हुआ अबलख आया और एक छलांग में उस पर सवार होकर खातू हवा हो गया

खेड़े में राग-रंग वैसा ही चलता रहा

घोड़े की धनवती टापें मानो तूफानी हवाओं की हथेलियों पर गिर रही हों, इस प्रकार वेगपूर्वक वे चुनवी के कानों तक पहुंची घाटियां उनसे घनाघन गूंज रही थीं और गुंजन ऐसा अदूर लग रहा था, मानो चुनवी की झोंपड़ी के नीचे की गैल पर ही घोड़ा दौड़ रहा है.

अपनी पथारी से उठकर चुनवी बाहर आ गई ज्योंही उसने झोंपड़ी का द्वार खोला, खातू इस तरह भीतर आ गया, मानो, बड़ी देर से बाहर खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था.

दिन भर के द्वन्द्व के बाद चुनवी की आंख जरा झपक गई थी. वह थकी-थकी-सी थी आज दिन भर से उसने कुछ भी नहीं खाया था जौनरघाटवा की इन गरवनी पहाड़ियों में अन्न का दाना कंकर बन गया था और वैसे भी चुनवी का मन बोझिल-बोझिल और सहमा सहमा-सा था उसके मानस की दूधिया चट्टानों की अन्तहीन मालाओं के ऊपर के मध्य एक झीनी चांदी के तार-सी दुबली-पतली रेखा जाने कहां से वह आई थी और उसकी गति ने उसके बहाव ने जैसे चुनवी

'मेरी माया तेरे साथ है, रावत !'

'अच्छा !' कह कर सातू रावत ने एक लम्बी और गहरी सास ली अपने जीवन मे आज तक वह अकेला और असफल नही लौटा था

'तू आईमाता का अवतार है !'—कह कर सातू रावत झुका और चुनकी के पैरों की धूल उसने अपने साफे के छोर पर बांध ली

फिर उस 'डाकू' की आखे डबडबा आई, तुरन्त इसलिए वह दौड़ा और अबलक पर सवार हो गया

बडी देर घोडे की टापो से घाटिया गूजती रही और वह आवाज चुनकी के मन की सुकोमल पहाडियो मे प्रतिध्वनित होती रही

चाद के टुकडे की तरह चुनकी धरती पर गिर पडी

गिर पडी और रोती रही... रोती रही !

उस दिन के बाद इलाके मे डकैतिया बन्द हो गई लोगो ने इतना ही कहा—

'सातू रावत अब थक गया है !'



आदिवासियों के तीर्थ स्थल गौतमनाथ-मन्दिर
सीतामाता मन्दिर





भील-मीणा युवतियां



सीतामाता का घना जंगल

०दुल्हा दुल्हन को कंधे पर उठाकर नृत्य०

प्रेम की मुस्कान



आजीविका का साधनः वन सम्पदा



सागवान की इमारती



ती



समस्याएं और समाधान

एक सैद्धान्तिक विश्लेषण

अपराध-प्रवृत्ति

आए दिन हम समाचार-पत्रों में पढ़ते ही रहते हैं कि अमुक भील ने अमुक व्यक्ति को जान से मार दिया या अमुक मीणा-युवती के लिए मीलो के दो गुटों में झगडा। अथवा मीणा-नौजवानों ने मिलकर एक महाजन को दिगंबर बनाकर, उसका सर्वस्व लूट लिया।

आदिवासियों की इस अपराध-प्रवृत्ति के कारण क्या हो सकते हैं ? इनमे अधिकतर झगडा किस बात के लिए होता है ? क्या आदिवासी जन्मजात अपराधी होते हैं ?

प्रतापगढ क्षेत्र में पुलिस उपअधीक्षक ज्ञानचन्द गुप्ता ने बताया था—'हाल ही मे ग्राम गधेर में बायरू चमार की हत्या के आरोप में कालू मीणा को उसकी पत्नी, दो लडके और एक लडकी सहित गिरफ्तार किया गया और न्यायिक हिरासत मे भेज दिया गया हत्या का कारण जमीन का झगडा था।

'जाखम थानान्तर्गत देवगढ़ ग्राम के दो व्यक्तियों को केसरपुरा निवासी जीवला मीणा की हत्या के आरोप मे गिरफ्तार किया गया मुल्जिमों से तलवार एवं बंदूक बराम द की गई इस मामले में औरत को लेकर झगडा हुआ था और तलवार से जीवला मीणा की हत्या की गई।

इस तरह आदिवासियों में आपसी संघर्ष चलते ही रहते है बात-बात पर झगडे फिर कानून के कटघरे में। वकीलों के चक्कर मे तो इनका रहा-सहा भी लुट जाता है यह बात कितनी हास्यास्पद लगती है कि भील-मीणा दो-चार सौ रुपए की बकरी के लिए दो-दो साल तक केस लडता रहता है पैसा और समय तो बर्बाद होता है, मानसिक अशांति से मजदूरी करने के लायक भी नही रहता है।

■

मालवा-मेवाड, डूंगरपुर बांसवाडा जैसे आदिवासी क्षेत्रों में मैं गई हूं घने वनों में स्थित टापरो (घरों) में रहने वाले भीलों से मैंने बातें की हैं चर्चाएं की हैं इन क्षेत्रों के पुलिस अधिकारियों से भी मिली हूं आदिवासियों की अपराध प्रवृत्ति के बारे में उनसे बातचीत की है और जो जवाब मुझे मिले है जो कुछ मैंने अनुभव किया है, वह सचमुच दर्दनाक, रोमांचक और विस्मयजनक है।

वैमनस्य का कारण

आदिवासियों के आपसी वैमनस्य का मूल कारण है—जर, जोरू और जमीन। इनमे जोरू खास अहमियत रखती है

माता-पिता अपनी पुत्रियों का तब तक विवाह नही करते जब तक उन्हे दहेज न मिल जाए यही कारण है कि भील या मीणा युवती का विवाह अधिक उम्र में होता है वर पक्ष से कन्या-मूल्य तय होने के बाद ही विवाह संभव है झगडे की शुरुआत यहीं से आरम्भ हो जाती है

जो युवक किसी युवती से प्रेम करने के बावजुद भी आर्थिक कठिनाइयो के कारण विवाह नही कर पाता, वह युवती को (बिना कन्या-मूल्य दिए) भगा ले जाता है युवती का पिता यह नुक्सान कदापि बर्दाश्त नही कर पाता और युवक से हर हालत मे पैसे वसूलने के लिए पहु च जाता है. तब ऐसी स्थिति मे उनमे झगडा ठन जाता है।

पत्नी का स्वतन्त्र विचारो का हिमायती होना या चरित्र के प्रति सदेह, पति का पहले से ही विवाहित होना या पति का शारीरिक रूप से कमजोर होना अथवा श्रम से जी चुराना, ये कारण ऐसे हैं, जो पति-पत्नि के बीच अनबन पैदा करते हैं वैवाहिक जीवन म कटुता आ जाती है। ..झगडा बढ जाता है, तो पत्नी अपने पति को छोडकर, पिता के घर चली जाती है और पिता उसके 'नातरे' की व्यवस्था म लग जाता है कभी-कभी ऐसा भी होता है, जब पत्नी पति को छोडकर स्वय ही किसी दूसरे के यहा नातरे चली जाती है लेकिन उस व्यक्ति का घर आस-पास ही हो या निकट के पाल मे हो, तब झगड़े की सभावना बढ़ जाती है।

और जब ये झगडे सुलझते नही, तो लाठिया चल जाती है, सिर फूट जाते हैं, खून-खराबा हो जाता है.

यौन-अपराध भील-मीणा जाति मे अक्सर होते रहते हैं. पति अपनी एक-दो या अधिक पत्नियां होने के बाद भी दूसरी युवतियो से सम्पर्क रखता है लेकिन इन बातो को भील जाति मे इतनी हेय दृष्टि से नही देखा जाता, जितना कि सभ्य जातियो म।

आर्थिक कठिनाइयो के कारण विवाह नहीं कर पाते, तब मजबूर होकर वे अपनी प्रेमिका को भगा ले जाने का (बिना कन्या मूल्य चुकाए) विचार करता है.

शहरी चमक-दमक

सरकारी राहत कार्यों और अनेक निर्माण कार्यों के कारण भील-मीणो का शहरी-सम्पर्क बढता जा रहा है जहा एक ओर इससे इन्हे रोजगार उपलब्ध हुए है, वहीं दूसरी ओर इनकी लालसाए बढी हैं. शहरी चमक-दमक और विभिन्न साधनों-सुविधाओ ने इन्हें आकर्षित किया है जिन्हे हासिल करने के लिए ये किसी भी कीमत पर तैयार रहते हैं युवतियां शृ गार सामग्री (सुगधित साबुन-तेल, पाउडर, रूमाल, मोतियो का हार, रेशमी वस्त्र आदि) पर अधिक आकर्षित रहती हैं लेकिन सीमित आय के कारण इन कीमती चीजो को खरीदने मे असमर्थ रहती हैं और इस कारण भी इनम अपराध-प्रवृत्ति जन्म ले लेती हैं राहत कार्यों मे सलग्न कुछ चरित्रहीन ठेकेदार, मिस्त्री, दलाल आदि ऐसी महिलाओं की मजबूरियो का फायदा उठाकर, अपनी वासना का शिकार बनाते हैं पति या मां-बाप को इन बातो की खबर मिलने

ही घर मे सघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और उस महिला को फिर तो मा-बाप का घर छोडना पडता है या पति का घर।

लेकिन सभी भील-मीणा युवतिया ऐसी नही होती कि मजबूरी मे अपना सर्वस्व सौप दे. बडे से बडा लालच भी पतिव्रता भील नारी को नारी-धर्म से विचलित नही कर सकता हाल ही मे (1981) गौतमनाथ के मेले मे (अरनोद) कुछ आदिवासी मीणा-युवतियो ने, छेडछाड करने पर कुछ युवको की जमकर पिटाई कर दी थी

आर्थिक दबाव

कई प्रातो मे आदिवासियो की आर्थिक हालत निरतर गिरती जा रही है समाज का सभ्य कहलाने वाला वर्ग सशक्त होता जा रहा है आदिवासी-पचायतो पर इन उच्च *वर्ग या वर्गों का निरकुश शासन है इस कारण आदिवासियो के नाम पर अपना* स्वार्थ पूरा कर रहे हैं बडी हिमाकत और दुख के साथ यह लिख रही हू कि गरीब आदिवासी महिला को 'घर' से 'बाजार' तक पहुचाने तक की राह एक सुनिश्चित तरीके से बनाई गई है आदिवासी अपनी गरीबी के लिए स्वय भी जिम्मेदार हैं विवाह, भोज, शराब, तीज-त्योहार, इनकी आर्थिक दुरावस्था के लिए जिम्मेदार है *एक बार वह कर्जदार हो गया, तो जिदगी भर चुकाता ही रहेगा* फिर उसे अपनी जमीन गिरवी रखनी पडती है या किसी उच्च वर्ग के खेतो म बधक मजदूरी ! यानी उसे कभी अपने श्रम का पूरा पारिश्रमिक नही मिल पाता है तब ऐसे परिवार की महिला से, उसके शोषक वर्ग द्वारा लाभ उठाने की कोशिश शुरू हो जाती ह इसके लिए पहले वह बार-बार ऋण का तकाजा करता है पाव का गमेती राह म रोडे अटकाता है, या पैसे की शक्ति से उसके मुह पर ताला लगा दिया जाता है आखिर वह महिला मजबूर हो जाती है—पहाडी से मैदानी इलाको मे जाकर अपना तन बेचने को ! विकट आर्थिक कठिनाइया उनके स्वाभिमान को नष्ट कर देती हैं, मान-सिक सतुलन को असतुलित कर देती है, फिर यदि पैर डगमगा जाए, तो दोष आदिवासियो को नही दिया जा सकता !

पाडलिया गाव मे मेरी मुलाकात एक आदिवासी युवक अर्जुन मीणा से हुई वह खेती करता है और खुशी के गीत गाता है जैसे निराशा का उसके जीवन से कोई सबध ही न हो उसके दादाजी वजिगा प्रतापगढ रियासत के मशहूर डाकू थे जिनके बारे मे कहा जाता है कि तत्कालीन राजा रामसिह (दरबार) के सैकडो सिपाही बारह बरस तक उन्हे गिरफ्तार न कर सके. वजिगा का नाम इस क्षेत्र के आदिवासी बडी श्रद्धा से लेते हैं क्योकि उन्होने सारा जीवन अपने आदिवासी-भाइयो की भलाई के लिए होम दिया उन्होने कई बडे-बडे डाके डाले, लेकिन सिर्फ अपनी जाति क शोषक-वर्गो के यहा और डाके म जो भी प्राप्त हुआ, उसे सबम बराबर बाट दिया उन्होंने कभी किसी का दिल नही दुखाया और न ही किसी पर अकारण हमला किया

ऱजिगा से 'डाकू' बनने का कारण पूछा, तो उन्होंने बताया कि जाति भाइयों में फैली मुखमरी और महाजनों द्वारा किए जाने वाले शोषण ने ही डाकू बनने के लिए मजबूर किया।

अभी वजिगा ने अपनी जिंदगी के 98 वर्ष में प्रवेश किया है उनसे आदिवासियों की समस्याओं और परेशानियों के बारे में पूछा, तो उन्होंने बड़े दुखी स्वर में बताया, '1857 की क्रान्ति में हमारे ही भाइयों ने, पूर्वजों ने अंग्रेजों को नाकों चने चबा दिए थे, लेकिन इस देशभक्ति का पुरस्कार उन्हें यह मिला कि हर आदिवासी दर-दर की ठोकरें खा रहा है और जिन बनिए-महाजनों ने उस वक्त अंग्रेजों का भरपूर साथ दिया, तो उन्हें 'देशद्रोही' का पुरस्कार यह मिला कि आज उनके पास पैसा है जमीन है, बड़ी-बड़ी हवेलियां हैं उन्हें कोई कमी नहीं, किसी बात की चिंता नहीं !....यह असमानता क्यों ? हम लोगों के साथ सौतेला व्यवहार क्यों ? सरकार जो भी कुछ करती है, उसका पूरा लाभ हमें नहीं मिल पाता ये 'बीच के लोग बीच में ही 'हजम' कर जाते हैं मुझे तो डर लगता है कि भूख से मजबूर मेरे आदिवासी भाई 'डाकू' न बन जाएं ! 'रोटी' के लिए 'क्रांति' न कर दें ! छोटी-मोटी लूटपाट की घटनाएं तो होती रहती हैं !....

वजिगा ने आगे कहा, 'एक बात मैं आपको बता दूं—आजकल हमारी लड़कियां गायब होती जा रही हैं उनका कोई अता-पता नहीं चलता ! क्या आप उनकी तलाश करवाएंगे ?'

वजिगा की यह बात गलत नहीं है पहले ही मैं 'ब्लिट्ज' में पढ़ चुकी थी और लोगों से सुना था कि भाठन क्षेत्र में आदिवासी लड़कियों की तस्करी जोरों पर है. कुछ असामाजिक तत्व, जो अपने कारनामों से देश को, समाज को और सरकार को कमजोर बनाने की कोशिश में लगे हुए हैं, इस अनैतिक कार्य में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं

हिंदी 'ब्लिट्ज' के 12 जुलाई 80 के अंक में 'गरीब आदिवासी लड़कियों की तस्करी' शीर्षक में प्रकाशित रपट के अनुसार—

पिछले वर्ष रामपुरिया की बीस वर्षीय द्रुपदा (विवाहिता) अपनी नाबालिग सहेली सुन्दरी के साथ गौतमनाथ, अरनोद के मेले में गई, तो आज तक नहीं लौटी उनके मां-बाप ढूंढते रहे, लेकिन कोई पता नहीं चला. पिछले वर्ष ही गायब होने वाली लड़कियों में गोपालपुरा के अमराजी की पुत्री जमना, पाडलिया के नानजी की पुत्री गुरजा और भेराजी की खूबसूरत सत्तरह वर्षीय पत्नी मीरा भी है.

इसके अलावा इसी वर्ष लापता लड़कियों में गंगा, कमली, राधा, भवा और मोहनी भी हैं मोहनी तो मकर सक्रान्ति के दिन मजदूरी के लिए निकली, तो आज तक

घर नही पहुची और भी अनेक लडकिया है, जिनका कोई अता-पता नही है उनके माता-पिता उनकी शक्ल-सूरत तक भूल गए है, सिर्फ नाम ही उन्हे याद है.

आखिर ये लडकिया कहा गई ?

कौन इन्हें ले गया ?

क्या ये लडकिया अपनी मर्जी से गई है या कोई इन्हे बहला-फुसलाकर ले गया है ?....

यह एक कटु सत्य है कि कई आदिवासी लडकिया इतनी बेबस हो गई है कि एक-एक रोटी के लिए अपनी अस्मत बेचने को तैयार हो जाती है अपने घर से 20-30 किलोमीटर दूर घने जगलो को नग पैर पारकर, आदिवासी युवतिया गीत गाती हुई प्रतापगढ शहर या इसके आसपास मजदूरी के लिए पहुचती है और फिर कुछ असामाजिक तत्व अनेक प्रलोभन देकर इन लडकियो को अपने जाल मे फसाने की कोशिश करते हैं.

इन गरीब आदिवासी युवतियो की सबसे बडी मजबूरी होती है—रोटी ! सिर्फ आधी मक्की की रोटी ! साग-सब्जी की जरूरत नही 9-10 घटे डटकर परिश्रम करने का पारिश्रमिक इन्हे मिलता है—सिर्फ ढाई रुपए अधिक से अधिक हुआ तो चार रुपए ! पसीने से लथपथ होकर, थककर अगर दो मिनट आराम भी कर ले, तो मोटे पेट वाली, दो मन की थुलथुल मकान-मालकिन उन्हे मा बहन की भद्दी गदी गालिया सुना डालती है यह नाम-मात्र का पारिश्रमिक भी इन्हे आसानी से कहा मिलता है ? दो-चार दिन तो चक्कर काटने ही पडते हैं और घुटा-घुटाया जवाब मिलता है—'बत्ती का टेम है अभी नही कल आना !'

मजबूर-मायूस कुछ आदिवासी युवतिया तो पैसे के लालच मे शहरी लोगो के चक्कर मे फस जाती हैं. और कुछ युवको के चक्कर मे, जो उन्हें शादी का प्रलोभन देते हैं ! कुछ लोग, जो आदिवासी लडकियों को अपने साथ शादी का वादा करके ले जाते हैं, या तो उन्हें अपने घर की नौकरानी बना देते हैं या रखैल....और कोई उस्ताद मिल गया, तो उसे किसी 'कोठे' के हवाले कर दिया जाता है !

देशभर मे आदिवासियो पर होने वाले अत्याचार और शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए अनुसूचित जनजाति के आयुक्त की पच्चीसवी रिपोर्ट मे कुछ आवश्यक सुझाव दिए गए हैं, जिस पर यदि शीघ्र ही अमल किया जाए, तो नि सदेह आदिवासियो को राहत मिलेगी. सुझाव इस प्रकार हैं—

1 सभी राज्य सरकारें, सघ शासित क्षेत्रो के प्रशासन अपने-अपने अधिकार क्षेत्रो मे आने वाले इलाको मे अत्याचारो के मामलो म और शिकायतो, अभ्यावेदनो के आधार पर सावधिक विस्तृत समीक्षा रिपोर्ट और विशेष ध्यान हेतु अधिकतम

घटनाओं वाले क्षेत्रों की सूची तैयार करें देश के विभिन्न भागों में गहन सामाजिक-आर्थिक अध्ययन किए जाने आवश्यक हैं और ऐसे अध्ययनों में समाजविज्ञानियों को अवश्य सम्मिलित किया जाना चाहिए.

2 यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सरकारी विभागों में काम करने वाले व्यक्ति आदिवासियों की वास्तविक शिकायतों को दर्ज करने और उन पर कार्रवाई करने में अपनी ड्यूटियों में ढील बरतने न पाएं जाएं उदाहरणार्थ—अत्याचारों के शिकार आदिवासियों की डॉक्टरी जांच करने वाले चिकित्सा अधिकारियों को विपक्ष के लाभ अपने पक्ष में न कर लें इसी प्रकार, राजस्व और पुलिस के अधिकारी आदिवासियों के हितों की रक्षा करने के अपने प्रयासों में ईमानदार होने चाहिए आदिवासियों पर अत्याचारों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भाग लेने के दोषी अधिकारियों को ऐसे दंड दिए जाने चाहिए, जो दूसरों के लिए सबक बन जाएं पंचायतें आदिवासियों को पर्याप्त सुरक्षा देने में सक्रिय रूप से सहायता करें और यह भी सुनिश्चित करें कि उनके अधिकार क्षेत्रों में निहित स्वार्थ आदिवासी-समुदायों को किसी तरह का कष्ट न दे सकें

3 सामाजिक-आर्थिक न्याय के मामलों की जांच करने के लिए चल यूनिटों वाली विशेष अदालतें स्थापित की जाएं सामान्य अकानून भंग के मामलों से सामाजिक अन्याय के मामलों को पृथक ढंग से निपटाने के लिए कानूनी पद्धति में सुधार किए जाने चाहिए प्रमाण-पत्र सम्बन्धी कानून, साक्ष्य अधिनियम और आपराधिक पद्धति संहिता में समुचित संशोधन किया जाना चाहिए, जैसा कि भ्रष्टाचार निरोधी मामलों में किया जाता है।

4 अत्याचार की परिसीमा में किस प्रकार के मामले आते हैं, इस विषय में तनिक भी अस्पष्टता नहीं होनी चाहिए इस शब्द की स्पष्ट परिभाषा की जानी चाहिए और यदि आवश्यकता हो, तो अत्याचार के मामलों की छानबीन करने वाले अधिकारियों के मार्गदर्शन हेतु दंड-संहिता की सम्बन्धित धाराओं को विशेष रूप से रेखांकित कर दिया जाए सभी राज्य सरकारें अत्याचार के शिकार आदिवासियों का समुचित मुआवजा देने के लिए नियम बनाएं वित्तीय राहत के अतिरिक्त उनके लिए आजीविका के पर्याप्त साधन भी जुटाए जाने चाहिए।

शिक्षा

आदिवासियों को दी जाने वाली शिक्षा-प्रणाली में कुछ विशेषता होनी चाहिए, ताकि शिक्षा का उनके जीवन में उपयोग हो, वे स्वावलंबी हो सकें आदिवासी बहुत गरीब हैं, अतः इन्हें ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे वे आर्थिक चिंता से मुक्त हो सकें और शिक्षा खर्चीली भी न हो उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा काफी हद तक सफल हुई है इनमें मनोवैज्ञानिक पद्धति पर—मांटेसरी प्रणाली से भी

शिक्षा प्रारंभ की जानी चाहिए, ताकि बच्चो के मानस का प्रारम्भ से ही विकास हो

आदिवासी बालकों के लिए *मात्र साक्षरता-प्रसार वाली शिक्षा* उपयोगी न हो सकेगी देश मे यो ही बेकारी बहुत है बेरोजगारो की सख्या अनगिनत है इसलिए उन्हे हम कोरा किताबी ज्ञान दिलाकर शिक्षित बनाए, तो कुछ भी लाभ न होगा. उनकी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिसमे वे सही अर्थो मे मनुष्यता का पाठ सीखें, तहजीब सीखे, उन्हे धर्म का भी सही ज्ञान हो भारतीय सस्कृति और सभ्यता से वे परिचित हो

आदिवासी बच्चो को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे हाथ से किए जाने वाले कार्य के प्रति उनकी अरुचि नही हो और शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी वे शिल्प-कला मे अभिरुचि रखें तथा ऐसे कार्य करने वाले अपने भाइयो से घृणा न करें अक्सर देखा गया है कि जो आदिवासी उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं, वे अपने जाति-समाज मे जाना भी पसद नही करते

शिक्षा का माध्यम

विभिन्न क्षेत्रो या प्रदेशो मे आदिवासियो की विभिन्न बोलिया है और ये कुल मिला-कर सैकडो होंगी इसलिए प्रत्येक क्षेत्र मे आदिवासी-बालको की शिक्षा उस प्रान्त की भाषा मे होनी चाहिए प्राय आदिवासियो को अपने प्रान्त के व्यक्तियो से कुछ काम पडता ही रहता है और वे अपनी जातिगत बोली के अतिरिक्त प्रातीय भाषा को थोडा-बहुत समझ सकते है

प्राइमरी शिक्षा के बाद हिंदी के माध्यम से उनमे शिक्षा-प्रसार किया जाना चाहिए लिपि और पाठ्य-पुस्तको का प्रश्न भी विवादास्पद है आदिवासी-बालको के लिए ऐसी पाठ्य-पुस्तकें होनी चाहिए, जो उनके धर्म, रीति-रिवाजो पर प्रकाश डालते हुए उनमे सुधरे हुए विचारो का प्रचार भी कर सकें महापुरुषो, वैज्ञानिको की जीवनिया उन्हे पढाई जानी चाहिए इसाइयो ने इनम रोमन-लिपि के द्वारा शिक्षा देना प्रारम्भ किया था और भाषा उनकी ही रखी थी तथा बाद मे अग्रेजी को माध्यम रखा गया लेकिन जहा तक लिपि का प्रश्न है, वह तो अब देवनागरी ही होनी चाहिए.

आदिवासी-बालको म शिक्षा-प्रचार करने के लिए अध्यापक भी योग्य होने चाहिए उस अध्यापक में सबस बडी योग्यता यह होनी चाहिए कि वह उनम सहानुभूति रखे, उनम मिल जुलकर, उनका होकर रहे वह उनकी कमी या बुराइयो को धीरे-धीरे दूर करने को अपने जीवन का उद्देश्य समझे ऐसा ही कार्यकर्ता भी होना चाहिए, जो सेवा भावना से प्रेरित होकर, उनम कार्य करने के लिए जाए उनके रहन-सहन व्यवहार और घर तथा सामाजिक जीवन का दूसरो पर स्वय ही अच्छा प्रभाव

पड़ेगा अध्यापक और कार्यकर्ता ऐसा होना चाहिए, जो छूत-छात न मानता हो और सुधारवादी दृष्टिकोण रखता हो.

० ०

देश में हर वर्ष गणतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर खुशियां मनाई जाती हैं दिल्ली की सड़कों पर निकलने वाली झांकियों में आदिवासियों की रंग-बिरंगी पोशाकें और उनकी संस्कृति हर किसी का मन मोह लेती हैं लेकिन कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता है कि इन हंसते-गाते-नाचते आदिवासियों की जिंदगी में कितने दुख हैं कितनी-कितनी समस्याओं से घिरे हुए हैं ...

देश भर में विभिन्न प्रांतों में बसे आदिवासियों के बारे में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था—'आदिवासी लोगों की समस्या उन लोगों को यह अनुभव कराना है कि उन्हें अपने ढंग से स्वतन्त्र जिंदगी जीने और अपनी आकांक्षाओं-क्षमताओं के अनुरूप विकास करने का पूरा अधिकार है भारत उनके लिए सरक्षण ,का नहीं, मुक्ति का साधन बनना चाहिए इस तरह का कोई भी विचार कि भारत उन पर शासन कर रहा है या उन पर ऐसे रीति-रिवाज थोपे जा रहे हैं, जिनसे वे परिचित नहीं हैं, उन्हें हम से दूर ही करेगा।'

आदिवासियों का विकास देश का विकास है लेकिन साथ ही साथ आदिवासियों का यह एहसास करा देना भी आवश्यक है कि भारत उनका अपना देश है उनकी रिवायत, रीतिरिवाज और रहन-सहन इस देश में हमेशा सुरक्षित हैं.

देश के कुल 18 राज्यों में 166 परियोजनाएं चलीं, सरकारी और गैर सरकारी संगठन आदिवासियों की समस्या के समाधान के लिए चिंतित हैं सरकारी खजाने से करोड़ों रुपए खर्च किए गए लेकिन आदिवासियों की आंखों के आगे आज भी अंधेरा ही अंधेरा है आदिवासियों की समस्याएं ज्यों की त्यों हैं यही नहीं, भ्रष्टाचार और शोषण ने उनके मन में सरकार, पुलिस और ठेकेदारों के प्रति नफरत के बीज बो दिए हैं

ढेबर आयोग

आदिवासियों के कल्याण की दिशा इंगित करने के लिए ढेबर आयोग की नियुक्ति हुई थी आयोग ने अपने प्रतिवेदन में कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं पर सरकार से तुरन्त प्रभावी उपाय लागू करने पर जोर दिया

20 वर्ष बीत गए, आयोग की सिफारिशों को, लेकिन वे आज की स्थिति में भी उतनी ही सामयिक हैं, जितना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते समय थीं. आयोग के मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

1 अधिकांश राज्यों में आदिम जातियों के हितों की रक्षा करने, उनकी आर्थिक

द्वारा शोषण करने से रोकने के लिए की गई व्यवस्था ने संतोषजनक ढंग से काम नहीं किया है महाजनों, वनों के ठेकेदारों की अवांछनीय कार्यवाहियों से आदिम जातियों के क्षेत्रों में जमीन का स्वभाव बदलता रहा है

2 बिहार, मध्यप्रदेश और उड़ीसा की अनेक औद्योगिक परियोजनाओं के कारण बहुत-सी आदिवासी जातियों को अपना घर बार छोड़ना पड़ा है

3 आदिवासी क्षेत्र म काम करने वाले कर्मचारी प्रशिक्षित एव कुशल होने चाहिए ताकि वे औद्योगीकरण के प्रभाव, भूमि की बेदखली, कर्जे की व्यवस्था, वन सहकारी समिति और वनोद्योगों के प्रोत्साहन मे निश्चित भूमिका अदा कर सकें

4 आदिवासी क्षेत्रों म गैर-सरकारी व सेवाभावी सगठनों की विशेष रूप से जरूरत है इन सगठनों को जनजातियों के क्षेत्र मे कार्य करने के लिए विशेष रूप से प्रोत्साहन देना होगा

5 आदिवासियों के परिवेश के दायरे म वनाधारित कुटीर उद्योगों को विकसित करने वानिकी को प्रश्रय देने का कार्य सहकारी समितियों के आधार पर विकसित किया जाए क्षेत्र विशेष मे जो कुटीर उद्योग चलते हैं उसकी उत्पादकता बढ़ाने के प्रयत्न भी अपेक्षित है जड़ी बूटियों और वानस्पतिक आधार पर कुटीर और लघु उद्योगों के जरिए काफी आदिवासियों का जीवन खुशहाल बनाया जा सकता है

नवभारत टाइम्स (8 फरवरी 1981) म दीनानाथ दुबे ने लिखा है—'ढेबर आयोग ने जनजातियों को रोजगार देने के लिए स्थानीय कच्चे माल के आधार पर लघु उद्योग खोलने पर विशेष जोर दिया था नौकरशाही के जाल मे ढेबर आयोग की सिफारिशों का वही हश्र हुआ जो अन्य आयोगों की रपटों का हुआ था और फिर दुबारा उनकी आर्थिक स्थिति जाचने का कोई प्रयत्न नहीं हुआ '

ढेबर आयोग की तरह राष्ट्रीय श्रम आयोग ने भी अपनी सस्तुति म कहा था—'वस्तुत विकास के लिए यह सबसे बड़ा नुकसान होगा यदि जनजाति के कबीलों को उनकी परपरा और सस्कृति के अनुरूप उन्हे बढ़ाने का उपक्रम नहीं किया गया बड़े उद्योग जिन जनजाति वाले क्षत्रों मे स्थापित हुए है वे एक निजन द्वीप के समान नहीं रह सकते कुछ हद तक उन्हे आदिवासियों को अपनाना होगा इसके लिए जनजाति के लोगों की भरती के नियमा मे ढील और उनके प्रशिक्षण की विशेष व्यवस्था करनी होगी और खासकर जिनकी जमीनें छीनी गई है उनके लिए रोजगार देना लाजिमी है

विशेष सुझाव

अपने आसपास उपस्थित विकराल वेशधारी समस्याओ से आदिवासियों को मुक्ति दिलाना देश के समाजवादी युवकों का प्रथम एव सर्वोपरि कायक्रम होना चाहिए

गाधी ने और विवेकानन्द ने भी गरीब की रोटी को महत्व दिया है हमें आज ही इसकी तात्कालिक व्यवस्था करनी चाहिए इनकी मुक्ति दस घण्टे और यदि हम प्रतिगामी हैं, अधिक से अधिक दस दिन मे इस प्रकार हो सकती है—

1 सभी महाजनी कर्जों से आदिवासी को सदा के लिए मुक्त माना जाए कोर्ट-कचहरी को इस प्रकार के न्याय देने से वंचित किए जाए, क्योंकि इस देश के कोर्ट-कचहरी और कानून केवल सम्पन्न वर्गों के हितो को ध्यान मे रखकर बनाए गए हैं इसलिए ऐसे दोगले कानून और उनके सूत्रधार विपदा और दरिद्रनारायण के भाग्य का फैसला नहीं कर सकते ।

2 आज तक आदिवासियो से लुटे हुए धन की वसूली आदिवासी-नवयुवको को अधिकार देकर, उनके द्वारा की जाए और उन सभी सामान्तो, सेठो, महाजनो अथवा उनके वारिसो की सम्पत्ति जब्त कर ली जाए ।

3 इस समस्त धन का उपयोग आदिवासियो के तात्कालिक कल्याण मे लगाए जाए

4. समस्त आदिवासियो के लिए एक ही कॉलिज बने जहाँ पाच-सात हजार विद्यार्थी रहकर, शिक्षा पा सकें हर जगह अलग-अलग स्कूल-कॉलेज खोलना गलत है

5. आदिवासी-क्षेत्रो मे पुलिस और पटवारी प्रथा का अन्त किया जाए और आदिवासियो के अपने वेतन भोगी स्वय सेवक इन सेवाओ को अंजाम दें ।

तहसील और ऐसे ही अन्य विभागो मे जो लोग भरे पडे हैं, वे सामाजिक और समाजवादी दृष्टिकोण से वंचित हैं अतएव उनके द्वारा कोई भी प्रगति कार्य असमय है

6 आज भी मालवा और मेवाड, काठल और वागड के आदिवासी क्षेत्रो मे इतनी जमीन बेकार पडी है, जिसे अगर इन लोगो मे बाट दिया जाए, तो गाधी की आत्मा को शाश्वत शांति सुलभ होगी

यह कार्य कलक्टर या तहसीलदार की रिपोर्टो के द्वारा नहीं, किन्तु समर्थ मन्त्रियो, अधिकारियो और नेताओ को स्वय अपनी आंखो देखकर प्राप्त करनी चाहिए

7. जिन-जिन प्रदेशो मे आदिवासी हैं, उन-उन प्रदेशो की अन्य समस्त उच्च जातियो पर टैक्स लगाए जाए, ताकि ये जातियाँ पिछले पापो से उऋण हो जाए ।

8. आदिवासियो का समस्त उत्पादन उनके अपने संगठन ही खरीदें और तत्काल भुगतान किया जाए उनके क्षेत्र म किसी भी शोषण जाति के व्यक्ति का प्रवेश निषिद्ध हो

9 हमारे देश के सबसे बड़े अवतार जवाहरलाल नेहरू की कामना थी कि आदिवासियो के रहन-सहन, उनके जीवन-प्रवाह और तौर-तरीको को अपने स्वच्छ परम्परागत रूप मे स्वतंत्र रहने दिया जाए.

अतएव आदिवासियो की आजाद तबीयत का ख्याल रखा जाए और उनकी भावनाओ का सम्मान किया जाए और पानी की पाबन्दिया नही लगाई जाए. आदिवासी-क्षेत्र का कोई भी सामान केवल अधिकार प्राप्त एजेंसी ही खरीद या बेच सके, इसकी व्यवस्था की जाए !

10 आदिवासियो की अपनी भाषा मे ही साहित्य प्रकाशित हो कॉलेज तक ही शिक्षा हो और सभी राजकीय व्यवहार हो चाहे उनके लिए हिन्दी-अंग्रेजी अन्य भाषाओ की सुविधाए प्रदान की जाए.

11. आदिवासी क्षेत्रो मे प्रत्येक खेत पर कुआ खोदने के लिए वार फुटिंग पर साधन सम्पन्न दल हो, जो उस खेत पर दो-चार दिन रहकर, कुआ खोदकर, वायरलेस पर रिपोर्ट पेश करें यह रिपोर्ट उस क्षेत्र के कमाडर को भेजी जाए ऐसी सभी सेवा-सस्थाओ के लिए अधिकारियो मे एक सैनिक अधिकारी भी हो

12 प्राथमिक आवश्यकता तो यह है कि आदिवासियो को जो भी वस्तु मिले, वह कम से कम दामो पर बेची जाए जैसे घी का दाम 40 रुपए प्रति किलो हो, तो आदिवासी को वही घी 40 पैसे मे मिलना चाहिए और मध्यम वर्ग को 40 रुपए प्रति किलो और करोडपतियो को 400 रुपए प्रति किलो इसी प्रकार दरिद्रनारायण के लिए 'गाधी दर' निर्धारित होनी चाहिए

13. दैनिक जीवन की आवश्यकताओ की पूर्ति के पश्चात आदिवासियो को पहले शिकार, सैनिक-प्रशिक्षण, नृत्य-गान, कुटीर उद्योग तथा अन्य कला-कौशल का प्रशिक्षण दिया जाए. उन्ही के लोकगीतो, नृत्यो और ऐसी ललित-कलाओ को आधुनिक सगीत-निर्देशको के सहयोग से अधिक लोकप्रिय बनाया जाए !

ऐसी अनेक योजनाओ, सेवा-सुविधाओ और सक्रिय स्वप्न-मालाओ पर ही हम आदिवासियो की कल्याण-कामना का नक्शा प्रस्तुत कर सकते है आधुनिक शिक्षा, वेशभूषा, उद्योग, व्यापार तो बाद की बातें है. क्योकि जिस प्रकार गाधी ने हमे विदेशी-गुलामी से आजाद किया. नेहरू ने हमे सामंतो और श्रेष्ठि से मुक्त किया *और हमे औद्योगिक आर्थिक शोषण से मुक्त रखने के लिए अपने सपनो* की गहरी-गहरी नींवें डाली, इसी प्रकार श्रीमती इदिरा गाधी और युवा नेता श्री राजीव गाधी के नेतृत्व मे आदिवासियो के अन्दर और बाहर के शोषण से मुक्त किया जाए !

यह गाधी की कामना रही कि जब तक देश का एक भी व्यक्ति भूखा सोता है, हमे भोजन करते शर्म आनी चाहिए. हमारी इस शर्म के अधर्म के प्रायश्चित के लिए

जरूरी है कि हम पर टेक्स लगाया जाए हम पर जुर्माने किए जाए और हमें सुविधाओं से वंचित किया जाए और उनसे अर्जित साधनों से, आदिवासियों—महात्मा गाधी के दरिद्र नारायणों और नेहरू के सर्वहाराओं का कल्याण किया जाए

नगर, कस्बा और गाव के निकट के निवासी आदिवासियों को अवश्य कुछ प्रकाश मिला है, किंतु दूर रहने वाले आज भी दुरावस्था में है आज भी वे सड़क, पानी और रोशनी, यहा तक कि रोटी से महरूम हैं.

मैंने अपनी आखो से आदिवासियों को भूखो मरते, सडी लाल ज्वार खाते और महाजन की कलम से फासी पाते देखा है

मैंने तीन रुपए की जलाऊ-लकडी को बेचने को उत्सुक आदिवासी महिलाओ के दल के दल भूखे पेट तीस-तीस मील की यात्रा करते देखा है. साथ में रोते हुए अधनगे बच्चे चले जा रहे है और यह दल तीस मील दूर से तीन रुपए कमाकर वापस अपने हाट-बाजार में आकर, थोडी-सी लाल ज्वार खरीदते है

किसी भी पिछड़े हुए समाज की प्रगति का प्रथम आधार उसकी शोषण-मुक्ति है यह शोषण जीवन के सभी अगो-प्रत्यगो और विभागो में होता है. जैसे परिवार में रूढियां और परिपाटियां तथा उनके पोषक एव प्रचारक पादरी, पडित, मुल्ला और मौलवी, आर्थिक शोषण के लिए जिम्मेदार बनिए-महाजन, गुप्त-सग्रह के द्वारा मुनाफाखोर पाखडी धर्म के नाम पर, अनेक अनहोनी बातो को ईश्वरीय चमत्कार के नकली खोटे आली सिक्के के रूप मे चलाने वाले जादूगर, शासन और व्यवस्था में कानून के नाम पर अनाचार करने वाले आदि अनेक प्रकारो और तरीको से व्यक्ति और वर्गों के शोषण होते हैं...

शोषण से मुक्ति दकियानूसी समाज मे सौ-दो सौ वर्षों के छाती पीटे के बाद होती है. और क्रांतिकारी प्रगतिशील समाजवादी समाज मे एक झटके में!...फिर जिस देश मे नेहरू-गाधी की समर्थ सन्तान का खड शासन हो, वहा तो यह काम तत्क्षण हो जाना चाहिए क्योकि किसमे इतनी शक्ति है कि प्रगति की वेगवन्त धारा के खिलाफ तैरे ?

आदिवासियों में उनके अपने प्रतिष्ठानों और सगठनों द्वारा जुताई-बुवाई और कटाई के काम होने चाहिए उनके अपने नौजवान ट्रैक्टर चलाए और अपने उत्पादनो को अपनी सगठन-समितियो को नक्द दाम लेकर बेच दें

यह कहना झूठ और बेईमानी से भरा हुआ है कि खेती के लिए अब आवश्यक जमीन का अभाव है. अभी आज भी आदिवासी क्षेत्रो मे मिलो तक खाली जमीनें पड़ी हुई हैं. जहा जगलात के बदमाश लकडी समगल करते है और फिर नाजायज दारू बनाकर बेचते हैं

हमारे समाज में जब-जब आदिवासियों के उत्थान की बात आती है, तो आदिवासियों के हितैषी कहलाने वाले हम लोग उन्हें उतना ही उपचार बताते हैं, उतनी ही दवाई देते हैं, उतना ही तरीका समझाते हैं, जितना हमारे उच्चवर्गों के स्वार्थों के लिए हानिकारक नहीं होता। आदिवासी आजाद होकर, समझदार और सम्पन्न होकर, कहीं हमारे सिर पर सवार न हो जाए, हम इस बात का अवश्य ध्यान रखते हैं।



जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग

विकास कार्य और योजनाएं

राजस्थान मे 1971 की जनगणना के अनुसार कुल 31 26 लाख आदिवासी निवास करते हैं जो प्रदेश की कुलजनसख्या का 12 13 प्रतिशत है इन 31 लाख आदिवासियो मे से 13 65 लाख आदिवासी 'जनजाति उपयोजना' क्षेत्र मे निवास करते हैं जनजाति उपयोजना-क्षेत्र मे डूगरपुर, बासवाडा के सभी जिले, उदयपुर की छ तहसीलें और गिरवा ब्लाक, चित्तौडगढ की प्रतापगढ तहसील एव सिरोही जिले की आबूरोड तहसील सम्मिलित है

जनजाति क्षेत्रीय विकास के अन्तर्गत दूसरा कार्यक्रम शाहबाद, किशनगज पचायत समितियो मे निवास करने वाले 3५ हजार आदिवासियो के विकास का कार्यक्रम है तीसरा कार्यक्रम लघु ख डो का है इसके तहत 10,000 या उससे अधिक जनसख्या वाले 3५ ऐसे ब्लाक बनाए गए है, जिनमे आदिवासी जनसख्या का प्रतिशत 50 या उससे अधिक है यह 36 ब्लाक्स 13 जिलो मे अवस्थित है और उनमे राज्य के 6.70 लाख आदिवासी आ जाते हैं, जो राजस्थान की कुल जनजाति की आबादी

का 21 43 प्रतिशत है इस प्रकार इन तीनों कार्यक्रमों के तहत राजस्थान की कुल आदिवासी जनसख्या का 66 2 प्रतिशत आ जाता है।

इन तीनो कार्यक्रमों के अलावा, चौथी गतिविधि राजस्थान क्षेत्रीय विकास सहकारी निगम की है, जो मार्च 1976 से आदिवासी उपयोजना क्षेत्र एव शाहबाद एव किशनगज पचायत समितियो के क्षेत्रो मे कार्यरत है वृहत कृषि बहुउद्देशीय समिति (लेम्पस) एव प्राथमिक कृषि ऋण दात्री समिति (पेक्स) के माध्यम से इन क्षेत्रो मे आदिवासियो के आर्थिक विकास के लिए विभिन्न गतिविधिया सचालित करता है

उदयपुर स्थित माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एव प्रशिक्षण सस्थान कुछ समय पूर्व समाज कल्याण विभाग से जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग को हस्तान्तरण कर दिया गया है और उसके लिए प्रशिक्षण, शोध, मूल्याकन एव सास्कृतिक शोध एव सरक्षण के क्षेत्रो म विस्तृत योजनाए बनाई गई हैं

1979-80 मे जनजाति क्षेत्रीय उपयोजना 40 83 करोड की थी, जिसमे से 38 15 करोड रुपए व्यय हुए इस वर्ष मे विशेष केंद्रीय सहायता क अन्तर्गत प्राप्त 327 लाख रुपए मे से 312 86 लाख रुपए व्यय किए गए इस प्रकार जनजाति उपयोजना म उपलब्ध धन राशि का अधिकाधिक उपयोग किया गया

जनजाति क्षेत्रीय विकास योजना मूलत. क्षेत्रीय विकास की योजना है क्षेत्रीय विकास के अन्तर्गत इस बात का पूरा प्रयास किया जाता है कि क्षेत्र के आदिवासियो को योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ मिले उदाहरण के लिए सिंचाई की योजनाएं, सडक, पुल निर्माण, शिक्षा, पेयजल और स्वास्थ्य योजनाए आदि

जन जाति क्षेत्रीय विकास विभाग द्वारा आदिवासियो के विशेष और सीधे लाभ की जो योजनाए अब तक चलती रही हैं, वह इस प्रकार हैं—

आयुर्वेद कम्पाउन्डर कोर्स— 60 आदिवासी प्रति वर्ष

पशुपालन स्टाक मैन कोर्स—50 आदिवासी प्रति वर्ष

नर्सेज प्रशिक्षण कोर्स, बासवाडा—30 आदिवासी प्रति वर्ष

औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्रो म अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेषत मेसन, हाउस वायरिंग, पप रिपेयरर, कारपेंटर, हिंदी-अग्रेजी टाइपिंग आदि

राजस्थान लघु उद्योग निगम द्वारा सचालित 10 प्रशिक्षण केंद्र— हाथ छपाई, दरी बुनाई, बास सामग्री, रेगिजन सामग्री, घीया भाटा पत्थर एव लकडी के खिलौने आदि के व्यवसाय

समाज कल्याण विभाग द्वारा सचालित 7 सिलाई केन्द्र—विभाग के पहले से चल रहे ऐसे केन्द्रो के अलावा प्रति केन्द्र 15 आदिवासी प्रति वर्ष

हैंडलुम बोर्ड द्वारा हाथ करघा प्रशिक्षण केन्द्र सागवाडा—25 आदिवासी प्रति वर्ष

बीडी प्रशिक्षण कार्यक्रम (हिन्टरलैंड योजना के अन्तर्गत)

शिक्षा-क्षेत्र मे 1 से 5 वी कक्षा तक आदिवासी छात्राओ और 1 से 2 कक्षा के छात्रो को मुफ्त पुस्तकें और ड्रेस.

आश्रम-स्कूल और छात्रावास कार्यक्रम के अन्तर्गत आदिवासियो के लिए 27 आश्रम और 5 छात्रा होस्टल निर्माण का कार्यक्रम (समाज कल्याण विभाग द्वारा चल रहे होस्टलो और आश्रम स्कूलो के अतिरिक्त)

लघु और सीमान्त आदिवासी-कृषको के सिचाई-कुम्रो को ब्लास्टिग द्वारा गहरा करने के लिए 100 प्रतिशत सहायता

आदिवासी-काश्तकारो को गढी नर्सरी से तैयार फल-पोध मुफ्त वितरण कीटनाशक औषधि की सुविधा देना

औद्योगिक क्षेत्र म एक रुपए प्रति वर्ग मीटर की रियायती दर से भू-खण्ड उपलब्ध करना।

मुर्गीपालन, मत्स्य पालन, उर्वरक एव कीटनाशक दवाइयो हेतु अतिरिक्त अनुदान सहायता

सहकारी समितियो की हिस्सा राशि के लिए 500 रुपए प्रति आदिवासी अनुदान.

सिचाई कुम्रो की विद्युत लाइन एव न्यूनतम और वास्तविक बिजली खर्च के अन्तर की राशि चुकारे की सुविधा

आदिवासी खान श्रमिको को 250 रुपए औजारो की सहायता और आदिवासी खान-श्रमिक सहकारी समिति को 2500 रुपए तक के औजारो की सहायता

इन योजनाओ के अतिरिक्त 1980-81 मे आदिवासियो के सीधे लाभ की निम्न योजनाए प्रस्तावित की गई हैं—

लघु-सीमान्त आदिवासी काश्तकारो को राजस्व और दीवानी दावा की पैरवी हेतु कानूनी सहायता, वकील फीस आदि का भुगतान

आदिवासी की खातेदारी भूमि के अवैध हस्तातरण के मामलो की छानबीन कर सूचिया तैयार करवाकर कोर्टों मे प्रार्थना-पत्र पेश करवाने हेतु जिलो मे विशेष राजस्व स्टाफ की नियुक्ति और भूमिहीनो को आवटन

आदिवासी लघु एव सीमान्त काश्तकारो के 1000 सिचाई कुए अनुदान देकर गहरे करवाना

आदिवासी प्रशिक्षणार्थियों को 150/– के कारीगरी औजार प्रदान करना.

प्रति पचायत समिति आदिवासी बालक बालिकाओ हेतु मेधावी छात्रवृत्ति स्वीकृति

60 प्रतिशत से अधिक उपस्थिति पर, पहली और दूसरी कक्षा की छात्राओ को 5 रुपए प्रतिमाह उपस्थिति प्रोत्साहन.

आदिवासी क्षय रोगियो को एक्सरे और दवाई प्राप्ति हेतु आवागमन व्यय प्रोत्साहन के रूप मे देने का प्रावधान

विकलाग—आदिवासियो को कृत्रिम अग लगाने हेतु जयपुर तक आने-जाने का व्यय देना

जनजाति उपयोजना क्षेत्र मे आदिवासियो का मुख्य आर्थिक आधार वन एव कृषि रहा है वनो को सुरक्षित रखने और नए वन लगाने के लिए विभागीय कार्यक्रम हाथ मे लिए गए हैं, हालाकि इस कार्यक्रम का लाभ आदिवासियो को कुछ समय बाद ही मिलना प्रारम्भ हो सकेगा जहा तक कृषि का सम्बन्ध है, क्षेत्र के अधिकतर भाग मे यह विस्तृत योजना लागू है एव भू सरक्षण और फल-पौध विकास के कार्यक्रमो पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है !

आदिवासियो की एक बडी समस्या भूमि के स्वामित्व एव उसके लेखे सम्बन्धी है अत, उनके लाभ के लिए भू-अभिलेखों के पुनर्लेखन एव नक्शों की तैयारी का एक बडा कार्यक्रम हाथ मे लिया गया है वर्ष 1980–81 मे रेशम के कीडे पालने की एक प्रायोगिक योजना भी विचाराधीन है फास्फेटिक खाद के लिए 50 प्रतिशत एव कीटनाशक औषधियो के लिए 25 प्रतिशत अनुदान भी शेष लोन लेने वाले आदिवासियो लघु एव सीमान्त कृषकों को उपलब्ध है

कृषि के क्षेत्र म एक बडी समस्या सिंचाई के साधनो की कमी की है अत आदिवासियों के पडत कुओ को ब्लास्टिंग द्वारा गहरे करवाने के लिए 100% अनुदान की क्रान्तिकारी योजना भी प्रारम्भ की गई है

वन और कृषि के अतिरिक्त आदिवासियो को रोजगार के अनन्य साधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से निम्न कार्यक्रम हाथ मे लिए गए है—

दुग्ध विकास की एक बडी योजना डूगरपुर और बासवाडा मे अवशीतन केन्द्रो का कार्य निर्माणाधीन है

कुक्कुट पालन, दुधारू पशुओ का वितरण, भेड और ऊन विकास और मत्स्य पालन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है

तकनीकी शिक्षा बडे पैमाने पर प्रारम्भ की गई है क्षेत्र म चार आई टी आई कार्यरत हैं और पांचवी इस वर्ष प्रारम्भ किया जाना प्रस्तावित है आदिवासियो के दृष्टिकोण से सामान्य कोर्सेज के अलावा विशेष छोटी अवधि वाले कोर्सेज भी इन

आई. टी आइज में चल रहे हैं. इनके अलावा राजसीको, हेंडलुम बोर्ड एवं समाज कल्याण विभाग के तत्वावधान में भी विशेष प्रशिक्षण केन्द्र चल रहे है

एक विशेष महत्व की योजना यह है कि आदिवासी युवक-युवतियों के लिए नर्सिंग, स्टोकमैन और आयुर्वेदिक कम्पाउन्डर के विशेष कोर्स उपयोजना क्षेत्र मे चलाए जा रहे हैं उपयोजना क्षेत्र एवं शाहबाद क्षेत्र में जनजाति क्षेत्रीय विकास सहकारी निगम के माध्यम से भी आदिवासियो के आर्थिक विकास के लिए निगम कार्यक्रम चला रहा है

आदिवासियो को रोजगार-सम्बन्धी सलाह देने के लिए एक विशेष वोकेशनल गाइडेंस और सेल्फ एम्पलायमेंट यूनिट भी उदयपुर मे कार्यरत है

प्रतापगढ में भी इसी प्रकार की एक यूनिट कार्यरत है उपयोजना क्षेत्र मे जो औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए जा रहे हैं, उनमे आदिवासी उद्यमियो को एक रुपया प्रति वर्ग मीटर की दर से भूखण्ड दिए जाने का प्रावधान किया गया है.

जनजाति उपयोजना क्षेत्र मे गत पाच वर्षों मे सामाजिक सेवाओं के मामलो में जो उल्लेखनीय प्रगति हुई है, वह निम्न आकडो से स्पष्ट हो जाता है—

सुविधा	1973–74	1979–80
माध्यमिक विद्यालय	46	118
उच्च प्राथमिक विद्यालय	235	432
प्राथमिक विद्यालय	1664	2216
आश्रम विद्यालय	—	6
	(कुल 32 स्वीकृत एवं निर्माणाधीन)	
समाज कल्याण विभाग के छात्रावास	65	107
रेफरल हॉस्पिटल	—	3
औषधालय	32	64
उप केन्द्र	154	192
मिनी हेल्थ सेन्टर	—	5
		(4 निर्माणाधीन एवं 3 इस वर्ष के लिए प्रस्तावित)
आयुर्वेदिक औषधालय	173	246
नल जल योजना	50	109
हैण्ड पम्प योजना	551	2398
विद्युतीकृत कुए	369	1201
सड़क मार्ग	कि मी 2788	3270

इन आंकडो से स्पष्ट है कि जनजाति उपयोजना क्षेत्र मे पिछले पाच वर्षों मे बडे पैमाने पर ऐसे कार्य हुए है, जो आदिवासियो को सामाजिक स्थिति मे सुधार के साथ-साथ उनके आर्थिक उन्नयन के लिए भी सुदृढ आधार प्रस्तुत करते हैं. परिवहन के क्षेत्र मे कई आवश्यक बडे पुल या तो बना लिए गए है अथवा निर्माणाधीन है. सडको एव पेयजल के लिए अवश्य ही और बडे पैमाने पर धन राशि की आवश्यकता है और राज्य के आर्थिक साधनो को दृष्टि मे रखते हुए इन क्षेत्रों मे ऐसे पूरे प्रयास किए जा रहे है.

कोटा जिले की शाहबाद और किशनगज पचायत समितियो मे 34 हजार आदिवासियो को सीधा लाभ पहुचाने वाली योजनाओ हेतु केन्द्र सरकार प्रतिवर्ष विशेष सहायता स्वीकृत करती है, इसके अन्तर्गत विशेष योजनाए विभिन्न विभागो एव विकास अधिकारियो के माध्यम से नियान्वित की जाती है—

शिक्षा प्रोत्साहन, जैसे छात्र-छात्राओ को ड्रेस, पुस्तकें, चने, साबुन और छात्रावास व्यवस्था

मुफ्त दवाई वितरण
पेयजल कूप निर्माण
सिचाई, तालाब एव एनीकेट निर्माण
सिचाई-कुए और पम्पसेट हेतु अनुदान
बैल वितरण.
वन विकास.
ऐप्रोच रोड निर्माण आदि....

वार्षिक योजना : 1980–81

सेक्टर	1980–81 वित्तीय प्रावधान				
	राज्य योजना	विशेष केन्द्रीय सहायता	संस्थागत वित्त	केन्द्रीय प्रवर्तित योजना	योग
कृषि एवं अन्य सेवाए					
कृषि उत्पादन	82.50	46 74	—	—	129 24
लघु सिंचाई	55.00	52 15	11.17	—	118.32
भू सरक्षण	0.35	6.57	—	—	6.92
वन विकास	9.50	—	—	9.50	19 00
पशु पालन	12.38	7.19	2 40	—	21.97
दुग्ध विकास	38 00	0.01	—	—	38.01
मत्स्य पालन	3.21	2.73	—	—	5.94

वन	26 86	56.40	—	—	83 26
सूखा सभावित क्षेत्र कार्यक्रम	152 01	—	37 87	152 01	341.89
एकीकृत ग्राम विकास योजना	15 00	—	30 00	15 00	60 0
ट्राई सेम	1.02	—	—	—	1 02
समग्र ग्राम विकास	3 90	—	—	—	3 90
ग्रामीण विश्राम केन्द्र	4 25	—	—	—	4 25
अन्त्योदय	18 21	—	20 70	—	38 91
सामुदायिक विकास एव पचायत	0 80	—	—	—	0 80
केन्द्रीय लघु कृषक विकास अभिकरण	11 25	—	22 50	11 25	45 00
सहकारिता	38 00	18 00	6 53	22 85	85 38
जल एव विद्युत विकास	2530 00	—	—	—	2530 00
उद्योग एव खनन	203 98	11 10	44 00	6 52	865.60
परिवहन एव सचार	218 50	—	—	—	218 50
सामाजिक एव सामुदायिक सेवाए'					
शिक्षा	83 74	59 53	—	0 15	143 42
आधुनिक औषधिया	80 63	16 73	—	37 22	134 58
आयुर्वेद	5 00	5 65	—	—	10 65
जल प्रदाय योजना	149 50	—	—	—	149.50
गृह निर्माण	23 80	—	—	—	23 80
सूचना एव प्रसारण	3 00	—	—	—	3 00
श्रम एव श्रम कल्याण	8 63	12 04	—	—	20 67
अनुसूचित जाति/जनजाति एव पिछड़ी जातियो का कल्याण	26 10	9 90	—	5 45	41 45
आर्थिक सेवाए	1 42	—	—	—	1 42
सामान्य सेवाए	8 75	22 26	—	—	31 01
कुल योग	3815 29	327 00	175 17	259 95	4577.41

उपभोक्ता वस्तुओ का भंडार

निगम द्वारा आदिवासी क्षेत्र मे दैनिक आवश्यकता की वस्तुए उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने का कार्य अपने आप म महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है निगम ने

इस दिशा मे उल्लेखनीय कार्य किया है इस समूचे जनजाति क्षेत्र मे 54 भडार सहकारी समितियो के मुख्यालयो पर एव 47 उपकेन्द्रो के माध्यम से तेल, गुड, मसाले, नियत्रित वस्तुए, मिट्टी का तेल आदि उपभोक्ता सामग्री का विक्रय कार्य कर रहे हैं. 1978-79 मे नियन्त्रित वस्तुओ का कन्ट्रोल हटने के कारण व्यवसाय कम हुआ, परन्तु 1979-80 मे यह बढकर 111 50 लाख हो गया 1980-81 मे 134 लाख का लक्ष्य है सभी लैम्पस् मुख्यालय पर 100 टन भडारण क्षमता वाले गोदाम-निर्माण किए जा रहे हैं इसके अतिरिक्त 250 टन क्षमता के 12 गोदाम का निर्माण हो रहा है 1979-80 मे 1 00 लाख रुपए का उपभोक्ता ऋण वितरण किया गया

मत्स्य विपणन

जयसमन्द झील मे मत्स्य आखेट का ठेका पिछले करीब 22 वर्ष तक कपूर नामक निजी ठेकेदार के पास रहा कपूर राज्य सरकार को उनके ठेके वर्ष 75-76 के पूर्व सात वर्षों मे केवल रुपए 1 25 लाख प्रति वर्ष दिया करते थे 1977-78 मे इस झील के चारो ओर बसने वाले आदिवासियो को 5 मछली उत्पादक सहकारी समितिया करवाई एव इन्हे निगम के माध्यम से जयसमन्द झील के मत्स्य आखेट किए जाने की अनुमति देकर उनकी आर्थिक स्थिति मे सुधार किए जाने की व्यवस्था की

भावी योजनाए

लघु वन उपज पर आधारित शहद प्रोसेसिंग सयत्र स्थापित करना एव लघुवन उपज का निर्यात, साथ ही वन श्रमिक सहकारी समितियो के माध्यम से लघु वन उपज सग्रह का कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है

प्रायोगिक तौर पर तेन्दु पत्ता सग्रह एव विपणन, बीडी उद्योग, खादी एव ग्राम उद्योग कमीशन के परामर्श से किया जाना प्रस्तावित है.

नए लैम्पस् की स्थापना एव बैंक्स की प्रवृत्तियो म अभिवृद्धि करना.

ग्राम सखा योजना—शिक्षित आदिवासियो के द्वारा लघु वन उपज क्रय करने के लिए अग्रिम तथा उपभोक्ता सामग्री कम ब्याज पर विक्रय हेतु उपलब्ध कराकर, उनका अपने पैरो पर खडे होने हेतु सक्षम बनाना

चार प्रतिशत विभेदी ब्याज पर (डी आई. आर) योजना के अन्तगत ऋण सुविधा को राष्ट्रीयकृत बैंको को उपलब्ध कराना जैसे—कृषि उपज को रहन रख सम्बद्ध प्राथमिक सहकारी सस्थाओ के आदिवासी सदस्यो पर 4 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराकर, फसल को उचित मूल्य पर विक्रय करना इस योजना हेतु

20 लाख रुपए के प्रस्तावो को स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया ने सिद्धान्त स्वीकृति दे दी है।

माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

एक परिचय

उद्देश्य

राज्य मे आवासित आदिवासियो के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन पर आयोजना के विशिष्ट पहलुओ पर शोध संचालन

आदिवासी-समुदायो के शोध परिणामो का राज्य मे अन्य लोगो से तुलनात्मक अध्ययन

सेमिनार, कान्फ्रेन्स एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमो का आयोजन

'ट्राइबल शोध पत्रिका' सामयिक प्रतिवेदन विशेष शोध सामग्री एवं मोनोग्राफ इत्यादि का प्रकाशन

आदिवासी-कल्याण एवं अन्य सदर्भित विषयो पर सरकार को आवश्यक परामर्श प्रदान करना

आदिवासी-समस्याओ पर कार्यरत गवेषको एवं रुचि रखने वाले शोधकर्ताओ को सन्दर्भित शोध सामग्री आवश्यक परामर्श एवं पुस्तकालय सुविधा उपलब्ध कराना

राज्य मे आदिवासियो की समस्याओ एवं उनके कल्याण के सम्बन्ध मे शोध एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र के रूप मे सूचनाए उपलब्ध कराना

इसी प्रकार की सहयोगी संस्थाओ के शोध एवं सर्वेक्षण परिणामो के साथ समन्वय एवं आदान-प्रदान

शोध एवं सर्वेक्षण कार्य

भील, मीणा, भोपा, कथेडी, बनजारा, भील औरत, कालबेलिया, राणा जातियो के अध्ययन

सागडी प्रथा, वन श्रमिक सहकारी समितियाँ, छात्रावास, शिक्षा, भूमि हस्तान्तरण, विशेष पोषाहार कार्य, ऋण ग्रस्तता, पूर्व मेट्रिक छात्रवृत्ति योजना, भवन निर्माण, योजना, सहरिया प्रोजेक्ट, विद्युत समस्या, सागडी, पुनर्वास, स्वास्थ्य सुविधाए, व्यावसायिक परिवर्तन, लेम्पस्, तेन्दू पत्ता संग्रहण आदि का अध्ययन

जनजाति विकास ब्लाक, चतुर्थ पंचवर्षीय योजना, समाज कल्याण कार्यक्रम, पूर्व मेडिकल छात्रवृत्ति, विशेष प्रशिक्षण, ग्रामीण विद्युतीकरण योजना का मूल्याकन आदि

कुशलगढ, डूंगरपुर, बाडमेर के आर्थिक एव सामाजिक सर्वेक्षण, पत्थर खान मजदूर, विद्युत समस्या, सागडी प्रथा का सर्वेक्षण आदि

त्रैमासिक शोध पत्रिका 'ट्राइब' का प्रकाशन

ग्राम सखा, समिति सहायक, आदिवासी क्षेत्र मे कार्यरत सहकारी एव गैर सहकारी सदस्यो को प्रशिक्षण आदि

टी बी एव वी डी, राजस्व कानून मे सुधार, भ्रमणशील इकाइयो म अध्ययन, बैंको द्वारा आदिवासियो का अधिकतम लाभ, आदिवासी हेतु अधिकतम और सीधे लाभ की आर्थिक एव सामाजिक लाभ की शिक्षा, स्वय सेवी सस्थाओ का योगदान आदि

सास्कृतिक रक्षा-कार्य—म्यूजियम, प्रदर्शनियाँ, बाल युवा वार्षिक लोक-सस्कृति समारोह, फोटोग्राफी, आदिवासी लोक गीत रिकार्डिंग आदि

आई टी डी पी. (जिला)

तहसील	ग्राम सख्या	क्षेत्रफल (व कि मी)	कुल जनसख्या	आदिवासी जनसख्या	आदिवासी जनसख्या प्रतिशत
बासवाडा (सम्पूर्ण जिला)					
1 बासवाडा	324	1142	153951	100194	65 08
2 घाटोल	316	1304	132085	104664	79 24
3 गढी	167	708	115930	60266	51 98
4 बागी दोरा	259	859	129373	105661	81 67
5. कुशलगढ	396	1042	123247	106584	86 48
डूंगरपुर (सम्पूर्ण जिला)					
6 डूगरपुर	427	1572	262020	193829	73 97
7 सागवाडा	262	924	171675	97941	57 05
8 आसपुर	145	667	96563	45710	47 34
उदयपुर					
9 फलासिया	256	1437	87239	55573	63 70
10 खेरवाडा	234	1089	121266	85770	70 73
11 कोटडा	304	1208	76699	65314	85 16
12 खराडा	157	1083	113363	60318	53 21
13 सलूम्बर	222	926	108855	49591	45 56

14. लसाड़िया	248	1220	94657	71580	75.62
15 गिरवा (खंड)	159	777	106882	50892	47 62
चित्तौड़गढ़					
16. प्रतापगढ	530	2159	150250	78895	52.51
सिरोही					
17. ग्राबूरोड	81	864	48953	32469	66.33
योग 17	4487	19571	2093008	1365252	65 23

(जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग राजस्थान, उदयपुर)

समाज कल्याण विभाग :

विकास कार्य

राजस्थान मे अनुसूचित जातियो, जनजातियो एवं पिछड़े वर्गों के आर्थिक, सामाजिक एव शैक्षणिक स्तर को ऊचा उठाने के लिए राज्य सरकार द्वारा कई योजनाए और कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनके अन्तर्गत इन जातियो के लोगो को कई प्रकार की सुविधाए सुलभ कराई जा रही है इसके लिए सविधान मे विशेष प्रावधान रखा गया है और अनेक नियम तथा कानून बनाए गए है

राज्य मे आदिवासियो के लिए जो प्रमुख योजनाए और कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, उनमे मुख्य नि शुल्क छात्रावास, छात्रवृत्ति, प्रथम एव द्वितीय श्रेणी म उत्तीर्ण स्नातक एव स्नातकोत्तर व्यक्तियो को बेरोजगारी भत्ता, उत्पादन एव प्रौद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र, लघु सिचाई कार्यों हेतु कूप-निर्माण के लिए दिए गए ब्याज का पुनर्भरण, सहकारी समितियो मे हिस्सा पू जी अशदान, भवन निर्माण हेतु अशदान एव ऋण के ब्याज का पुनर्भरण, कम्पोनेंट प्लान, बिजली और पानी उपलब्ध कराने मे प्राथमिकता आदि हैं

छात्रावास

वर्तमान मे राज्य में समाज कल्याण विभाग द्वारा राजकीय, अनुदानित एवं तृतीय श्रेणी के छात्रावास चलाए जा रहे हैं-

राजकीय छात्रावासो मे छात्रों को नि शुल्क भोजन, आवास, वस्त्र, पुस्तकें एव लेखन सामग्री इत्यादि सुलभ कराई जा रही हैं. राज्य मे वतमान मे इन छात्रावासों की सख्या 175 है और इनमे रहने वाले छात्रो की सख्या 9,086 है

अनुदानित छात्रावास, जो स्वय सेवी सस्थाओ द्वारा चलाए जा रहे हैं, म छात्रो को उक्त सुविधाए देने हेतु इन सस्थाओ म प्रवेश प्राप्त कक्षा 6 म 8 तक क छात्रो के लिए 95 रुपए तथा 9 से 11वीं कक्षा तक के छात्रो के लिए 100 रुपए प्रति माह के हिसाब से अनुदान दिया जाता है इन छात्रावासो की सख्या 130 है और इनमे 4,999 छात्र रह रहे हैं

तृतीय श्रेणी के छात्रावासो मे आवास, नल, बिजली की सुविधा, रसोइया, पार्ट-टाइम वार्डन और रसोई के बर्तन नि शुल्क उपलब्ध कराए जाते हैं इनमे भोजन आदि की व्यवस्था छात्रो को स्वय करनी पड़ती है राज्य मे ऐसे 76 छात्रावास हैं

छात्रावासो मे प्रवेशार्थियो के शैक्षणिक-स्तर को और ऊंचा उठाने के लिए कठिन विषयों के लिए अशकालीन शिक्षको की नियुक्ति भी की गई है

पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति

उन आदिवासी-छात्रो को, जो 6 से 11वी तक की कक्षाओ मे अध्ययन करते हैं, पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है कक्षा 6 से 8 तक के छात्रो को 10 रुपए तथा 9 से 11वी कक्षा तक के छात्रो को 20 रुपए प्रति माह की दर से यह छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है

उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति

मैट्रिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा स्तर से आगे अध्ययन करने वाले आदिवासी-छात्रो को केंद्रीय सरकार द्वारा बनाए गए नियमो के अनुसार उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है इस छात्रवृत्ति के लिए राज्य सरकार एव केंद्र सरकार बजट माग के अनुसार राशि आवटित करती है, जिससे समस्त पात्र छात्रो को छात्रवृत्ति मिल सके

विशेष छात्रवृत्ति

प्रतिभावान आदिवासी छात्रो को पब्लिक स्कूलो मे अध्ययन करने तथा छात्रावास मे रहने के लिए विशेष छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है- इसके लिए पूर्व कक्षा परीक्षा

मे 55 प्रतिशत अक तथा नवीनीकरण हेतु 50 प्रतिशत अक प्राप्त करना आवश्यक है इसके लिए जयपुर का सेंट जेवियर स्कूल एव महारानी गायत्री देवी पब्लिक स्कूल, उदयपुर का विद्या भवन, बीकानेर का सादुल पब्लिक स्कूल, चित्तौडगढ का सैनिक स्कूल, वनस्थली का वनस्थली विद्यापीठ, पिलानी का बिडला स्कूल मान्यता प्राप्त सस्थाए हैं

आदिवासी-राज्य कर्मचारियों को अपनी योग्यता बढाने के लिए यदि अध्ययन अवकाश स्वीकृत होता है, तो अवकाश मे वेतन और भत्तों आदि मे होने वाली क्षति की पूर्ति राज्य का समाज कल्याण विभाग छात्रवृत्ति के मद मे से करता है

प्राथमिक विद्यालयो म अध्ययन कर रहे आदिवासी छात्रो को मुफ्त किताबें तथा यूनिफार्म दी जाती है और राज्य के विभिन्न मेडिकल कॉलेजो तथा इजीनियरिंग कॉलेजो मे अध्ययनरत छात्रों की सुविधा के लिए बुक बैंक की व्यवस्था भी की गई है राज्य की समस्त राजकीय शिक्षण-सस्थाओ म इन्हे शैक्षणिक शुल्क म पूरी छूट दी जाती है शैक्षणिक शुल्क के अलावा अन्य शुल्को मे आधी छूट दी जाती है

आर्थिक विकास

आदिवासियो को उद्योग धधो मे प्रशिक्षण प्रदान कराने के लिए पूर्व मे ही समाज कल्याण विभाग द्वारा 16 प्रशिक्षण केंद्र चलाए जा रहे हैं इन केंद्रो म 14 सिलाई प्रशिक्षण केंद्र है तथा एक-एक बढईगिरी और चर्म-उद्योग केंद्र हैं 1979 80 मे 8 नए सिलाई प्रशिक्षण केंद्र और खोले गए हैं प्रत्येक प्रशिक्षण केंद्र पर 15 प्रशिक्षणार्थियो को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है प्रशिक्षण के दौरान प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को 50 रुपए प्रतिमाह वृत्तिका के रूप म प्रदान किए जाते है दो वर्ष के पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने पर औजार एव मशीन इत्यादि क्रय करने के लिए 500 रुपए की सहायता प्रदान की जाती है और भी नए प्रशिक्षण केंद्र प्रारभ किए जा रहे हैं

बेरोजगारी भत्ता

स्नातक एव स्नातकोत्तर आदिवासी-बेरोजगारो को क्रमश 150 और 250 रुपए की दर से मासिक वृत्ति दी जाती है 1979-80 म इस सहायता का 190 आदिवासी बेरोजगारो ने लाभ उठाया

जिन आदिवासी कृषको के पास 10 एकड से अधिक असिंचित भूमि नहीं है, उन्हे सिंचाई सुविधाए उपलब्ध कराने की दृष्टि से वित्तीय सस्थाओ केंद्रीय सहकारी बैंको, भूमि विकास बैंको तथा व्यावसायिक बैंको आदि से 5 हजार रुपए तक लिए हुए ऋणो के ब्याज का पुनर्भरण समाज कल्याण विभाग द्वारा किया जाता है

जिन आदिवासियो के पास कृषि के लिए जमीन नहीं है या बहुत ही कम मात्रा मे खेती योग्य भूमि उपलब्ध है, उन्हें कृषि-भूमि के आवटन मे प्राथमिकता प्रदान की जाती है पचवर्षीय योजना काल से 1979 तक 2,98,715 आदिवासियो को भूमि आवटित की गई है.

आदिवासियो को आवासीय भूखड आवटित करने और पेयजल सुविधा उपलब्ध कराने के लिए भी काफी सराहनीय कार्य किए गए हैं

लघु विकास खंड

ऐसे आदिवासियो को भी जो जनजाति क्षेत्र के बाहर निवास करते है को क्षेत्रीय विकास योजनाओ का लाभ प्राप्त हो सके, इस उद्देश्य से राज्य के 13 जिलो म जहा आदिवासियो की आबादी का अनुपात 50 प्रतिशत से अधिक है, 36 लघु विकास खडो का गठन किया गया है इन लघु विकास खडो के अन्तर्गत लगभग ▪ लाख 69 हजार 764 आदिवासियो को लाभ प्राप्त होने का अनुमान है इसमे एक मुख्य योजना प्राथमिक कक्षा के बालक-बालिकाओ को 30 रुपए मूल्य तक के वस्त्र एव पुस्तकें आदि उपलब्ध कराना है वर्ष 1979-80 म इन विकास-खडो पर 31 50 लाख रुपए व्यय किए गए

राजस्थान नहर क्षेत्र में हिस्से क्रय हेतु सहायता

राजस्थान नहर क्षेत्र मे आदिवासी-परिवारो को आवश्यक सुविधाए उपलब्ध कराकर कृषि पर पुनर्स्थापन करवाने की दृष्टि से इनके सदस्यो को सहकारी समितियो के हिस्से क्रय करने हेतु समाज कल्याण विभाग द्वारा अनुदान प्रदान किया जाता है

★ ★

खादी ग्रामोद्योग

राजस्थान खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड का गठन सन् 1955 मे किया गया हमारे देश मे आर्थिक विकास मे यद्यपि बडे उद्योगो को अपनी विशिष्ट भूमिका निभानी है, किन्तु विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था की क्रियान्विति के लिए आदिवासी क्षेत्रो मे व्याप्त बेरोजगारी और गरीबी दूर करने की दिशा मे स्थानीय स्रोतो के आधार पर खादी ग्रामोद्योग तथा अन्य कुटीर उद्योगो को भी प्रोत्साहित एव सुदृढ करने की आवश्यकता है

वर्ष 1977 के अन्त म भारत सरकार ने अपनी नई औद्योगिक नीति की घोषणा की इस घोषणा के अन्तर्गत खादी, हाथकरघा, ग्रामीण एव कुटीर उद्योग, लघु

उद्योग पर विशेष जोर दिया गया, जिससे अधिक से अधिक व्यक्तियों को रोजगार दिया जा सके. राजस्थान सरकार ने भी जून, 1978 में राज्य की औद्योगिक नीति की घोषणा की इस नीति के अन्तर्गत खादी एवं ग्रामोद्योग, हाथकरघा एवं ग्राम-शिल्प को प्राथमिकता दी है।

राजस्थान में खादी ग्रामोद्योग के कार्यक्रमों में निरन्तर प्रगति हो रही है. और आदि-वासी क्षेत्रों में बेरोजगारी दूर करने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है.

जनजातीय क्षेत्र उपयोजना

जनजातीय उपयोजना अवधारणा का उद्देश्य पांचवी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत आदिवासियों का विकास करना है. तथा ऐसे क्षेत्रों का समुचित विकास किया जा सके, जहां 50% से अधिक आदिवासी रहते हैं. इस उपयोजना के अन्तर्गत बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर की गिरवा, झाडोल, कोटड़ा, खेरवाड़ा, सराड़ा, सलूम्बर, धरियावद तहसील, चित्तौड़गढ़ में प्रतापगढ़ तहसील और सिरोही के आबूरोड ब्लाक को सम्मिलित किया गया है. इन आदिवासी क्षेत्रों में अनेक छोटे-छोटे उद्योगों, जैसे—कुम्हारी उद्योग, बांस-बेंत, रेशा, चर्म, अनाज-दाल, लुहारी-सुथारी आदि को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है

वर्ष 1980–81 में डूंगरपुर में 16 आदिवासियों को 20 हजार रुपए ऋण और 4 हजार रुपए अनुदान दिए गए हैं. इसी तरह बांसवाड़ा जिले में 180 आदिवासियों को 2 लाख 51 हजार रुपए ऋण और 58 हजार रुपए अनुदान, सिरोही में 7 आदिवासियों को 12 हजार रुपए ऋण और 5 हजार रुपए अनुदान, उदयपुर में 23 आदिवासियों को 36 हजार रुपए ऋण और 10 हजार रुपए अनुदान, चित्तौड़गढ़ में 2 आदिवासियों को 4 हजार रुपए ऋण और 1 हजार रुपए अनुदान ग्रामोद्योगों के लिए दिए गए।

• ०

प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजस्थान लघु उद्योग निगम ने आदिवासियों को विभिन्न शिल्पों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए ठोस कार्य किया है. डूंगरपुर में फर्नीचर का काम बांसवाड़ा में बांस का काम, प्रतापगढ़ में दरी बुनाई और रेगजीन का काम, उदयपुर में कपड़े पर हाथ की छपाई, आबूरोड में लकड़ी पर खुदाई, फलासिया में फर्नीचर का काम, बागीडोरा में कृषि उपकरण बनाने का काम, बीछीवाड़ा में कपड़े पर हाथ की छपाई, आबूरोड में अपहोलस्ट्री, तलवाड़ा में घीया पत्थर का काम, आसपुर में दरी बुनाई का काम, धरियावाद में कपड़े पर हाथ की छपाई का प्रशिक्षण कार्य

शुरू किए गए है जिनमे प्रत्येक आदिवासी को 100 रुपए स्टाईफंड दिया जाता है. इन प्रत्येक केन्द्रों में 30 से 50 आदिवासी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

○○

आदिम जाति सेवक संघ

आदिवासियों के लिए अपना सारा जीवन समर्पित करने वाले ठक्कर बाप्पा से प्रभावित होकर, राजस्थान के निर्माता माणिक्यलाल वर्मा, भोगीलाल पड्या, गौरीशंकर उपाध्याय और भैरवलाल वर्मा जैसे समाज-सेवी नेताओं ने अपने नेतृत्व मे, आदिवासी क्षेत्रों में नवीन चेतना और नव-जागरण का सचार किया और इन्हीं महापुरुषों की प्रेरणा से 14 नवबर, 57 में 'राजस्थान आदिम जाति सेवक सघ' की स्थापना हुई. इस सघ के सचालन और व्यवस्था का सारा दायित्व बनवारीलाल गौड़ को प्रदान किया गया, जो आज भी पूरी निष्ठा, ईमानदारी और लगन से आदिवासियों के विकास के लिए समर्पित हैं इन्हीं के परिश्रम और प्रयासो का परिणाम है कि आज सस्था के 20 आदिवासी छात्रावास, 2 आश्रम स्कूल, 7 निराश्रित बाल गृह इकाइया और 5 खादी भडार और खादी उत्पादन केंद्र कार्यरत है यही नहीं, आदिवासी समाज मे प्रौढ शिक्षा के माध्यम से परिवर्तन लाने की दृष्टि से गिरिजन लोक शिक्षण प्रतिष्ठान तथा जवाहरलाल नेहरू अध्ययन केंद्र भी कार्यरत हैं.

आश्रम विद्यालय

आदिम जाति सेवक सघ ने अपने कार्यक्रम में शिक्षा को सर्वोच्च स्थान देकर आदिवासी-बालकों मे नए सस्कार उत्पन्न करने की दृष्टि से बुनियादी शिक्षा को अपने कार्यक्रम का मूल आधार माना है और दो आश्रम विद्यालयो की स्थापना की, जहा बालकों को नि शुल्क भोजन, वस्त्र, पुस्तकें आदि की सुविधाए मिलती हैं यहा आदिवासी-बच्चो को बुनियादी शिक्षा के आधार पर स्वावलबी बनने का पाठ पढाया जाता है, यही नहीं, सस्था के 20 छात्रावासों में भी सीखो-कमाओ के आधार पर पढाई का अभ्यास पाठ पढाने का उपक्रम किया जा रहा है

बालवाड़ी एवं शिशु कल्याण केन्द्र

बालकों को ऐसा वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए, जहां वे विकास की सभी प्रक्रियाओं से प्रेरित होकर, अच्छे सस्कारो मे अपना व्यक्तित्व बना सकें इसलिए सघ द्वारा बालवाडी एव शिशु कल्याण केंद्रो के माध्यम से आदिवासी-बच्चों को लाभान्वित करने का प्रयास किया जा रहा है.

पालना घर

अधिकांश आदिवासी महिलाए मजदूरी करती हैं, इसलिए अपने बच्चो की सार सभाल के लिए उन्हे पर्याप्त समय नही मिल पाता इसलिए सघ ने 6 पालना घ की स्थापना की है, जहा आदिवासी महिला-मजदूरो के बच्चो को विकास की सार सुविधाए उपलब्ध की जाती हैं

छात्रावास

सालसोट, गगापुर, नाना, पिंडवाडा, बूदी, शाहबाद, वस्वाथाना, जहाजपुर माडलगढ अरनोद, बोराव, बडी सादडी, धावड, कनोड, कुम्भलगढ, सलूम्बर सेमारी, ऋषभदेव, नाहरगढ और गोगुन्दा मे आदिवासी छात्रावास सघ द्वारा चला जा रहे हैं. इन छात्रावासो मे नि शुल्क भोजन, वस्त्र, आवास, पाठ्य-सामग्री आदि की सुविधाए उपलब्ध हैं

आदिवासियो को अधविश्वासो और रूढियो के घेरे मे मुक्त करने के लिए सघ ने आदिवासी क्षेत्रा मे कार्यकर्ताओ की नियुक्ति की है जिनका दायित्व आदिवासी समाज का विश्वास प्राप्त करके, उन्हे जीवन के सभी क्षेत्रो म सहयोग करना और मार्गदर्शन देना है कोटडा, चितौडगढ, भैसरोडगढ, शाहबाद, धरियावाद, बून्दी नीम का थाना जैसे आदिवासी क्षेत्रो मे कार्यकर्त्ता सलग्न है ।

●

स्वरूप विद्यमान रहना चाहिए किंतु वृहत् ससाधनो के अपेक्षित समानकारी प्रभाव इस बात पर निर्भर करेंगे कि हिताधिकारी प्रशासन की कमजोरियो तथा निहित स्वार्थों का विरोध सगठित होकर करें

आर्थिक विकास पर व्यय

आदिवासियो की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए विशेष विकास कार्यक्रम शुरू किए गए थे ताकि इन गरीब आदिवासियो की आवश्यकताओ को पूरा किया जा सके ये कार्यक्रम, सामान्य क्षेत्र मे किए जाने वाले समस्त विकास कार्यक्रमो के *सहायक कार्यक्रमो के रूप मे सोचे गए हैं ताकि इनकी सामाजिक तथा आर्थिक* स्थिति मे सुधार किया जा सके

पाचवी पचवर्षीय योजना के दौरान 18 राज्यो, सघ शासित क्षेत्रो मे ऐसे सभी इलाके, जहा 50 प्रतिशत से अधिक जनसख्या आदिवासियो की है, पहचाने गए और वहा अलग से आदिवासी उप-योजनाए तैयार की गई आदिवासी उप-योजना *की परिकल्पना कुल विकास के लिए किए जाने वाले प्रयत्नो को शामिल करके की* गई थी जिनमे चार तत्व शामिल थे—(1) राज्य योजनाओ की रूपरेखाए (2) केन्द्रीय मत्रालयो का निवेश (3) सस्थानिक वित्त (4) इन इलाको के *लिए विशेष केन्द्रीय सहायता पाचवी योजना म केन्द्रीय मत्रालयो की योजनाओ का* निवेश स्पष्ट नही किया जा सका.

चौथी पचवर्षीय योजना अवधितम आदिवासियो के कल्याण के लिए 225 00 करोड रुपए की राशि पिछडा वर्ग क्षेत्र के अन्तर्गत की गई

पचवर्षीय योजनाओ मे अनेक बार इस पर बल दिया गया है कि आदिवासियो को सामान्य क्षेत्र की योजनाओ का समुचित लाभ मिलना चाहिए पाचवी पचवर्षीय योजना की रूपरेखा बनाते समय योजना आयोग ने निर्णय किया कि सामान्य क्षेत्र के अधीन हर विभाग ऐसी योजनाओ की पहचान करेगा, जिससे आदिवासियो को सामान्य क्षेत्र के कार्यक्रमो से लाभ पहुच सकता है और इस उद्देश्य के लिए अलग निधि सुरक्षित करेगा अप्रेल 75 मे पिछडे वर्गों के कल्याण-कार्य के इचार्ज राज्य मन्त्रियो की एक कान्फ्रेन्स मे एक प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसके अन्तर्गत हर विभाग को सामान्य क्षेत्र मे ऐसी योजनाओ की समीक्षा करनी थी और उसस आदिवासियो को होने वाले लाभो की मात्रा का अनुमान लगाना था इस तरह के परिमाणन करते समय, जहा कही सभव हो, इन गरीब आदिवासियो के पक्ष म पात्रता की शर्तों म छूट देनी थी यह अनुभव किया गया कि ऐसे परिमाणन योजना तथा बजट बनाते समय ही कर लिए जाने चाहिए प्रत्येक विभागीय कार्यक्रम, जो केन्द्र तथा राज्य दोनो मे हो सकता है, की समीक्षा पात्रता की उन शर्तों को ध्यान

में रखकर की जानी चाहिए जो विभिन्न आदिवासी-जातियों को ध्यान में रखकर बनाई जानी है मुख्य सचिव की अध्यक्षता में केबिनेट की एक उप-समिति और एक सचिवों की समिति को इस काम की देखरेख करनी चाहिए तथा इन समुदायों के लिए विभागीय परिमाणन की मात्रा के बारे में निर्देश देना चाहिए यह भी जरूरी समझा गया कि समाधनों की उपलब्धता को निश्चित करने के लिए योजना, वित्त विभागों में इस काम के लिए अलग सैल होने चाहिए वित्त विभाग से सम्बन्धित विभाग के वार्षिक बजट प्रस्तावों को केवल तभी स्वीकार करें, जब इस तरह के परिमाणन बना लिए गए हों और पिछले वर्ष के काम की समीक्षा की जा चुकी हो.

सहकारी आवास समिति

राजस्थान राज्य वित्त सहकारी आवास समिति नि., जयपुर एक शिखर सगठन के रूप में 31 दिसम्बर, 70 को रजिस्टर्ड हुई थी ताकि वह आदिवासियों के लिए प्राथमिक सहकारी समितियों के जरिए मकान बनाने के काम में लिए ऋण दे सके राज्य सरकार ने आदिवासियो को आवासीय ऋण प्रदान करने की एक विशेष स्कीम के लिए अपनी मन्जूरी दी थी इस स्कीम के अन्तर्गत सरकार द्वारा निम्न सुविधाएं प्रदान करने की व्यवस्था है—

1 प्रति सदस्य 300 रुपए शेयर पूंजी सहायिकी (सबसिडी) का अनुदान

2 4,000 रुपए तक के ऋण पर सम्पूर्ण ब्याज की प्रति पूर्ति

3. विधिक व्यय के लिए प्रत्येक सदस्य को 10 रुपए का सहायिकी अनुदान

आदिवासी विकास निगम

राजस्थान आदिवासी विकास निगम की स्थापना 27 मार्च, 1976 को राजस्थान सहकारी समितियां अधिनियम, 1965 के अधीन हुई थी निगम के चार क्षेत्रीय कार्यालय उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और बारां (कोटा जिला) में स्थित है निगम को निम्न कार्य सौंपे गए हैं—

1. सहकारी समितियों के सहयोग से उर्वरकों, बीजों, कृषि औजारों और कीट-नाशक दवाओं जैसी कृषि निविष्टों की व्यवस्था करना.

2. सहकारी समितियों के सहयोग से उचित दामों पर उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री

3. आदिवासियों से कृषि तथा गौण वन उत्पादों की खरीद और उनका निपटान

4 उपलब्ध कृषि उत्पाद तथा गौण वन उत्पाद पर आधारित औद्योगिक एककों की स्थापना

5. उपभोक्ता-ऋणों की व्यवस्था करना.

कृषि उत्पाद के क्रय और विक्रय के मामले में देखा गया कि आदिवासियों की जोतें अपेक्षाकृत छोटी हैं और उनके पास बिक्री के लिए अतिरिक्त कृषि उत्पाद लगभग नहीं थे. फिर भी इस दिशा में हुए वास्तविक काम के बारे में सूचना उपलब्ध नहीं करवाई गई.

स्थापना के पहले वर्ष में निगम ने लैंप्स पर 2,47,697 रुपए व्यय किए, जबकि इसके लिए 1,32,575 04 रुपए की सरकारी सहायता प्राप्त हुई थी. पहले ही वर्ष निगम ने 1,15,122.48 रुपए का अतिरिक्त व्यय कर दिया लेकिन दूसरे वर्ष इसे 30,363 15 रुपए का लाभ पहुचा.

हमारे देश मे खेतिहर मजदूरो की एक बड़ी संख्या आदिवासियों की है जिसमें स्त्रियों की सख्या दस गुनी है, यह एक-ज्ञात तथ्य है कि अनेक क्षेत्रो मे आदिवासी खेतिहर मजदूरो को न्यूनतम कृषि मजदूरी की अदायगी से अभी भी वंचित रखा जाता है. हाल ही मे इस आशय की रिपोर्ट मिली है कि कुछ राज्यो मे आदिवासी खेतिहर मजदूरों को निर्धारित दरो के अनुरूप मजदूरी नही दी जाती है. आदिवासी क्षेत्रो मे कृषि ऐसी जोतो पर की जाती है, जो आर्थिक रूप से अधिक लाभप्रद नही हैं. ये लोग अपनी आदिवासी-परम्पराओं के अनुसार स्थानीय तथा सादे उपकरणों की सहायता से काश्त करते हैं. आदिवासियों को दखल अधिकारो, भूमि वियोजन आदि मामलों से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है, कुछ आदिवासी क्षेत्रो मे भूमि कम उपजाऊ होती है और वहां की मुख्य फसलें बाजरा और अन्य मोटे अनाज हैं.

कृषि सहायता की व्यवस्था

केन्द्रीय कृषि एव सिचाई मंत्रालय द्वारा गठित भूमि सुधारो के कार्यकारी दल ने भी इस ओर सकेत किया है कि आवटित भूमि को विकसित करने और उसकी उत्पादन क्षमता बनाने के लिए केन्द्रीय योजनाओ के अधीन उपलब्ध पू जी से कही अधिक पू जी निवेश की आवश्यकता है आवटित भूमि का मूल्य 700.00 रुपए प्रति एकड़ से कम नहीं था, जबकि केन्द्रीय योजनाओ के अधीन उपलब्ध सहायता सिर्फ 200 00 रुपए प्रति एकड थी कार्यकारी दल ने सिफारिश की थी कि राज्य सरकारो को केन्द्रीय सहायता के अलावा कम से कम 50 प्रतिशत पूरक सहायता अवश्य देनी चाहिए राज्य सरकारो के लिए यह आवश्यक है कि वे भूमि को वैज्ञानिक आधारो पर विकसित करने और उसे ठीक आकार प्रदान करने का प्रबन्ध करें. कार्यकारी दल ने यह भी पाया कि आवटितियो को ऋण-सुविधाएं प्राप्त करने मे पर्याप्त कठिनाई हुई. बैंको से नगण्य मात्रा में ऋण प्राप्त हो सके और सहकारी

क्षेत्र में भी नाम मात्र की ऋण सुविधाएं जुटाई गई थी इस ओर ध्यान आकर्षित किया गया कि रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ने लघु कृषकों (आदिवासियों) के लिए ऋण सुविधाएं देने से सम्बन्धित दिशा-निर्देश भी जारी किए थे और कार्यकारी दल ने यह सुझाव दिया कि सभी प्राथमिक समितियों द्वारा इन दिशा-निर्देशों का निश्चित रूप से पालन किया जाना चाहिए

राजस्थान सरकार ने एक राजस्व अभियान चलाया था जिसका उद्देश्य राजस्व सम्बन्धी अनिर्णित मामलों को निपटाना था कार्यक्रम के अनुसार उप-मंडल अधिकारियों को तहसीलदारों, सब डिवीजन अधिकारियों तथा सम्बद्ध अन्य अधिकारियों के साथ गावों का दौरा करना था इन अधिकारियों को विभिन्न मामलों को निपटाने के लिए आवश्यक रिकार्डों और रखी हुई फाइलों को अपने साथ गाव में ले जाना था ग्रामवासियों और जनप्रतिनिधियों के इस कार्य को निपटाने के उद्देश्य से, पूर्व निर्धारित स्थल पर इकट्ठा होना होता था राजस्थान सरकार द्वारा शुरू किया गया राजस्व अभियान सही दिशा में उठाया गया एक कदम है और इस अभियान के दौरान कृषि भूमि आदिवासियों में भी बांटी गई अन्य राज्य सरकारों को भी राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित इस आदर्श का अनुकरण करना चाहिए

राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, असम, बिहार केरल, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र उड़ीसा, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों में आदिवासी भूमि की हस्तांतरण-समस्या अधिक पाई गई है देश के सभी आदिवासी क्षेत्र में इस समस्या का वास्तविक आकार अब तक नहीं जाना जा सका है और यह सुझाव दिया गया कि जिन आदिवासी क्षेत्रों में यह समस्या गंभीर रूप में मौजूद हैं, वहां विशेषज्ञ एजेंसियों द्वारा व्यापक सर्वेक्षण करवाया जाना चाहिए

यह उल्लेखनीय है कि कृषि और सिंचाई मंत्रालय द्वारा नियुक्त-भूमि सुधारों से सम्बन्धित कार्यकारी दल ने वर्तमान कानून में कुछ कमियों की ओर संकेत किया था, जिन्हें दूर किया जाना आवश्यक है । कुछ अदालती फैसलों में यह कहा गया कि अनाधिकृत हस्तक्षेप को हस्तांतरण नहीं माना जा सकता अगर कोई गैर-आदिवासी, आदिवासी की भूमि पर अनाधिकृत रूप से हस्तक्षेप करता है और उस पर अपना कब्जा जारी रखता है, तो गैर-आदिवासी द्वारा भूमि के हस्तांतरण को विनियमित करने की व्यवस्थाओं को लागू नहीं किया जा सकता और व्यथित पक्ष को दीवानी अदालत में न्याय मांगने को मजबूर होना पड़ेगा. अनेक आदिवासी इस व्यवस्था का लाभ नहीं उठाते और हालांकि उनकी अनिच्छा से ही सही, लेकिन ऐसा अनाधिकृत हस्तक्षेप कानूनी रूप धारण कर लेता है अगर और आगे देखा जाए, तो मालूम होगा कि अनेक राज्यों के कानूनों में, भारतीय परिसीमन अधिनियम की व्यवस्थाओं में सुधार नहीं किया गया है आदिवासियों में शिक्षा

के निम्न स्तर और उनमे अपने अधिकारो या लाभ प्राप्त करने के प्रयोजनो के अभाव को ध्यान में रखते हुए कार्यकारी दल ने परिसीमन काल 30 वर्ष तक बढाने को वाछनीय माना है इसने यह भी पाया कि कुछ मामलो म कानून द्वारा दिया जा सकने वाला सरक्षण नही दिया जा सका, क्योकि कुछ अदालतो ने अपने निर्णय म यह भी कहा था कि वह पक्ष इस सरक्षण का लाभ नही उठा सकता यह सर्वविदित है कि आदिवासी प्राय सक्षम कानूनी सलाह प्राप्त नही करते कार्यकारी दल ने उचित ही कहा है कि 'कानून का आदिवासियो को कुछ सरक्षण देने का स्पष्ट अभिप्राय है और अगर पूर्व निर्णित व्याख्याओ के कारण उन्ह इन सरक्षणो से वचित रखा जाता है, तो हितकारी कानून अपने उद्देश्य में सफल नहीं होगा।'

इसलिए यह आवश्यक है कि आदिवासियों की जमीन का हस्तातरण विनियमित करने से सम्बन्धित वर्तमान कानूनो की तत्काल समीक्षा की जाए ताकि आदिवासियो की जमीनों को सरक्षण दिया जा सके अनुसूचित जनजाति आयुक्त भूमि सुधारो से सम्बन्धित कार्यकारी दल के सुझावो से पूरी तरह से सहमत है कि राज्य सरकार नागरिक कार्यविधि की आचारसहिता या किसी अन्य कानून मे कोई व्यवस्था रहने के बावजूद अपने कानूनों मे यह स्पष्ट व्यवस्था करें कि आदिवासी के किसी भी एक सदस्य को जोत की बिक्री गैर-कानूनी होगी, अगर उसे आदिवासी जाति का ही अन्य व्यक्ति नहीं खरीदता है कानूनों मे यह स्पष्ट व्यवस्था रहनी चाहिए कि आशय के तर्क को कार्यविधि की किसी भी अवस्था मे स्वीकार किया जा सकता है यह तर्क किसी सफलता या हित-साधना मे स्वीकार किया जा सकता है जिन आदिवासी क्षेत्रो मे बेदखली बहुत अधिक हुई है, उन्हें पहचाना जाना चाहिए और भूमि की वापसी का कार्य अभियान के रूप मे किया जाना चाहिए

भूमि संरक्षण

अनेक आदिवासी क्षेत्रो म भूमि सरक्षण एक गम्भीर समास्या है अभी तक इन क्षेत्रो म भूमि सरक्षण कायक्रमो का पर्याप्त स्तर पर शुरू नही किया गया है, इधर उधर बिखरे क्षेत्रो म ही लघु भूमि सरक्षण कार्यक्रम शुरू किए गए हैं ऐसे कार्यक्रमो मे विभिन्न क्षेत्रो की आवश्यकताओ को ध्यान में नही रखा जाता, जबकि उनम कुछ पर प्राथमिक आधारो पर ध्यान देने की जरूरत रहती है और कुछ के लिए अभी प्रतीक्षा की जा सकती है

मध्य प्रदेश मे भूमि सरक्षण योजनाओ का आदिवासियो पर प्रभाव का अध्ययन किया गया जिसमे यह पाया गया कि आदिवासी कल्याण विभाग ने भूमि सरक्षण कार्यों के लिए सहायता अनुदान नहीं दिया वन विभाग के अधिकारियो का यह विचार था कि झाबुआ जिले म भूमि सरक्षण को रोकने के लिए जगल एकत्र करना एकमात्र हल है और अब तक कृषि विभाग द्वारा किया गया कार्य समुद्र मे

बून्द के समान है ऐसा समझा जाता है कि लगभग 70 प्रतिशत आदिवासियों ने भूमि सरक्षण कार्यक्रम का स्वागत किया आदिवासी-समुदायों मे 'भिलाल' समुदाय के लोगो ने कार्यक्रम के प्रति सबसे अधिक उत्साह व्यक्त किया, फिर भी यह पाया गया कि धनराशि के व्यय के मामले मे कुछ दुरुपयोग होने की शिकायत है और इस मामले मे जाच शुरू की जा चुकी है !

सिंचाई सुविधाओं की कमी

आदिवासी क्षेत्रो मे सिंचाई का स्तर बहुत निम्न है पूरे देश मे 25 प्रतिशत की तुलना मे आदिवासी क्षेत्रो मे यह एक प्रतिशत से भी कम है अधिकतर राज्यों मे, बडी और मध्यम सिंचाई पर लगाई गई कुल पूजी का बडा भाग अविरत योजनाओ पर व्यय होता है ऐसी नीति आदिवासी क्षेत्रो के हितो के विरुद्ध है, क्योंकि अधिकतर अविरत परियोजनाए इन क्षेत्रो के बाहर है अधिकतर आदिवासी क्षेत्र नदियो और नालो की ऊपरी हदो मे हैं पानी की कुल उपलब्धता को ध्यान मे रखते हुए अनेक सिंचाई कार्य नदियो की नीची हदो म किए गए हैं इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक नदी-नाले के कुल पानी का कुछ भाग सिर्फ ऊची हदो के प्रयोग के लिए आरक्षित रखा जाना चाहिए गुजरात और महाराष्ट्र मे यह नीति अपनाई जा चुकी है और वहा इस उद्देश्य के कानूनो को लागू कर दिया गया।

कभी-कभी यह भी देखा गया है कि सिंचाई जैसे कार्यक्रमों को शुरू तो आदिवासी क्षेत्रों में किया गया, लेकिन उसका प्रमुख लाभ गैर-आदिवासियो को मिला है ! पूना के आदिवासी अनुसधान और प्रशिक्षण सस्थान ने थाना जिले मे स्थित सूर्य सिंचाई परियोजना और नासिक जिले मे स्थित वाघेड सिंचाई परियोजना से आदिवासियो को मिल रहे लाभो से सम्बन्धित एक रोचक अध्ययन किया था अध्ययन से मालूम हुआ कि आदिवासी क्षेत्रो को प्रदान की जा रही नई सिंचाई सुविधाओ का बडा भाग गैर आदिवासियो द्वारा हथिया लिया गया

विकास एजेंसियां

देश के ग्रामीण भागो मे रोजगार और अतिरिक्त आय के साधन पैदा करने के लिए, चौथी पचवर्षीय योजना के दौरान छोटे किसान और कृषक मजदूर एजेंसियो की स्कीमें शुरू की गई थी पाचवी पचवर्षीय योजना अवधि मे, ऐसी परियोजनाओ की सख्या 87 से बढाकर 160 कर दी गई थी नवीनतम उपलब्ध सूचना के अनुसार, देश के विभिन्न भागो म इस समय ऐसी 71 परियोजनाए चल रही हैं अनुसूचित जातियो और जनजातियो के आयुक्त के सगठन ने केन्द्रीय कृषि मत्रालय का यह सुनिश्चित करने के लिए ध्यान आकर्षित कराया था कि इन सामान्य स्कीमो से

आदिवासियो को भी लाभ प्राप्त हो और बाद मे मत्रालय ने राज्य सरकारो को निर्देश जारी किए कि वे अपने क्षेत्र की एजेंसियो को सलाह दें कि वे इन स्कीमो से आदिवासियो को लाभ पहुचने के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाए ।

आवास कार्यक्रम

आदिवासी अधिकतर अदरूनी क्षेत्रो मे रहते हैं, गरीबी और निर्माण सामग्री की कमी के कारण इनमे से अधिकाश फूस की झोपडियो म रहते है कुछ मामलो म, वनो के विनाश के कारण स्थानीय निर्माण-सामग्री तक उपलब्ध नहीं है और उनकी आवास परिस्थितिया और खराब हो गई हैं यह महसूस किया जाता है कि जगल लगाने तथा इससे सम्बद्ध कार्यक्रमो म आवास निर्माण सामग्री सहित स्थानीय आवश्यकताओ को ध्यान मे रखा जाना चाहिए

आदिवासियो को अलग-अलग टोलों या प्रमुख बस्ती के बाहरी क्षेत्र मे आवास बनाने के कारण कमजोर और अस्वास्थ्यकारी परिस्थितियों मे रहना पडता है आवास योजनाओ का उद्देश्य आदिवासियो के औसत सदस्य के आवास का स्तर क्षेत्र के औसत ग्रामवासी के स्तर तक पहुचाना होना चाहिए

यद्यपि पाचवी पचवर्षीय योजना क अन्तर्गत भूमिहीन कृषको मे आवासीय भूखण्ड वितरित करना एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम था फिर भी आदिवासियो के मामले म आवासीय भूखण्ड या आवास कार्यक्रम के सम्बन्ध मे कोई विशेष प्रगति नही हुई है अनेक मामलो म, इन समुदायो के सदस्यो म आवासीय भूखण्ड का आवटन नाम मात्र को ही था, क्योकि वे भूखण्ड मकान बनाने के योग्य नही थे यह आवश्यक है कि आदिवासियो के लिए विभिन्न चरणो मे एक आवास कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए, जो स्थानीय डिजाइनो और दक्षता पर आधारित हो आवास निर्माण मे आदिवासियो को उदार ऋणो और समुचित सहायता अनुदान देकर मदद की जानी चाहिए

राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि कुछ सरकारो ने आदिवासियो की आवास स्थिति म सुधार करने के लिए निगमो का गठन किया है आवासीय बोर्डों का गठन करने के अलावा विभिन्न राज्यो ने आदिवासियो को प्लाटो या निर्मित मकानो के आवटन को प्राथमिकता दी है लेकिन विभिन्न राज्य आवास बोर्डों द्वारा चलाई जा रही स्कीमो से आदिवासियो को होने वाले वास्तविक लाभो से सम्बन्धित विवरण उपलब्ध नही है ।

आदिवासी क्षेत्रो के सदर्भ म एक नई बात छोटे कस्बो का उदय होना है और यह वांछनीय है कि आदिवासी अर्थ-व्यवस्था म परिवर्तन करने तथा स्वरोजगार के

अवसर प्रदान करने के लिए निकटवर्ती क्षेत्रों के आदिवासियों को बसाने के प्रयास किए जाने चाहिए

भौगोलिक तथा सामाजिक दृष्टि से आदिवासियों के समाजिक तथा आर्थिक विकास की अवस्थाओं में व्यापक अन्तर है तथा क्षेत्र-क्षेत्र म और उनके अपने समूहों में उनकी समस्याएं भिन्न हुआ करती हैं इसमें कोई संदेह नहीं कि अब तक के प्राय दुर्गम वन्य क्षेत्रों में, जहा आदिवासी सामान्य रूप से निवास करते हैं, का द्वार खोलने में पर्याप्त प्रगति हुई है तथा उनकी दशा सुधारने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे का विस्तार किया गया है

औसत आदिवासी व्यक्ति की आमदनी बढाने के लिए पहला उपाय यह है कि उन्हें उस बहुविधि शोषण प्रक्रियाओं के शिकंजे से बचाना होगा, जो आदिवासी क्षेत्रों में विकास कार्यक्रमों की शुरुआत के साथ और मजबूत होती जाती है यद्यपि पाचवी योजना में शोषण को समाप्त करने को उच्च प्राथमिकता दी गई थी, पर नए विकास कार्यक्रमों के साथ प्रभावी वितरण व्यवस्था के अभाव एव उनमे स्थानीय समुदायों के समावेश होने की सीमित क्षमता की महत्वपूर्ण विसगति देखी गई

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि इस देश में आदिवासियों की समस्याओं का तथा कथित सभ्य और सस्कारित लोगों की शिक्षा तथा दृष्टिकोण से उतना ही सरोकार है, जितना कि आदिवासियों का खुद अपने विकास करने से है इसलिए सस्कारित वर्गों को आदिवासी जीवन पद्धति के गुणों को सिखाया जाना पडेगा और उनकी सम्मान भावना को आदर देना और सस्कृति को पारस्परिक सम्मान भाव से समझना पडेगा, न कि कृपा दृष्टि अथवा पाडित्यपूर्ण भाव से।

विशेष समस्याएं

देश में कई आदिम समुदाय छोटे-छोटे हैं, अलग-विलग पहाडी क्षेत्रों में रहते हैं. इनमें अधिकाश समुदाय पूर्व-कृषि प्रौद्योगिक स्तर पर हैं तथा अपने आवासी जगलों से जीने के साधनों के समाप्त होते जाने की कमी को पूरा करना उन्हे मुश्किल पड रहा है यह भी देखा गया है कि सामान्य क्षेत्र के कार्यक्रम से वे कुल मिलाकर अछूते ही रहे हैं उनके लिए उपलब्ध विस्तृत भूभाग को या तो ज्यादा विकसित समुदायों ने अतिक्रमित कर लिया अथवा उनके आवासीय जगल वन विभाग के नियन्त्रण में आ गए हैं इन समुदायों में से बहुतेरे बीमारियों तथा दूसरी अनुवशिक समस्याओं से ग्रस्त हैं, जिससे उनकी वृद्धि कम होती जाती है और कई बार तेजी से आबादी का क्षय हो जाता है. कई मामलों में तो समूचा समुदाय रोग ग्रस्त हो जाता है और उन पर तत्काल ध्यान देने की जरूरत होती है. यह अवधारणा की

की बात है कि अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, स्वास्थ्य मंत्रालय तथा पांडेचेरी स्थित जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा शिक्षा तथा अनुसंधान संस्थान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपों और तमिलनाडु में सक्रियतापूर्वक सर्वेक्षण कार्य में लगे हैं तथा उपयुक्त चिकित्सा भी कर रहे हैं

वन-सम्पदा

यह सब जानते हैं कि बहुत-से क्षेत्रों में, (खासकर राजस्थान में चित्तौड़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, काठल का सम्पूर्ण आदिवासी क्षेत्र) आदिवासियों की अर्थ-व्यवस्था वनों पर आधारित है बहुत-से आदिवासी खेती, पशुपालन, लकड़ी काटने तथा वन-उत्पादनों का संग्रह करके निकटवर्ती बाजार में बेचने के काम में लगे हैं रेलवे, जहाज निर्माण, कागज तथा अन्य औद्योगिक आवश्यकताओं के कारण वन समाप्त-से हो गए हैं वास्तव में वनों के उत्पादक क्रिया-कलाप लगभग पूर्णतया बड़े पैमाने के उद्योगों की जरूरतों से जुड़े रहे हैं स्थानीय आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक वन्य उत्पाद वृक्षों को लगाने का बहुत कम काम हुआ है इसके साथ ही वनविभागों द्वारा वन-सम्पदा की रक्षा तथा छोटे वनों के उत्पादों के राष्ट्रीयकरण के नाम पर प्रशासनिक अधिकारियों ने आदिवासियों के अधिकारों तथा विशेषाधिकारों पर पर्याप्त प्रतिबन्ध लगा दिए हैं परिणामस्वरूप सारे देश में वन विभागों तथा आदिवासी आबादी के बीच प्रतिरोध की स्थिति है आदिवासियों को या तो वन विभाग के अधीन अथवा ठेकेदारों या वन मजदूर सहकारी समितियों के अधीन काम करना पड़ता है यह देखा गया है कि राज्यों के वन विभागों के लाभार्जन में कई गुना वृद्धि हुई है, लेकिन वनों में रहने वाली आसिवासियों की दशा में सुधार नहीं हुआ है इसलिए वृक्षारोपण के सभी कार्यक्रमों में उन पारम्परिक वृक्षों को शामिल करना महत्वपूर्ण है, जिनसे आदिवासियों को छोटे वन उत्पाद तथा आमदनी के दूसरे साधन मिलते हैं ।

आदिवासियों के छोटे वन-उत्पादों के संग्रह के अधिकार को बिना किसी संकोच के मान्यता दी जानी चाहिए इसके लिए आदिवासियों से कोई रायल्टी नहीं वसूली जानी चाहिए. आदिवासियों द्वारा संग्रहित लघु वन उत्पादों का लाभकर दाम मिले, यह निश्चित किया जाना चाहिए. यह दाम निकटवर्ती बाजार में उपलब्ध वस्तुओं से सम्बद्ध होता है

राज्यों में भी लघु वन-उत्पादों की खरीद सहकारी समितियों द्वारा ही की जानी चाहिए वन सम्बन्धी कार्यों के लिए आदिवासियों से सिर्फ तन-तोड़ मजदूरी ली जाती है, और बिचौलियों के होने से उन्हें पर्याप्त मजदूरी भी नहीं मिलती इसलिए आदिवासियों को सिर्फ 'मजदूर' न माना जाए, वन-कार्यक्रमों का उद्देश्य तो वनों

में रहने वाले आदिवासियों की आर्थिक दशा तथा जीवन में सुधार करना होना चाहिए वन विभाग सेवा में ऐसे व्यक्तियों को ही लिया जाए, जो आदिवासियों के प्रति सच्ची सहानुभूति रखते हो

उद्यान कृषि

विभिन्न आदिवासी विकास कार्यक्रमों पर अमल करने में उद्यान कृषि विकास परि-योजना पर उसके महत्व के अनुसार ध्यान नहीं दिया गया है अधिकांश आदिवासी क्षेत्र कृषि-जलवायु के योग्य हैं, जो उद्योग-कृषि विकास के लिए भी अनुकूल हैं आदिवासी क्षेत्र के लिए वृक्षों पर आधारित अर्थ-व्यवस्था सर्वोत्तम है

उडीसा में जनजातीय उपयोजना के अन्तर्गत उद्योग कृषि को दिए गए नए रूप का विशेष वर्णन आवश्यक है इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 30 एकड से लगाकर 300 एकड तक के सघन क्षेत्र चुने गए हैं नए वृक्षारोपण के लिए पहले स्पष्टत निजी मानी जाने वाली भूमि ली जाती है लाभान्वित व्यक्ति गड्ढा खोदने, पौधा के गिर्द बाड़ लगाने तथा उनकी देख-रेख वगैरह के लिए जिम्मेदार बनाया जाता है, कार्यक्रम में प्रत्येक व्यक्ति के सीधे सहयोग से यह निश्चित होता है कि सिर्फ कार्यक्रम से पूर्णतया सतुष्ट व्यक्ति ही उसमें भाग लेंगे जो कार्यक्रम को गम्भीरता से नही लेते वे या तो उससे अलग हो जाते हैं, या उन्हें परियोजना से सहमत करने के और प्रयास किए जाते हैं वृक्षारोपण के लिए आदिवासी युवक चुने जाते हैं और उन्हे प्रशिक्षण दिया जाता है वे पौधो, उनकी सभावित बीमारियो, कलम लगाने वगैरह की बुनियादी बाते सीखते हैं साथ ही उन्हे वृक्षो की रक्षा की जिम्मेदारी भी सौंपी जाती है इस तरह उनमें वृक्षो की रक्षा तथा विकास के लिए व्यक्तिगत रुचि उत्पन्न हो जाती है इन कार्यों के लिए उन्हे 90 रुपए मासिक का नाम-मात्र का भुगतान किया जाता है और 3 वर्षों तक यह काम करने की अपेक्षा रखी जाती है जब तक कि पौधे पर्याप्त ऊचे न हो जाए

अन्य राज्य सरकारो को भी उडीसा के इस उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए. यदि पहाडी क्षेत्रो में वनरोपण तथा बागवानी की योजना सोच-विचार कर बनाई जाए तो उससे न सिर्फ आदिवासियो को, बल्कि असख्य मनुष्यो की जानलेवा बाढो की रोकथाम से सम्पूर्ण समाज को लाभ पहुचेगा उत्तर भारत में बाढ के प्रकोप का कारण सभाप्त प्राय वन विनष्ट पहाडी ढलान है ।

सरकारी सेवाओं में प्रतिनिधित्व

आदिवासियो को अधिक से अधिक सरकारी सेवाओं मे शामिल करने के लिए राज्य और केन्द्र सरकार का विशेष प्रयत्न रहा है और इसकेलिए आरक्षण की नीति अपनाई गई है

इस तर्क को मानने का कोई कारण नही है कि आदिवासियो मे पर्याप्त मात्रा मे पढे-लिखे अथवा प्रशिक्षित लोगों की कोई कमी है. और उनमे इन सेवाओ की पात्रता नहीं है ऐसा महसूस किया जा रहा है कि विभिन्न सेवाओ मे आदिवासियो के लिए आरक्षित रिक्तियो के उपयोग के लिए ईमानदारी से प्रयत्न किए जाने चाहिए आदिवासी प्रत्याशियो के लिए समुचित प्रशिक्षण सुविधाए उपलब्ध कराना आदेशात्मक होना चाहिए.

अनुसूचित जातियो एव जनजातियो के आयुक्त ने पिछले दस वर्षों के दौरान इस बात पर बल दिया है और सरकार से तत्सम्बन्धी पत्र-व्यवहार भी किया है कि केन्द्रीय सरकार की सेवाओ मे आदिवासियो के प्रतिनिधित्व की कमी को पूरा किया

जा सकता है इसके लिए इन समुदायो का संयुक्त प्रतिशत तब तक 50 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है, जब तक इन समुदायो के प्रतिनिधित्व की कमी काफी मात्रा मे कम नही हो जाती. यहा इस बात का उल्लेख किया जा सकता है कि सार्वजनिक उपक्रम इस कमी को पूरा करने के लिए आदिवासी-प्रत्याशियो को भर्ती कर रहे हैं और विभिन्न वर्गों मे उनके प्रतिनिधित्व की वृद्धि कर रहे हैं. ठीक इसी तरह भारत सरकार भी नए पदो को भरने के लिए आदिवासी-प्रत्याशियो को चुन सकती है।

रेल्वे सेवाएं

रेल्वे सेवाओ मे आदिवासियो का प्रतिनिधित्व सरकार द्वारा निर्धारित प्रतिशत से अभी कम है सभी श्रेणियो मे आदिवासियों का प्रतिनिधित्व अल्प या नाममात्र का है जनजाति आयुक्त को आदिवासी रेल्वे कर्मचारियो से बहुत बडी संख्या मे अभ्यावेदन प्राप्त हुए थे इन सभी अभ्यावेदनों मे शिकायतो को हल करने की प्रार्थना की गई थी, इससे यह संकेत मिलता है कि आदिवासी-कर्मचारियों मे सुरक्षण नीति को अप्रभावकारी ढग से लागू किए जाने के प्रति गहरा असतोष है संगठन ने रेल्वे बोर्ड को ऐसे अनेक मामलो के बारे मे लिखा था, किन्तु उसकी ओर उचित संख्या म जवाब नही मिले इस प्रकार संगठन के प्रयत्न निष्फल रहे तब इस मामले को रेल मन्त्री के सामने रखा गया उन्होने यह विश्वास दिलाया कि तुरन्त कार्यवाही की जाएगी और संगठन के इस सुझाव का भी स्वागत किया कि शीघ्र कार्यवाही के लिए ऐसे अभ्यावेदन सीधे जोनल रेल्वेज के मुख्य कार्मिक अधिकारियों को भेजे जाए आशा की जाती है कि रेल मत्रालय इस बात पर ध्यान रखेगा कि आदिवासी-कर्मचारियों की शिकायतों को दूर करने का काम निपुणता तथा प्रभावशाली ढंग से पूरा होगा, ताकि उन्हें न्याय मिल सके"।

सशस्त्र सेवाएं

सशस्त्र सेनाओ मे आदिवासियो के लिए आरक्षण शुरू नही हुआ है और इनमें आदिवासियो का प्रतिनिधित्व बहुत कम है अनुसूचित जातियों एव अनुसूचित जनजातियो के आयुक्त द्वारा हमेशा इस बात पर बल दिया जाता रहा है कि आदिवासियो को आरक्षण की परिधि से बाहर रखना सविधान के आशय तथा भावना के प्रतिकूल है किन्तु रक्षा मन्त्रालय का विचार है कि रक्षा सेनाओ की विशिष्ट प्रकृति के कारण भर्ती के लिए अपनाई गई प्रणाली कुछ भिन्न प्रकार की थी और वह अनुभव करता है कि इस लक्ष्य को निष्पादक निर्देशों तथा अन्य उपयुक्त उपायो को अपनाने के बाद प्रभावशाली ढग से प्राप्त किया जा सकता है यद्यपि आदिवासी जाति वाले दूर-दराज के क्षेत्रों में भर्ती दलो को भेजकर आदिवासियो की भर्ती के

लिए विशेष प्रयत्न किए जा रहे हैं, तब भी निष्पादक निर्देशों का अपेक्षित प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा जब तक यह बाध्यता नहीं होगी कि किसी विशिष्ट संख्या मे आदिवासियों की भर्ती हो, तब तक निकट भविष्य मे आदिवासियो के प्रतिनिधित्व में सुधार की आशा नहीं की जा सकती। अत आयुक्त ने इस बात की जोरदार सिफारिश की है कि सरकार अपने पहले के निर्णय पर विचार करे और सशस्त्र सेनाओं में कार्मिकों की भर्ती के मामले में आदिवासियों के आरक्षण की नीति को शुरू करे—खासतौर पर सिविलियन राजपत्रित, सिविलीयन अ-राजपत्रित, कैडेट्स, जूनियर अधिकारियों आदि के सवर्गों में

राष्ट्रीयकृत बैंक

आर्थिक मामलों के विभाग के नियन्त्रण में कार्यशील सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं में आदिवासियों के लिए नौकरियों में आरक्षण सम्बन्धी आदेशों के कार्यान्वयन की प्रगति का निरीक्षण करने के लिए उक्त विभाग मे अलग से एक बैंकिंग डिवीजन के गठन की सूचना मिली है सरकार ने सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों को सलाह दी है कि वे समस्त आरक्षित रिक्तियों के जमा काम को शीघ्रता से निपटाए अगर जरूरी हो तो इसके लिए केवल आदिवासी-प्रार्थियों के लिए विशेष परीक्षा का प्रबन्ध करें इस तथ्य के बावजूद कि बैंकों की नौकरियों में आदिवासियों के प्रतिनिधित्व में सुधार करने के लिए प्राधिकारियों ने कुछ प्रयत्न किए हैं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने सूचित किया है कि आरक्षित रिक्तियों का पूरा कोटा नहीं भरा जा सका, क्योंकि आदिवासियों में योग्य अभ्यार्थियों की कमी थी

जहा तक आदिवासियों द्वारा राष्ट्रीयकृत और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों मे पदोन्नति के माध्यम से पदों के भरने की आरक्षण स्कीम शुरू करने का प्रश्न है, आयुक्त की चौबीसवीं रिपोर्ट म सिफारिश की गई थी कि वित्त मन्त्रालय राष्ट्रीयकृत और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के अनुरूप नीति अपनाने के लिए शीघ्र कार्यवाही करे और इसके लिए बैंक भी पदोन्नति मे आरक्षण के सिद्धान्तों को स्वीकृति दें सरकार ने इस नीति के लिए अपनी स्वीकृति दे दी है और सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों को सलाह दी है कि वर्तमान आरक्षण स्कीम म आवश्यक संशोधन कर पदोन्नति मे भी आरक्षण के सरकारी आदेश का पालन करें

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की पदोन्नति स्कीम की छानबीन करने स पता चलता है कि आदिवासीयों के आरक्षण की व्यवस्था केवल उस अवस्था मे है, जबकि सीधी भर्ती 50 प्रतिशत स अधिक नहीं होती. प्रतियोगिता परीक्षाओं के आधार पर प्रवरण पदों को अधिकारी ग्रेड क प्रत्याशियों को पदोन्नति देकर भरे जाने मे आदिवासियों के प्रत्याशी ऐसी परीक्षाओं म कितनी संख्या में बैठ सकते हैं, इसका

हिसाब ऐसे प्रत्याशियो के लिए निर्धारित आरक्षण के आधार पर लगाया जाता है परीक्षाओ म आदिवासियो के अपेक्षित सख्या मे प्रत्याशियो के न होने की अवस्था मे अथवा स्कीम के अनुसार आदिवासी-प्रत्याशियो के परीक्षाओ मे उत्तीर्ण होने की अवस्था मे आरक्षित पद स्वत अनारक्षित मान लिये जाएगे इस स्कीम म योग्यता को ध्यान मे रखते हुए वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नति द्वारा पदो के भरे जाने के मामले मे अपेक्षित रिक्तियो से दुगनी सख्या मे रिक्तियों के आकलन जोन (जोन ऑफ कन्सीडरेशन) की व्यवस्था है वरिष्ठता के आधार पर आदिवासी-उम्मीदवारो के न मिलने की स्थिति मे सूची म सबसे नीचे के स्थान के आदिवासी-उम्मीदवारो को प्रवरण सूची मे शामिल करने पर विचार किया जा सकता है, अगर ऐसे उम्मीदवार पुष्टि पद के साथ आकलन जोन के अन्तर्गत स्थायी हो।

इस सदर्भ मे यह उल्लेख किया जा सकता है कि जोनिंग स्कीम आमतौर पर पदोन्नति देकर भरे जाने वाले पदो के लिए लागू नही होती, हालांकि वरिष्ठता का आधार योग्यता होती है विशिष्ट सेवा अवधि को पात्रता की शर्त बनाने मे कोई एतराज नहीं हो सकता अत आयुक्त द्वारा यह सिफारिश की गई है कि रिजर्व बैक ऑफ इडिया और अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको द्वारा अपनाई गई पदोन्नति आरक्षण स्कीम म आवश्यक सशोधन किए जाए, ताकि सभी आदिवासियो क योग्य अभ्यार्थी वरिष्ठता के आधार पर, पदोन्नति पा सकें[1] इस तात्पर्य का एक सरकारी निर्देश सभी बैंको के लिए उन्ही लाइनो पर जारी किया जाना चाहिए, जैसा कि सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमो ने पहले ही भारत सरकार के निर्देशो का पालन स्वीकार किया है अत आवश्यक है कि आदिवासियो के सवैधानिक सुरक्षणा को कार्यान्वित करने के लिए प्रबन्धको तथा कर्मचारी यूनियनो के बीच हुए अनुबधो की वैधता को रद्द किया जाए इस मामले को लेकर उठने वाल चिरकालिक सदेहों का भी स्पष्ट करना होगा

विश्वविद्यालय सेवाएं

यह दुर्भाग्य की बात है कि आदिवासियो के समुचित अर्हता प्राप्त लोग शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रो मे मिल जाते हैं और इनम से अनेक विशेष प्रशिक्षण प्राप्त भी होते हैं तब भी विश्वविद्यालय सेवाओ मे आरक्षण का काम शुरू कर पाना सभव नही हो रहा है आयुक्त की पिछले 10 वर्षों की वार्षिक रिपोर्ट म विश्वविद्यालय के लिपिक वर्गीय तथा शैक्षिक स्टाफ म आरक्षण के शुरू करने के अमल पर बल दिया जाता रहा है भारत सरकार द्वारा आरक्षण, छूटो इत्यादि के बारे म जारी अनेक अनुदेश शिक्षा मत्रालय के जरिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को अग्रेषित किए जाते रहे हैं और आयोग उन्हे सभी विश्वविद्यालयो को भेजते रहे हैं शिक्षा मत्रालय ने सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयो को सलाह दी है कि वे गैर-शैक्षिक पदो के

लिए आदिवासी-प्रत्याशियो के लिए आरक्षण लागू करें, लेकिन इस दिशा मे कोई ठोस कदम नही उठाए गए हैं

अनुसूचित जातियो और अनुसूचित जनजातियो के आयुक्त ने उच्चाधिकार प्राप्त समिति मे भी चर्चा के लिए यह विषय उठाया था अतत यह निर्णय किया गया कि यदि सम्बन्धित विश्वविद्यालयो मे स्टाफ की भर्ती से सम्बन्धित प्रासगिक कानूनो अथवा सस्था के परिनियमो मे समुचित सशोधन कर दिया जाए तो आदिवासियो के प्रत्याशियो के लिए आरक्षण लागू करने मे कोई समस्या नही उठेगी आयुक्त ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को सुझाव दिया है कि वह विभिन्न विश्वविद्यालयो को आरक्षण आदेशो तथा अन्य उपबन्धो के बारे की सक्षिप्त रूपरेखा देते हुए लिखें और आदिवासियों के प्रत्याशियो की भर्ती के नियमो में आरक्षण उपबधो की व्यवस्था करने के बारे म अनुदेश जारी करें

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को यह सुझाव भी दिया गया कि यदि कोई विश्वविद्यालय आयोग द्वारा जारी दिशानिर्देशो के पालन मे चूक करता है, तो उसे गभीर चूक माना जाए और यदि आवश्यक हो तो उसकी अनुदान-राशि भी रोक ली जाए

प्रशिक्षण और रोजगार

देश के विभिन्न भागो मे स्थित अनेक सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानो मे आयुक्त के सगठन के अनुसधान-दलो ने अपने अध्ययनो के दौरान पाया कि भर्ती प्राधिकारियो ने अपने यहा के विविध तकनीकी पदो पर प्रशिक्षित आदिवासी उम्मीदवारो को नियुक्त करने के लिए अनेक तरह के उपाय किए हैं

अतीत मे सरकार द्वारा प्रयास किए गए थे और अभी भी ये विभिन्न चरणो मे जारी है कि आदिवासियो को पर्याप्त सख्या म अनेक तकनीकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रमो, स्कीमो मे प्रवेश दिया जाए, ताकि उन्ह आरक्षित रिक्तियो मे नियुक्त होने के लिए सक्षम बनाया जा सके इसके बावजूद यह देखा गया है कि आदिवासियो के प्रशिक्षित उम्मीदवार उपलब्ध न होने के कारण ऐसे पद सामान्य वर्ग के उम्मीदवारो द्वारा भरे जा रहे थ और पर्याप्त सख्या मे प्रशिक्षित कार्मिको के लिए, भर्ती प्राधिकारियो को कुछ वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड सकती है

अत समय-अन्तराल को भरने के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि आदिवासियो के प्रशिक्षित उम्मीदवारो के उपलब्ध न होने की व्यवस्था मे जो आरक्षित रिक्तियो इन समुदायो द्वारा भरी जानी थी, तब ऐसे उम्मीदवारो की भर्ती छोटे पदो पर की जा सकती है, जिसके वे पात्र हैं समय बीतने पर आवश्यक व्यावसायिक

योग्यता प्राप्त कर लेने के बाद तब इनकी ऐसे पदो के लिए पदोन्नति की जा सकती है।

परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केंद्र

हमारे देश मे छह परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केंद्र इलाहाबाद, दिल्ली, जयपुर, मद्रास, पटियाला और शिलांग म अब भी कार्यशील हैं यहा अखिल भारतीय सेवाओ और एलाइड सेवाओ की परीक्षाओ मे बैठने के इच्छुक आदिवासी उम्मीदवारो को परीक्षा पूर्व व्यापक प्रशिक्षण दिया जाता है सन 1977 की परीक्षाओ मे 71 आदिवासी जाति के उम्मीदवार बैठे थे

राज्य सिविल सेवाओं और राज्य स्तर की अन्य सेवाओ के लिए आदिवासी उम्मीदवारो को परीक्षा पूर्व कोचिंग देने के लिए 16 परीक्षा-पूर्व प्रशिक्षण केंद्र समीक्ष्य अवधि के दौरान भी कार्यरत थे ऐसे केंद्र हर निम्न राज्य और सघशासित क्षेत्र मे एक एक हैं—राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मेघालय, उडीसा, पजाब तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बगाल और दिल्ली कुछ राज्य-स्तर के केंद्र ऐसे भी हैं, जहा आदिवासियो के लिए परीक्षा-पूर्व कोचिंग की व्यवस्था है और इन केंद्रो में सघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित असिस्टेंट ग्रेड परीक्षा, कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित क्लर्कस ग्रेड परीक्षा और राष्ट्रीयकृत तथा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के अधीन बैंकिंग सेवाओ की परीक्षाओ की तैयारी करवाई जाती है

सन् 1977 में स्टेनोग्राफर्स (सामान्य ग्रेड) परीक्षा आयोजित की गई थी इसका परिणाम बडा निराशाजनक था कुल 22 आदिवासियों ने आवेदन किया था इनमें से 14 परीक्षा में बैठे और केवल 2 उम्मीदवार ही लिखित परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सके इन दो उम्मीदवारो मे से भी केवल एक ने शार्टहैंड टेस्ट दिया, लेकिन उत्तीर्ण नही हुआ अन्य अनेक परीक्षाओ मे भी स्थिति अधिक सतोषजनक न थी इससे यह सकेत मिलता है कि आदिवासी-उम्मीदवार अपेक्षित सख्या मे उपलब्ध नही थे ताकि उनके लिए आरक्षित सभी रिक्तियों को भरा जा सके यहा इस बात का उल्लेख करना अनावश्यक है कि जब तक आदिवासी-उम्मीदवारों को समुचित विधि से प्रशिक्षित तथा तैयार नहीं किया जाता, तब तक वे मुक्त परीक्षा में प्रभावी ढग से मुकाबला नहीं कर सकते अत विभिन्न राज्य सरकारों, सघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों द्वारा कार्यान्वित परीक्षा-पूर्व स्कीम का कार्यक्षेत्र बढ़ाकर कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित सभी परीक्षाओ के लिए प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध कराना भी होना चाहिए ताकि आदिवासी-उम्मीदवारों को अधिक अवसर मिल सके

रोजगार कार्यालय

विभिन्न प्रातो के रोजगार अधिकारी आदिवासी-बाहुल्य क्षेत्रो का दौरा करते हैं उनका उद्देश्य यह होता है कि नौकरी के इच्छुक आदिवासियो के नाम रजिस्टर किए जाए और उनके लिए उपलब्ध खाली स्थानो के लिए रोजगार दिलवाने मे मदद कर सकें इन दौरो के दौरान वे आदिवासी-उम्मीदवारो को व्यावसायिक मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं इससे रोजगार-रजिस्ट्रेशन की सख्या मे वृद्धि हुई है.

दूर-दराज के इलाको मे रहने वाले आदिवासियो के रोजगार पाने के इच्छुक व्यक्तियो के लिए यह योजना उपयोगी सिद्ध हुई है इसलिए आदिवासी उम्मीदवारो को मार्गदर्शन देने के लिए जब रोजगार अधिकारी दौरे करते है, तो कैम्पो की व्यवस्था करके इसका कार्य क्षेत्र बढाना चाहिए और इसका आधार प्रशिक्षण एव मार्गदर्शन केंद्रो की कार्य पद्धति होना चाहिए दौरो से पहले स्थानीय प्रशासन तथा अन्य सस्थानो, जैसे कि स्कूल, आदिवासी कल्याण सघो इत्यादि के माध्यम से पर्याप्त प्रचार किया जाना चाहिए ताकि आदिवासी ऐसी योजनाओ का अधिकतम लाभ उठा सकें.

रोस्टर पद्धति

भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारो ने आदिवासी-जातियो के लिए उनकी जनसख्या के अनुसार आरक्षण किया लेकिन अनुभव यह दर्शाता है कि मात्र यह कह देने से कि जनजातियो के लिए पदो म कुछ प्रतिशत तक आरक्षण रहेगा या सब कुछ समान होने के बावजूद आदिवासियो से सम्बन्धित प्रार्थियो को प्राथमिकता दी जाएगी, इन आरक्षणो को प्रभावी रूप स कार्यान्वयन करना सभव नही ! समय समय पर यह सुनिश्चित करने के लिए कि आरक्षणो की निर्धारित प्रतिशतता के अनुरूप आदिवासियो के हिस्से मे वास्तव म कितनी रिक्तिया आनी चाहिए, केंद्रीय सरकार ने रोस्टर रखने की एक पद्धति निकाली है अखिल भारतीय आधार पर भरती करने के लिए 40 पाइट के दो तरह के रोस्टर निर्धारित किए गए—(1) खुली प्रतियोगिता पर आधारित और (2) खुली प्रतियोगिता के अलावा दूसरी तरह से आदिवासियो के लिए कुछ पाइट अलग से रखे हैं देश भर मे फैले केंद्रीय सरकार के कार्यालयो की एक बडी सख्या मे वर्ग III और वर्ग IV के पदो की भर्ती के लिए प्रार्थी उन्ही क्षेत्रो-प्रदेशो से लिए जाते है, जहा यह कार्यालय स्थित हैं. ऐसे कार्यालयो के लिए केंद्रीय सरकार ने प्रत्येक राज्य, सघ शासित प्रदेशो के वास्ते 100 पाइट का रोस्टर निर्धारित किया है लगभग सभी राज्य सरकारो ने रोस्टरो के रखने की अपनी पद्धति का ही अपनाया है

पृथक साक्षात्कार

आदिवासी-उम्मीदवारो का चयन न होने, आरक्षित रिक्तियो के स्थान पर भी चयन न होने का एक बहुत आम कारण बताया जाता था कि वे पदो के योग्य नही पाए गए इस निर्णय के लिए जाने के पीछे जिम्मेदार कारण यह था कि आदिवासी उम्मीदवारो की योग्यता की तुलना अन्य जातियो से सम्बन्धित उन उम्मीदवारो से की जाती थी, जिन्हे बेहतर शिक्षा मिली होती थी और जिनका बेहतर लालन-पोषण हुआ था. स्पष्ट था कि आदिवासी-उम्मीदवार साक्षात्कार मे उनके मुकाबले म टिक नही पाते थे और साक्षात्कार मडल का इन समुदायो के प्रार्थियो के बारे मे यह राय बनती थी कि ये प्रार्थी इन पदो के योग्य नही है इस कठिनाई का आसान करने के लिए केंद्रीय सरकार ने आदेश जारी किए कि आरक्षित रिक्तियो के लिए आदिवासी-प्रार्थियो का साक्षात्कार एक ही दिन या चयन समिति की एक ही बैठक मे होना चाहिए और यह दिन सामान्य उम्मीदवारो के साक्षात्कार से अलग होना चाहिए, ताकि आदिवासी-उम्मीदवार को सामान्य उम्मीदवारो की तुलना मे न आका जाए साथ ही साक्षात्कार मे भाग लेने वाले प्राधिकारियो को इस आवश्यकता से सजग कराना बहुत जरूरी है कि वे आदिवासी-प्रार्थियो के बारे मे निर्णय लेते समय उनके स्तर म ढील दें

शुल्क में छूट

आदिवासियो की कमजोर आर्थिक स्थिति को ध्यान मे रखते हुए, भारत सरकार ने इन्हें सेवाओ मे चयन के लिए या परीक्षा मे प्रवेश के लिए निर्धारित शुल्क के मामले मे कुछ छूट दी हैं इन्हे निर्धारित शुल्क का एक चौथाई भाग अदा करना पड़ता है इस सम्बन्ध मे कुछ राज्य सरकारो ने और भी बेहतर व्यवस्थाए की हुई हैं आध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और तमिलनाडु की सरकारों ने पूरा शुल्क माफ किया हुआ है बिहार, राजस्थान, गुजरात, केरल, कर्नाटक, मणिपुर, उडीसा, पजाब, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बगाल राज्यो ने निर्धारित शुल्क की एक चौथाई सीमा तक छूट दी है यह महसूस किया जाता है कि अगर इस मामले मे आदिवासी-प्रार्थियों को शुल्क मे पूरी छूट दी जाए तो इससे आदिवासियों के अधिकाधिक प्रार्थियों को आरक्षित पदों मे लाने में सहायता मिल सकेगी इस आशय की व्यवस्था सभी राज्य सरकारों तथा केंद्रीय सरकार को भी करनी चाहिए

यात्रा-भत्ता प्रदान करना

भारत सरकार ने व्यवस्था की है कि आदिवासी प्रार्थियो को सघ लोक सेवा आयोग या अन्य किसी नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है, तो

बाप्पा को अपने प्रान्त मे बुलाया, अपने अपने प्रान्तो के आदिवासी, हरिजन और अन्य पिछडी जातियो की खोजबीन करने की, उनके सुधार के लिए उपाय बतलाने की प्रार्थना की, बाप्पा ने यह कार्य लगन के साथ किया

कुछ वर्षों बाद जब स्वतत्र भारत का सविधान बनाने का अवसर आया, तब बाप्पा को आदिवासियो के लिए बनाई गई समिति का सभापति चुना गया फिर एक बार बाप्पा ने देशभर का दौरा किया आदिवासियो के प्रत्येक भाग मे वे गए और उन्होने अपनी रिपोर्ट सरकार को दी इसी रिपोर्ट के आधार पर आदिवासियो की सुरक्षा की और उनके कल्याण की बाकायदा व्यवस्था की गई 'भारतीय आदिम जाति सेवक सघ' की स्थापना हुई और राष्ट्रपति डा राजेन्द्र प्रसाद ने इसका सभापति होना स्वीकार किया इस तरह आदिवासियो की भलाई का कार्य अखिल भारतीय स्तर पर किया जाने लगा इसका सारा श्रेय बाप्पा को है भील सेवा मडल का बीज उन्होने सन 1922 म अपने हाथो बोया था, वही बीज एक लहलहाता हुआ बाग बन गया—आदिवासियो के सेवा-कार्य का बाग !

बाप्पा की देश-सेवा के बारे मे जितना भी कहा जाए, थोडा ही होगा पडित जवाहरलाल नेहरू ने बाप्पा के लिए कहा था—'अपने देश के आदिवासियो और पिछडी हुई जातियो की सेवा की बहुत आवश्यकता है ठक्कर बाप्पा ने सालो इनकी सेवा की है सेवा से वे स्वय एक सस्था बन चुके हैं।' सचमुच बाप्पा ने आदिवासियो के लिए जो काम किया, वह पहले कभी किसी ने नही किया था

० ०

एक नाम है—हरिवल्लभ परीख जो आदिवासियो के हृदय सम्राट है आदिवासियो के अपने भाई है हरिवल्लभ का जन्म 15 सितबर 1925 को सौराष्ट्र (गुजरात) के सुरेंद्र नगर जिले के ध्रागध्रा नामक गाव मे हुआ पाच भाइयो और तीन बहनो मे हरिवल्लभ सबसे छोटे है उनके दादा मनोर भाई महादेव भाई परीख ध्रागध्रा राज्य के दीवान थे राज्य की तरफ से ही उनके पिता दामोदर भाई मनोर भाई परीख को प्रतापगढ (राजस्थान) के राजा का सक्रेटरी बनाकर भेजा गया

हरिवल्लभ की प्रारम्भिक शिक्षा अपने माता-पिता के सरक्षण म प्रतापगढ म ही हुई बाद मे अग्रेजी की पढाई के लिए वह राजकोट म अपने मामा के यहा आ गए और यहा एलफ्रेड हाईस्कूल मे दसवी पास की इसके बाद गुजरात विद्यापीठ म ऊची शिक्षा के लिए आ गए इस शिक्षा सस्थान की स्थापना महात्मा गाधी न की थी कुछ माह बाद ही 'भारत छोडो आदोलन' (1 42) छिड गया पुलिस ने विद्यापीठ पर कब्जा कर लिया और हरिवल्लभ को गिरफ्तार करके छ माह के लिए जेल के सिखचो म कैद कर लिया इस घटना ने हरिवल्लभ के जीवन की

दिशा ही बदल दी और वे राष्ट्रीय भावनाओ से प्रेरित होकर देश और समाज के लिए कुछ करने के लिए लालयित हो उठे वह सेवाग्राम पहु चे और वहा समग्र ग्राम सेवा विद्यालय म खादी एव रचनात्मक कार्यों का पर्याप्त प्रशिक्षण लिया वही गाँधीजी के साथ रहने का सुग्रवसर उन्ह मिला और ग्राम सेवा की धुन उनम सवार हो गई

ग्राम सेवा क लिए उन्होने कई सस्थाओ म काम किया लेकिन उनके मन को सतोष नही हुआ गुजरात के आदिवासिया की दयनीय स्थिति उनके सामन आई, तो वह बडौदा जिले क आदिवासी क्षेत्र म पहुच वन विभाग के कर्मचारियो, बनिए-महाजनो और व्यापारी वर्गों द्वारा गरीब आदिवासियो पर किए जाने वाले शोषण और अत्याचारो ने उनके दिल को हिला दिया उन्होने महसूस किया कि यहा आदिवासी गुलामो स भी बदतर हालत म जी रह हैं भाई न देखा कि महाजनो की सूदखोरी म आदिवासी इस कदर उलझ जाता है कि जिंदगी भर नही निकल सकता है इसलिए आदिवासियो को यदि आगे बढाना है तो सबस पहल उन्ह सूदखोरो के चगुल से मुक्त कराना चाहिए और भाई न ऐसा ही किया महाजनो को समझाया और उनके मन म मानवता को जन्म दिया साथ ही आदिवासियो का शिक्षा और श्रम के लिए प्रेरित किया उनके आपसी झगडे हल किए समस्याओ का समाधान किया और फिर तो उन्होंने वही अपनी कुटिया बना ली जिस नाम दिया—'आनन्द निकेतन

आज हरीवल्लभ का आनन्द निकेतन आदिवासियो के प्रति होने वाले अन्याय और अत्याचार के खिलाफ सघर्ष का प्रतीक बन गया है देश विदेश से सैकडो लोग यहा पहु चते हैं और आनन्द निकेतन की सेवाओ को देखकर दग रह जाते हैं सरकार को चाहिए कि आनन्द निकेतन' जैसी नि स्वार्थ भाव से सेवा करने वाली सस्थाओ को सपूर्ण सहयोग प्रदान करे ।



संदर्भ–ग्रंथ

1. मीणा इतिहास— रावत सारस्वत
2 महाकाल के अन्तराल मे—परदेशी
3 वनवासी भील और उनकी संस्कृति—श्रीचंद जैन
4 राजस्थानी भील-गीत—गिरधारी लाल शर्मा
5. भीलों के लोक-गीत—फूलजी भाई भील
6 कोटा राज्य का इतिहास—मथुरालाल शर्मा
7 गरीब आदिवासी लडकियो की तस्करी—हिंदी ब्लिट्ज, 12 जुलाई 80
8 अनुसूचित जातियों तथा जनजातियो के आयुक्त की रिपोर्ट
9. नवभारत टाइम्स 8 फरवरी, 1981 अंक मे प्रकाशित दीनानाथ दुबे का एक लेख

●